वृद्धिरादैच् ॥ १,१.१ ॥
अदेङ्गुणः ॥ १,१.२ ॥
इको गुणवृद्धी ॥ १,१.३ ॥
न धातुलोप आर्धधातुके ॥ १,१.४ ॥
क्ङिति च ॥ १,१.५ ॥
दीधीवेवीटाम् ॥ १,१.६ ॥
हलोऽनन्तराः संयोगः ॥ १,१.७ ॥
मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः ॥ १,१.८ ॥
तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् ॥ १,१.९ ॥
नाज्झलौ ॥ १,१.१० ॥
ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् ॥ १,१.११ ॥
अदसो मात् ॥ १,१.१२ ॥
शे ॥ १,१.१३ ॥
निपात एकाजनाङ् ॥ १,१.१४ ॥
ओत् ॥ १,१.१५ ॥
सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे ॥ १,१.१६ ॥
उञः ॥ १,१.१७ ॥
ऊँ ॥ १,१.१८ ॥
ईदूतौ च सप्तम्यर्थे ॥ १,१.१९ ॥
दाधा घ्वदाप् ॥ १,१.२० ॥
आद्यन्तवदेकस्मिन् ॥ १,१.२१ ॥
तरप्तमपौ घः ॥ १,१.२२ ॥
बहुगणवतुडति सङ्ख्या ॥ १,१.२३ ॥
ष्णान्ता षट् ॥ १,१.२४ ॥
डति च ॥ १,१.२५ ॥
क्तक्तवतू निष्ठा ॥ १,१.२६ ॥
सर्वादीनि सर्वनामानि ॥ १,१.२७ ॥
विभाषा दिक्समासे बहुव्रीहौ ॥ १,१.२८ ॥
न बहुव्रीहौ ॥ १,१.२९ ॥
तृतीयासमासे ॥ १,१.३० ॥
द्वन्द्वे च ॥ १,१.३१ ॥
विभाषा जसि ॥ १,१.३२ ॥
प्रथमचरमतयाल्पार्धकतिपयनेमाश्च ॥ १,१.३३ ॥
पूर्वपरावरदक्षिणोत्तरापराधराणि व्यवस्थायामसञ्ज्ञायाम् ॥ १,१.३४ ॥
स्वमज्ञातिधनाख्यायाम् ॥ १,१.३५ ॥
अन्तरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः ॥ १,१.३६ ॥
स्वरादिनिपातमव्ययम् ॥ १,१.३७ ॥
तद्धितश्चासर्वविभक्तिः ॥ १,१.३८ ॥
कृन्मेजन्तः ॥ १,१.३९ ॥
क्त्वातोसुन्कसुनः ॥ १,१.४० ॥
अव्ययीभावश्च ॥ १,१.४१ ॥
शि सर्वनामस्थानम् ॥ १,१.४२ ॥
सुडनपुंसकस्य ॥ १,१.४३ ॥
न वेति विभाषा ॥ १,१.४४ ॥

इग्यणः सम्प्रसारणम् ॥ १,१.४५ ॥

गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित् ॥ १,२.१ ॥
विज इट् ॥ १,२.२ ॥
विभाषोर्णोः ॥ १,२.३ ॥
सार्वधातुकमपित् ॥ १,२.४ ॥
असंयोगाल्लिट्कित् ॥ १,२.५ ॥
इन्धिभवतिभ्यां च ॥ १,२.६ ॥
मृडमृदगुधकुषक्लिशवदवसः क्त्वा ॥ १,२.७ ॥
रुदविदमुषग्रहिस्वपिप्रच्छः संश्च ॥ १,२.८ ॥
इको झल् ॥ १,२.९ ॥
हलन्ताच्च ॥ १,२.१० ॥
लिङ्सिचौ आत्मनेपदेषु ॥ १,२.११ ॥
उश्च ॥ १,२.१२ ॥
वा गमः ॥ १,२.१३ ॥
हनः सिच् ॥ १,२.१४ ॥
यमो गन्धने ॥ १,२.१५ ॥
विभाषोपयमने ॥ १,२.१६ ॥
स्थाघ्वोरिच्च ॥ १,२.१७ ॥
न क्त्वा सेट् ॥ १,२.१८ ॥
निष्ठा शीङ्स्विदिमिदिक्ष्विदिधृषः ॥ १,२.१९ ॥
मृषस्तितिक्षायाम् ॥ १,२.२० ॥
उदुपधाद्भावादिकर्मणोरन्यतरस्याम् ॥ १,२.२१ ॥
पूङः क्त्वा च ॥ १,२.२२ ॥
नोपधात्थफान्ताद्वा ॥ १,२.२३ ॥
वञ्चिलुञ्च्यृतश्च ॥ १,२.२४ ॥
तृषिमृषिकृशेः काश्यपस्य ॥ १,२.२५ ॥
रलो व्युपधाद्धलादेः संश्च ॥ १,२.२६ ॥
ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः ॥ १,२.२७ ॥
अचश्च ॥ १,२.२८ ॥
उच्चैरुदात्तः ॥ १,२.२९ ॥
नीचैरनुदात्तः ॥ १,२.३० ॥
समाहारः स्वरितः ॥ १,२.३१ ॥
तस्यादित उदात्तमर्धह्रस्वम् ॥ १,२.३२ ॥
एकश्रुति दूरात्सम्बुद्धौ ॥ १,२.३३ ॥
यज्ञकर्मण्यजपन्यूङ्खसामसु ॥ १,२.३४ ॥
उच्चैस्तरां वा वषट्कारः ॥ १,२.३५ ॥
विभाषा छन्दसि ॥ १,२.३६ ॥
न सुब्रह्मण्यायां स्वरितस्य तु उदात्तः ॥ १,२.३७ ॥
देवब्रह्मणोरनुदात्तः ॥ १,२.३८ ॥
स्वरितात्संहितायामनुदात्तानाम् ॥ १,२.३९ ॥
उदात्तस्वरितपरस्य सन्नतरः ॥ १,२.४० ॥
अपृक्त एकाल्प्रत्ययः ॥ १,२.४१ ॥
तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः ॥ १,२.४२ ॥
प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् ॥ १,२.४३ ॥
एकविभाक्ति चापूर्वनिपाते ॥ १,२.४४ ॥
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् ॥ १,२.४५ ॥

कृत्तद्धितसमासाश्च ॥ १,२.४६ ॥
ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य ॥ १,२.४७ ॥
गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य ॥ १,२.४८ ॥
लुक्तद्धितलुकि ॥ १,२.४९ ॥
इद्गोण्याः ॥ १,२.५० ॥
लुपि युक्तवद्व्यक्तिवचने ॥ १,२.५१ ॥
विशेषणानां चाजातेः ॥ १,२.५२ ॥
तदशिष्यं सञ्ज्ञाप्रमाणत्वात् ॥ १,२.५३ ॥
लुब्योगाप्रख्यानात् ॥ १,२.५४ ॥
योगप्रमाणे च तदभावेऽदर्शनं स्यात् ॥ १,२.५५ ॥
प्रधानप्रत्ययार्थवचनमर्थस्यान्यप्रमाणात्वात् ॥ १,२.५६ ॥
कालोपसर्जने च तुल्यम् ॥ १,२.५७ ॥
जात्याख्यायमेकस्मिन् बहुवचनमन्यतरस्याम् ॥ १,२.५८ ॥
अस्मदो द्वयोश्च ॥ १,२.५९ ॥
फल्गुनीप्रोष्ठपदानां च नक्षत्रे ॥ १,२.६० ॥
छन्दसि पुनर्वस्वोरेकवचनम् ॥ १,२.६१ ॥
विशाखयोश्च ॥ १,२.६२ ॥
तिष्यपुनर्वस्वोर्नक्षत्रद्वन्द्वे बहुवचनस्य द्विवचनं नित्यम् ॥ १,२.६३ ॥
सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ ॥ १,२.६४ ॥
वृद्धो यूना तल्लक्षणश्चेदेव विशेषः ॥ १,२.६५ ॥
स्त्री पुंवच्च ॥ १,२.६६ ॥
पुमान् स्त्रिया ॥ १,२.६७ ॥
भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्याम् ॥ १,२.६८ ॥
नपुंसकमनपुंसकेनैकवच्चास्यान्यतरस्याम् ॥ १,२.६९ ॥
पिता मात्रा ॥ १,२.७० ॥
श्वशुरः श्वश्र्वा ॥ १,२.७१ ॥
त्यदादीनि सर्वैर्नित्यम् ॥ १,२.७२ ॥
ग्राम्यपशुसङ्घेष्वतरुणेशु स्त्री ॥ १,२.७३ ॥

भूवादयो धातवः ॥ १,३.१ ॥
उपदेशेऽजनुनासिक इत् ॥ १,३.२ ॥
हलन्त्यम् ॥ १,३.३ ॥
न विभक्तौ तुस्माः ॥ १,३.४ ॥
आदिर्ञिटुडवः ॥ १,३.५ ॥
षः प्रत्ययसय ॥ १,३.६ ॥
चुटू ॥ १,३.७ ॥
लशक्वतद्धिते ॥ १,३.८ ॥
तस्य लोपः ॥ १,३.९ ॥
यथासङ्ख्यमनुदेशः समानाम् ॥ १,३.१० ॥
स्वरितेनाधिकारः ॥ १,३.११ ॥
अनुदात्तङित आत्मनेपदम् ॥ १,३.१२ ॥
भावकर्मणोः ॥ १,३.१३ ॥
कर्तरि कर्मव्यतिहारे ॥ १,३.१४ ॥
न गतिहिंसार्थेभ्यः ॥ १,३.१५ ॥
इतरेतरान्योन्योपपदाच्च ॥ १,३.१६ ॥
नेर्विशः ॥ १,३.१७ ॥
परिव्यवेभ्यः क्रियः ॥ १,३.१८ ॥

विपराभ्यां जेः ॥ १,३.१९ ॥
अङो दोऽनास्यविहरणे ॥ १,३.२० ॥
क्रीडोऽनुसंपरिभ्यश्च ॥ १,३.२१ ॥
समवप्रविभ्यः स्थः ॥ १,३.२२ ॥
प्रकाशनस्थेयाख्ययोश्च ॥ १,३.२३ ॥
उदोऽनूर्ध्वकर्मणि ॥ १,३.२४ ॥
उपान्मन्त्रकरणे ॥ १,३.२५ ॥
अकर्मकाच्च ॥ १,३.२६ ॥
उद्विभ्यां तपः ॥ १,३.२७ ॥
आङो यमहनः ॥ १,३.२८ ॥
समो गम्यृच्छिप्रच्छिस्वरत्यर्तिश्रुविदिभ्यः ॥ १,३.२९ ॥
निसमुपविभ्यो ह्वः ॥ १,३.३० ॥
स्पर्धायामाङः ॥ १,३.३१ ॥
गन्धनावक्षेपणसेवनसाहसिक्यप्रतियत्नप्रकथनोपयोगेषु कृञः ॥ १,३.३२ ॥
अधेः प्रसहने ॥ १,३.३३ ॥
वेः शब्दकर्मणः ॥ १,३.३४ ॥
अकर्मकाच्च ॥ १,३.३५ ॥
सम्माननोत्सञ्जनाचार्यकरणज्ञानभृतिविगणनव्ययेषु नियः ॥ १,३.३६ ॥
कर्तृस्थे च शरीरे कर्मणि ॥ १,३.३७ ॥
वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः ॥ १,३.३८ ॥
उपपराभ्याम् ॥ १,३.३९ ॥
आङ उद्गमने ॥ १,३.४० ॥
वेः पादविहरणे ॥ १,३.४१ ॥
प्रोपाभ्यां समर्थाभ्याम् ॥ १,३.४२ ॥
अनुपसर्गाद्वा ॥ १,३.४३ ॥
अपह्नवे ज्ञः ॥ १,३.४४ ॥
अकर्मकाच्च ॥ १,३.४५ ॥
संप्रतिभ्यामनाध्याने ॥ १,३.४६ ॥
भासनोपसम्भाषाज्ञानयत्नविमत्युपमन्त्रणेषु वदः ॥ १,३.४७ ॥
व्यक्तवाचां समुच्चारणे ॥ १,३.४८ ॥
अनोरकर्मकात् ॥ १,३.४९ ॥
विभाषा विप्रलापे ॥ १,३.५० ॥
अवाद्ग्रः ॥ १,३.५१ ॥
समः प्रतिज्ञाने ॥ १,३.५२ ॥
उदश्चरः सकर्मकात् ॥ १,३.५३ ॥
संस्तृतीयायुक्तात् ॥ १,३.५४ ॥
दाणश्च सा चेच्चतुर्थ्यर्थे ॥ १,३.५५ ॥
उपाद्यमः स्वकरने ॥ १,३.५६ ॥
ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः ॥ १,३.५७ ॥
नानोर्ज्ञः ॥ १,३.५८ ॥
प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः ॥ १,३.५९ ॥
शदेः शितः ॥ १,३.६० ॥
म्रियतेर्लुङ्लिङोश्च ॥ १,३.६१ ॥
पूर्ववत्सनः ॥ १,३.६२ ॥
आम्प्रत्ययवत्कृञोऽनुप्रयोगस्य ॥ १,३.६३ ॥
प्रोपाभ्यां युजेरयज्ञपात्रेषु ॥ १,३.६४ ॥
समः क्ष्णुवः ॥ १,३.६५ ॥

भुजोऽनवने ॥ १,३.६६ ॥
णे रणौ यत्कर्म णौ चेत्स कर्ताऽनाध्याने ॥ १,३.६७ ॥
भीस्म्योर्हेतुभये ॥ १,३.६८ ॥
गृधिवञ्च्योः प्रलम्भने ॥ १,३.६९ ॥
लियः संमानशालीनीकरणयोश्च ॥ १,३.७० ॥
मिथ्योपपदात्कृञोऽभ्यासे ॥ १,३.७१ ॥
स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले ॥ १,३.७२ ॥
अपाद्वदः ॥ १,३.७३ ॥
णिचश्च ॥ १,३.७४ ॥
समुदाङ्भ्यो यमोऽग्रन्थे ॥ १,३.७५ ॥
अनुपसर्गाज्ज्ञः ॥ १,३.७६ ॥
विभाषोपपदेन प्रतीयमाने ॥ १,३.७७ ॥
शेषात्कर्तरि परस्मैपदम् ॥ १,३.७८ ॥
अनुपराभ्यां कृञः ॥ १,३.७९ ॥
अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः ॥ १,३.८० ॥
प्राद्वहः ॥ १,३.८१ ॥
परेर्मृषः ॥ १,३.८२ ॥
व्याङ्परिभ्यो रमः ॥ १,३.८३ ॥
उपाच्च ॥ १,३.८४ ॥
विभाशाऽकर्मकात् ॥ १,३.८५ ॥
बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्यो णेः ॥ १,३.८६ ॥
निगरणचलनार्थेभ्यश्च ॥ १,३.८७ ॥
अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात् ॥ १,३.८८ ॥
न पादम्याङ्यमाङ्यसपरिमुहरुचिनृतिवदवसः ॥ १,३.८९ ॥
वा क्यषः ॥ १,३.९० ॥
द्युद्भ्यो लुङि ॥ १,३.९१ ॥
वृद्भ्यः स्यसनोः ॥ १,३.९२ ॥
लुटि च क्लुपः ॥ १,३.९३ ॥

आ कडारादेका सञ्ज्ञा ॥ १,४.१ ॥
विप्रतिषेधे परं कार्यम् ॥ १,४.२ ॥
यू स्त्र्याख्यौ नदी ॥ १,४.३ ॥
नेयङुवङ्स्थानावस्त्री ॥ १,४.४ ॥
व+आमि ॥ १,४.५ ॥
ङिति ह्रस्वश्च ॥ १,४.६ ॥
शेषो घ्यसखि ॥ १,४.७ ॥
पतिः समास एव ॥ १,४.८ ॥
षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा ॥ १,४.९ ॥
ह्रस्वं लघु ॥ १,४.१० ॥
संयोगे गुरु ॥ १,४.११ ॥
दीर्घं च ॥ १,४.१२ ॥
यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् ॥ १,४.१३ ॥
सुप्तिङन्तं पदम् ॥ १,४.१४ ॥
नः क्ये ॥ १,४.१५ ॥
सिति च ॥ १,४.१६ ॥
स्वादिष्वसर्वनमस्थाने ॥ १,४.१७ ॥
यचि भम् ॥ १,४.१८ ॥

तसौ मत्वर्थे ॥ १,४.१९ ॥
अयस्मयादीनि छन्दसि ॥ १,४.२० ॥
बहुषु बहुवचनम् ॥ १,४.२१ ॥
द्व्येकयोर्द्विबचनैकवचने ॥ १,४.२२ ॥
कारके ॥ १,४.२३ ॥
ध्रुवमपायेऽपादानम् ॥ १,४.२४ ॥
भीत्रार्थानां भयहेतुः ॥ १,४.२५ ॥
पराजेरसोढः ॥ १,४.२६ ॥
वारणार्थानामीप्सितः ॥ १,४.२७ ॥
अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति ॥ १,४.२८ ॥
आख्यातोपयोगे ॥ १,४.२९ ॥
जनिकर्तुः प्रकृतिः ॥ १,४.३० ॥
भुवः प्रभवः ॥ १,४.३१ ॥
कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् ॥ १,४.३२ ॥
रुच्यर्थानां प्रीयमाणः ॥ १,४.३३ ॥
श्लाघह्नुङ्स्थाशपां ज्ञीप्स्यमानः ॥ १,४.३४ ॥
धारेरुत्तमर्णः ॥ १,४.३५ ॥
स्पृहेरीप्सितः ॥ १,४.३६ ॥
क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः ॥ १,४.३७ ॥
क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म ॥ १,४.३८ ॥
राद्ीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः ॥ १,४.३९ ॥
प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्ता ॥ १,४.४० ॥
अनुप्रतिगृणश्च ॥ १,४.४१ ॥
साधकतमं करणम् ॥ १,४.४२ ॥
दिवः कर्म च ॥ १,४.४३ ॥
परिक्रयणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम् ॥ १,४.४४ ॥
आधारोऽधिकरणम् ॥ १,४.४५ ॥
अधिशीङ्स्थासां कर्म ॥ १,४.४६ ॥
अभिनिविशश्च ॥ १,४.४७ ॥
उपान्वध्याङ्वसः ॥ १,४.४८ ॥
कर्तुरीप्सिततमं कर्म ॥ १,४.४९ ॥
तथायुक्तं चानीप्सितम् ॥ १,४.५० ॥
अकथितं च ॥ १,४.५१ ॥
गुतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणि कर्ता स णौ ॥ १,४.५२ ॥
हृक्रोरन्यतरस्याम् ॥ १,४.५३ ॥
स्वतन्त्रः कर्ता ॥ १,४.५४ ॥
तत्प्रयोजको हेतुश्च ॥ १,४.५५ ॥
प्राग्रीश्वरान्निपाताः ॥ १,४.५६ ॥
चादयोऽसत्त्वे ॥ १,४.५७ ॥
प्रादयः ॥ १,४.५८ ॥
उपसर्गाः क्रियायोगे ॥ १,४.५९ ॥
गतिश्च ॥ १,४.६० ॥
ऊर्यादिच्विडाचश्च ॥ १,४.६१ ॥
अनुकरणं चानितिपरम् ॥ १,४.६२ ॥
आदरानादरयोः सदसती ॥ १,४.६३ ॥
भूषनेऽलम् ॥ १,४.६४ ॥
अन्तरपरिग्रहे ॥ १,४.६५ ॥

कणेमनसी श्रद्धाप्रतीघाते ॥ १,४.६६ ॥
पुरोऽव्ययम् ॥ १,४.६७ ॥
अस्तं च ॥ १,४.६८ ॥
अच्छ गत्यर्थवदेषु ॥ १,४.६९ ॥
अदोऽनुपदेशे ॥ १,४.७० ॥
तरोऽन्तर्धौ ॥ १,४.७१ ॥
विभाषा कृञि ॥ १,४.७२ ॥
उपाजेऽन्वाजे ॥ १,४.७३ ॥
साक्षात्प्रभृतीनि च ॥ १,४.७४ ॥
अनत्याधान उरसिमनसी ॥ १,४.७५ ॥
मध्ये पदे निवचने च ॥ १,४.७६ ॥
नित्यं हस्ते पानावुपयमने ॥ १,४.७७ ॥
प्राध्वं वन्धने ॥ १,४.७८ ॥
जीविकोपनिषदावौपम्ये ॥ १,४.७९ ॥
ते प्राग्धातोः ॥ १,४.८० ॥
छन्दसि परेऽपि ॥ १,४.८१ ॥
व्यवहिताश्च ॥ १,४.८२ ॥
कर्मप्रवचनीयाः ॥ १,४.८३ ॥
अनुर्लक्षणे ॥ १,४.८४ ॥
तृतीयार्थे ॥ १,४.८५ ॥
हीने ॥ १,४.८६ ॥
उपोऽधिके च ॥ १,४.८७ ॥
अपपरी वर्जने ॥ १,४.८८ ॥
आङ्मर्यादावचने ॥ १,४.८९ ॥
लक्षनेत्थंभूताख्यानभागवीप्सासु प्रतिपर्यनवः ॥ १,४.९० ॥
अभिरभागे ॥ १,४.९१ ॥
प्रतिः प्रतिनिधिप्रतिदानयोः ॥ १,४.९२ ॥
अधिपरी अनर्थकौ ॥ १,४.९३ ॥
सुः पूजायाम् ॥ १,४.९४ ॥
अतिरतिक्रमणे च ॥ १,४.९५ ॥
अपिः पदार्थसम्भावनान्ववसर्गगर्हासमुच्चयेषु ॥ १,४.९६ ॥
अधिरीश्वरे ॥ १,४.९७ ॥
विभाषा कृञि ॥ १,४.९८ ॥
लः परस्मैपदम् ॥ १,४.९९ ॥
तङानावात्मनेपदम् ॥ १,४.१०० ॥
तिङस्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्यमोत्तमाः ॥ १,४.१०१ ॥
तान्येकवचनाद्विवचनबहुवचनान्येकशः ॥ १,४.१०२ ॥
सुपः ॥ १,४.१०३ ॥
विभक्तिश्च ॥ १,४.१०४ ॥
युष्मद्युपपदे समानाधिकरणे स्थानिन्यपि मध्यमः ॥ १,४.१०५ ॥
प्रहासे च मन्योपपदे मन्यतेरुत्तम एकवच्च ॥ १,४.१०६ ॥
अस्मद्युत्तमः ॥ १,४.१०७ ॥
शेषे प्रथमः ॥ १,४.१०८ ॥
परः संनिकर्षः संहिता ॥ १,४.१०९ ॥
विरामोऽवसानम् ॥ १,४.११० ॥

समर्थः पदविधिः ॥ २,१.१ ॥
सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे ॥ २,१.२ ॥
प्राक्कडारात्समासः ॥ २,१.३ ॥
सह सुपा ॥ २,१.४ ॥
अव्ययीभवः ॥ २,१.५ ॥
अव्ययं
विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्तिसाकल्यान्तव्चनेषु ॥ २,१.६ ॥
यथाऽसादृश्ये ॥ २,१.७ ॥
यावदवधारणे ॥ २,१.८ ॥
सुप्प्रैत्ना मात्रार्थे ॥ २,१.९ ॥
अक्षशलाकासङ्ख्याः परिणा ॥ २,१.१० ॥
विभाषा ॥ २,१.११ ॥
अपपरिबहिरञ्चवः पञ्चम्या ॥ २,१.१२ ॥
आङ्मर्यादाभिविध्योः ॥ २,१.१३ ॥
लक्षणेनाभिप्रती आभिमुख्ये ॥ २,१.१४ ॥
अनुर्यत्समया ॥ २,१.१५ ॥
यस्य च आयामः ॥ २,१.१६ ॥
तिष्ठद्गुप्रभृतीनि च ॥ २,१.१७ ॥
पारे मध्ये षष्ठ्या वा ॥ २,१.१८ ॥
सङ्ख्या वंश्येन ॥ २,१.१९ ॥
नदीभिश्च ॥ २,१.२० ॥
अन्यपदर्थे च सञ्ज्ञायाम् ॥ २,१.२१ ॥
तत्पुरुषः ॥ २,१.२२ ॥
द्विगुश्च ॥ २,१.२३ ॥
द्विदीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापनैः ॥ २,१.२४ ॥
स्वयं क्तेन ॥ २,१.२५ ॥
खट्वा क्षेपे ॥ २,१.२६ ॥
सामि ॥ २,१.२७ ॥
कालाः ॥ २,१.२८ ॥
अत्यन्तसंयोगे च ॥ २,१.२९ ॥
तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन ॥ २,१.३० ॥
पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णैः ॥ २,१.३१ ॥
कर्तृकर्णे दता बहुलम् ॥ २,१.३२ ॥
कृत्यैरधिकार्थवचने ॥ २,१.३३ ॥
अन्नेन व्यञ्जनम् ॥ २,१.३४ ॥
भक्ष्येण मिश्रीकरनम् ॥ २,१.३५ ॥
चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः ॥ २,१.३६ ॥
पञ्चमी भयेन ॥ २,१.३७ ॥
अपेतापोढमुक्तपतितापत्रस्तैरल्पशः ॥ २,१.३८ ॥
स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन ॥ २,१.३९ ॥
सप्तमी शौण्डैः ॥ २,१.४० ॥
सिद्धशुष्कपक्वबन्धैश्च ॥ २,१.४१ ॥
ध्वाङ्क्षेन क्षेपे ॥ २,१.४२ ॥
क्र्त्यैरृणे ॥ २,१.४३ ॥
सञ्ज्ञायाम् ॥ २,१.४४ ॥
क्तेनाहोरात्रावयवाः ॥ २,१.४५ ॥

तत्र ॥ २,१.४६ ॥
क्षेपे ॥ २,१.४७ ॥
पात्रेसमितादयश्च ॥ २,१.४८ ॥
पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणानवकेवलाः समानाधिकरणेन ॥ २,१.४९ ॥
दिक्सङ्ख्ये सञ्ज्ञायाम् ॥ २,१.५० ॥
तद्धितर्थोत्तरपदसमाहारे च ॥ २,१.५१ ॥
सङ्ख्यापूर्वो द्विगुः ॥ २,१.५२ ॥
कुत्सितानि कुत्सनैः ॥ २,१.५३ ॥
पापाणके कुत्सितैः ॥ २,१.५४ ॥
उपमानानि सामान्यवचनैः ॥ २,१.५५ ॥
उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे ॥ २,१.५६ ॥
विशेसनं विशेष्येण बहुलम् ॥ २,१.५७ ॥
पूर्वापरप्रथमचरमजघन्यसमानमध्यमध्यमवीराश्च ॥ २,१.५८ ॥
श्रेण्यादयः कृतादिभिः ॥ २,१.५९ ॥
क्तेन नञ्विशिष्टेनानञ् ॥ २,१.६० ॥
सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टाः पूज्यमानैः ॥ २,१.६१ ॥
वृन्दरकनागकुञ्जरैः पूज्यमानम् ॥ २,१.६२ ॥
कतरकतमौ जातिपरिप्रश्ने ॥ २,१.६३ ॥
किं क्षेपे ॥ २,१.६४ ॥
पोटायुवतिस्तोककतिपयगृष्टिधेनुवशावेहद्बष्कयणीप्रवक्तृश्रोत्रियाध्यापकधूर्तैर्जातिः ॥ २,१.६५ ॥
प्रशंसावचनैश्च ॥ २,१.६६ ॥
युवा खलतिपालितवलिनजरतीभिः ॥ २,१.६७ ॥
कृत्यतुल्याख्या अजात्या ॥ २,१.६८ ॥
वर्णो वर्णेन ॥ २,१.६९ ॥
कुमारः श्रमणादिभिः ॥ २,१.७० ॥
चतुष्पादो गर्भिण्या ॥ २,१.७१ ॥
मयूरव्यंसकादयश्च ॥ २,१.७२ ॥

पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे ॥ २,२.१ ॥
अर्धं नपुंसकम् ॥ २,२.२ ॥
द्वितियतृतीयचतुर्थतुर्याण्यन्यतरस्याम् ॥ २,२.३ ॥
प्राप्तापन्ने च द्वितीयया ॥ २,२.४ ॥
कालाः परिमाणिना ॥ २,२.५ ॥
नञ् ॥ २,२.६ ॥
ईषदकृता ॥ २,२.७ ॥
षष्ठी ॥ २,२.८ ॥
याजकादिभिश्च ॥ २,२.९ ॥
न निर्धारणे ॥ २,२.१० ॥
पूरणगुणसुहितार्थसदव्ययतव्यसमानाधिकरनेन ॥ २,२.११ ॥
क्तेन च पूजायाम् ॥ २,२.१२ ॥
अधिकरणवाचिना च ॥ २,२.१३ ॥
कर्मणि च ॥ २,२.१४ ॥
तृजकाभ्यां कर्तरि ॥ २,२.१५ ॥
कर्तरि च ॥ २,२.१६ ॥
नित्यं क्रीडाजीविकयोः ॥ २,२.१७ ॥
कुगतिप्रादयः ॥ २,२.१८ ॥
उपपदमतिङ् ॥ २,२.१९ ॥

अमैवाव्ययेन ॥ २,२.२० ॥
तृतीयाप्रभृतीन्यतरस्यम् ॥ २,२.२१ ॥
क्त्वा च ॥ २,२.२२ ॥
शेषो बहुव्रीहिः ॥ २,२.२३ ॥
अनेकमन्यपदार्थे ॥ २,२.२४ ॥
सङ्ख्ययाऽव्ययासन्नादूराधिकसङ्ख्याः सङ्ख्येये ॥ २,२.२५ ॥
दिङ्नामान्यन्तराले ॥ २,२.२६ ॥
तत्र तेन+इदमिति सरूपे ॥ २,२.२७ ॥
तेन सह+इति तुल्ययोगे ॥ २,२.२८ ॥
चार्थे द्वन्द्वः ॥ २,२.२९ ॥
उपसर्जनं पूर्वम् ॥ २,२.३० ॥
राजदन्तादिषु परम् ॥ २,२.३१ ॥
द्वन्द्वे घि ॥ २,२.३२ ॥
अजाद्यदन्तम् ॥ २,२.३३ ॥
अल्पाच्तरम् ॥ २,२.३४ ॥
सप्तमीविशेषने बहुव्रीहौ ॥ २,२.३५ ॥
निष्ठा ॥ २,२.३६ ॥
वा+आहिताग्न्यादिषु ॥ २,२.३७ ॥
कडाराः कर्मधारये ॥ २,२.३८ ॥

अनभिहिते ॥ २,३.१ ॥
कर्मणि द्वितीया ॥ २,३.२ ॥
तृतीया च होश्छन्दसि ॥ २,३.३ ॥
अन्तराऽन्तरेण युक्ते ॥ २,३.४ ॥
कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे ॥ २,३.५ ॥
अपवर्गे तृतीया ॥ २,३.६ ॥
सप्तमीपञ्चम्यौ कारकमध्ये ॥ २,३.७ ॥
कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया ॥ २,३.८ ॥
यस्मादधिकं यस्य च+ईश्वरवचनं तत्र सप्तमी ॥ २,३.९ ॥
पञ्चम्यपाङ्परिभिः ॥ २,३.१० ॥
प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात् ॥ २,३.११ ॥
गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि ॥ २,३.१२ ॥
चतुर्थी सम्प्रदाने ॥ २,३.१३ ॥
क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः ॥ २,३.१४ ॥
तुमर्थाच्च भाववचनात् ॥ २,३.१५ ॥
नमःस्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च ॥ २,३.१६ ॥
मन्यकर्मण्यनादरे विभाषाऽप्राणिषु ॥ २,३.१७ ॥
कर्तृकरणयोस्तृतीया ॥ २,३.१८ ॥
सहयुक्तेऽप्रधाने ॥ २,३.१९ ॥
येनाङ्गविकारः ॥ २,३.२० ॥
इत्थम्भूतलक्षणे ॥ २,३.२१ ॥
सञ्ज्ञोऽन्यतरस्यां कर्मणि ॥ २,३.२२ ॥
हेतौ ॥ २,३.२३ ॥
अकर्तर्यृणे पञ्चमी ॥ २,३.२४ ॥
विभाषा गुणेऽस्त्रीयाम् ॥ २,३.२५ ॥
षष्ठी हेतुप्रयोगे ॥ २,३.२६ ॥
सर्वनाम्नस्तृतीया च ॥ २,३.२७ ॥

अपादाने पञ्चमी ॥ २,३.२८ ॥
अन्यारादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते ॥ २,३.२९ ॥
षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन ॥ २,३.३० ॥
एनपा द्वितीया ॥ २,३.३१ ॥
पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम् ॥ २,३.३२ ॥
करेण च स्तोकाल्पकृच्छ्रकतिपयस्यासत्त्ववचनस्य ॥ २,३.३३ ॥
दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम् ॥ २,३.३४ ॥
दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च ॥ २,३.३५ ॥
सप्तम्यधिकरने च ॥ २,३.३६ ॥
यस्य च भावेन भावलक्षणम् ॥ २,३.३७ ॥
षष्ठी चानादरे ॥ २,३.३८ ॥
स्वामीश्वराधिपतिदायादसाक्षिप्रतिभूप्रसुतैश्च ॥ २,३.३९ ॥
आयुक्तकुशलाभ्यां च आसेवायाम् ॥ २,३.४० ॥
यतश्च निर्धारनम् ॥ २,३.४१ ॥
पञ्चमी विभक्ते ॥ २,३.४२ ॥
साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्यप्रतेः ॥ २,३.४३ ॥
प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया च ॥ २,३.४४ ॥
नक्षत्रे च लुपि ॥ २,३.४५ ॥
प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा ॥ २,३.४६ ॥
सम्बोधने च ॥ २,३.४७ ॥
सा+आमन्त्रितम् ॥ २,३.४८ ॥
एकवचनं सम्बुद्धिः ॥ २,३.४९ ॥
षष्ठी शेषे ॥ २,३.५० ॥
ज्ञोऽविदर्थस्य करणे ॥ २,३.५१ ॥
अधीगर्थदयेशां कर्मणि ॥ २,३.५२ ॥
कृञः प्रतियत्ने ॥ २,३.५३ ॥
रुजार्थानां भाववचनानामज्वरेः ॥ २,३.५४ ॥
आशिषि नाथः ॥ २,३.५५ ॥
जासिनिप्रहणनाटक्राथपिषां हिंसायाम् ॥ २,३.५६ ॥
व्यवहृपणोः समर्थयोः ॥ २,३.५७ ॥
दिवस्तदर्थस्य ॥ २,३.५८ ॥
विभाषोपसर्गे ॥ २,३.५९ ॥
द्वितीया ब्राह्मणे ॥ २,३.६० ॥
प्रेष्यब्रुवोर्हविषो देवतासम्प्रदाने ॥ २,३.६१ ॥
चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि ॥ २,३.६२ ॥
यजेश्च करणे ॥ २,३.६३ ॥
कृत्वोऽर्थप्रयोगे कालेऽधिकरणे ॥ २,३.६४ ॥
कर्तृकर्मणोः कृति ॥ २,३.६५ ॥
उभयप्राप्तौ कर्मणि ॥ २,३.६६ ॥
क्तस्य च वर्तमाने ॥ २,३.६७ ॥
अधिकरणवाचिनश्च ॥ २,३.६८ ॥
न लोउकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृनाम् ॥ २,३.६९ ॥
अकेनोर्भविष्यदाधमर्ण्ययोः ॥ २,३.७० ॥
कृत्यानां कर्तरि वा ॥ २,३.७१ ॥
तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयाऽन्यतरस्याम् ॥ २,३.७२ ॥
चतुर्थी च आशिष्यायुष्यमद्रभद्रकुशलसुखार्थहितैः ॥ २,३.७३ ॥

द्विगुरेकवचनम् ॥ २,४.१ ॥
द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम् ॥ २,४.२ ॥
अनुवादे चरणानाम् ॥ २,४.३ ॥
अध्वर्युक्रतुरनपुंसकम् ॥ २,४.४ ॥
अध्ययनतोऽविप्रकृष्टाख्यानाम् ॥ २,४.५ ॥
जातिरप्राणिनाम् ॥ २,४.६ ॥
विशिष्टलिङ्गो नदी देशोऽग्रामाः ॥ २,४.७ ॥
क्षुद्रजन्तवः ॥ २,४.८ ॥
येषां च विरोधः शाश्वतिकः ॥ २,४.९ ॥
शूद्राणामनिरवसितानाम् ॥ २,४.१० ॥
गवाश्वप्रभृतीनि च ॥ २,४.११ ॥
विभाषा वृक्षमृगतृणधान्यव्यञ्जनपशुशकुन्यश्ववडवपूर्वापराधरोत्तराणाम् ॥ २,४.१२ ॥
विप्रतिषिद्धं चानधिकरणवाचि ॥ २,४.१३ ॥
न दधिपयादीनि ॥ २,४.१४ ॥
अधिकरनैतावत्त्वे च ॥ २,४.१५ ॥
विभाषा समीपे ॥ २,४.१६ ॥
स नपुंसकम् ॥ २,४.१७ ॥
अव्ययीभावश्च ॥ २,४.१८ ॥
तत्पुरुषोऽनञ्कर्मधारयः ॥ २,४.१९ ॥
सञ्ज्ञायां कन्तोशीनरेषु ॥ २,४.२० ॥
उपज्ञोपक्रमं तदाद्याचिख्यासायाम् ॥ २,४.२१ ॥
छाया बाहुल्ये ॥ २,४.२२ ॥
सभा राजाऽमनुस्यपूर्वा ॥ २,४.२३ ॥
अशाला च ॥ २,४.२४ ॥
विभाषा सेनासुराच्छायाशालानिशानाम् ॥ २,४.२५ ॥
परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः ॥ २,४.२६ ॥
पूर्ववदश्ववडवौ ॥ २,४.२७ ॥
हेमन्तशिशिरावहोरात्रे च छन्दसि ॥ २,४.२८ ॥
रात्राह्नाहाः पुंसि ॥ २,४.२९ ॥
अपथं नपुंसकम् ॥ २,४.३० ॥
अर्धर्चाः पुंसि च ॥ २,४.३१ ॥
इदमोऽन्वादेशेऽशनुदात्तस्तृतीयादौ ॥ २,४.३२ ॥
एतदस्त्रतसोस्त्रतसौ चानुदातौ ॥ २,४.३३ ॥
द्वितीयाटौस्स्वेनः ॥ २,४.३४ ॥
आर्धधातुके ॥ २,४.३५ ॥
अदो जग्धिर्ल्यप्ति किति ॥ २,४.३६ ॥
लुङ्सनोर्घस्ऌ ॥ २,४.३७ ॥
घञपोश्च ॥ २,४.३८ ॥
बहुलं छन्दसि ॥ २,४.३९ ॥
लिट्यन्तरस्याम् ॥ २,४.४० ॥
वेञो वयिः ॥ २,४.४१ ॥
हनो वध लिङि ॥ २,४.४२ ॥
लुङि च ॥ २,४.४३ ॥
आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम् ॥ २,४.४४ ॥
इणो गा लुङि ॥ २,४.४५ ॥
णौ गमिरबोधने ॥ २,४.४६ ॥
सनि च ॥ २,४.४७ ॥

इङश्च ॥ २,४.४८ ॥
गाङ्लिटि ॥ २,४.४९ ॥
विभाषा लुङ्लृङोः ॥ २,४.५० ॥
णौ च संश्चङोः ॥ २,४.५१ ॥
अस्तेर्भूः ॥ २,४.५२ ॥
ब्रुवो बचिः ॥ २,४.५३ ॥
चक्षिङः ख्याञ् ॥ २,४.५४ ॥
वा लिटि ॥ २,४.५५ ॥
अजेर्व्यघञपोः ॥ २,४.५६ ॥
वा यौ ॥ २,४.५७ ॥
ण्यक्षत्रियार्षञितो यूनि लुगणिञोः ॥ २,४.५८ ॥
पैलादिब्यश्च ॥ २,४.५९ ॥
इञः प्राचाम् ॥ २,४.६० ॥
न तौल्वलिभ्यः ॥ २,४.६१ ॥
तद्राजस्य बहुषु तेन+एवास्त्रियाम् ॥ २,४.६२ ॥
यस्कादिभ्यो गोत्रे ॥ २,४.६३ ॥
यञञोश्च ॥ २,४.६४ ॥
अत्रिभृगुकुत्सवसिष्ठगोतमाङ्गिरोभ्यश्च ॥ २,४.६५ ॥
बह्वचिञः प्राच्यभ्रतेषु ॥ २,४.६६ ॥
न गोपवनादिभ्यः ॥ २,४.६७ ॥
तिककितवादिभ्यो द्वन्द्वे ॥ २,४.६८ ॥
उपकादिभ्योऽन्यतरस्यामद्वन्द्वे ॥ २,४.६९ ॥
आगस्त्यकौण्डिन्ययोरगस्तिकुण्डिनच् ॥ २,४.७० ॥
सुपो धातुप्रातिपदिकयोः ॥ २,४.७१ ॥
अदिप्रभृतिभ्यः शपः ॥ २,४.७२ ॥
बहुलं छन्दसि ॥ २,४.७३ ॥
यङोऽचि च ॥ २,४.७४ ॥
जुहोत्यादिभ्यः श्लुः ॥ २,४.७५ ॥
बहुलं छन्दसि ॥ २,४.७६ ॥
गातिस्थाघुपाभूभ्यः सिचः परस्मैपदेषु ॥ २,४.७७ ॥
विभाषा घ्राधेट्शाच्छासः ॥ २,४.७८ ॥
तनादिभ्यस्तथासोः ॥ २,४.७९ ॥
मन्त्रे घसह्वरनशवृदहाद्वृच्कृगमिजनिभ्यो लेः ॥ २,४.८० ॥
आमः ॥ २,४.८१ ॥
अव्ययादाप्सुपः ॥ २,४.८२ ॥
नाव्ययीभावादतोऽम् त्वपञ्चम्याः ॥ २,४.८३ ॥
तृतीयासप्तम्योर्बहुलम् ॥ २,४.८४ ॥
लुटः प्रथमस्य डारौरसः ॥ २,४.८५ ॥

प्रत्ययः ॥ ३,१.१ ॥
परश्च ॥ ३,१.२ ॥
आद्युदात्तश्च ॥ ३,१.३ ॥
अनुदात्तौ सुप्पितौ ॥ ३,१.४ ॥
गुप्तिज्किद्भ्यः सन् ॥ ३,१.५ ॥
मान्बधदान्शान्भ्यो दीर्घश्चाभ्यासस्य ॥ ३,१.६ ॥
धातोः कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायां वा ॥ ३,१.७ ॥

सुप आत्मनः क्यच् ॥ ३,१.८ ॥
काम्यच्च ॥ ३,१.९ ॥
उपमानादाचारे ॥ ३,१.१० ॥
कर्तुः क्यङ्सलोपश्च ॥ ३,१.११ ॥
भृशादिभ्यो भुव्यच्वेर्लोपश्च हलः ॥ ३,१.१२ ॥
लोहितादिडाज्भ्यः क्यष् ॥ ३,१.१३ ॥
कष्टाय क्रमणे ॥ ३,१.१४ ॥
कर्मणो रोमन्थतपोभ्यां वर्तिचरोः ॥ ३,१.१५ ॥
बाष्पोष्मभ्यामुद्वमने ॥ ३,१.१६ ॥
शब्दवैरकलहाभ्रकण्वमेघेभ्यः करणे ॥ ३,१.१७ ॥
सुखादिभ्यः कर्तृवेदनायाम् ॥ ३,१.१८ ॥
नमोवरिवश्चित्रङः क्यच् ॥ ३,१.१९ ॥
पुच्छभान्डचीवराण्णिङ् ॥ ३,१.२० ॥
मुण्डमिश्रश्लक्ष्णलवणव्रतवस्त्रहलकलकृततूस्तेभ्यो णिच् ॥ ३,१.२१ ॥
धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ् ॥ ३,१.२२ ॥
नित्यं कौटिल्ये गतौ ॥ ३,१.२३ ॥
लुपसदचरजपजभदहदशगॄभ्यो भावगर्हायाम् ॥ ३,१.२४ ॥
सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच् ॥ ३,१.२५ ॥
हेतुमति च ॥ ३,१.२६ ॥
कण्ड्वादिभ्यो यक् ॥ ३,१.२७ ॥
गुपूधूपविच्छिपणिपनिभ्य आयः ॥ ३,१.२८ ॥
ऋतेरीयङ् ॥ ३,१.२९ ॥
कमेर्णिङ् ॥ ३,१.३० ॥
आयादय आर्धधातुके वा ॥ ३,१.३१ ॥
सनाद्यन्ता धातवः ॥ ३,१.३२ ॥
स्यतासी लृलुटोः ॥ ३,१.३३ ॥
सिब्बहुलं लेति ॥ ३,१.३४ ॥
कास्प्रत्ययादाममन्त्रे लिटि ॥ ३,१.३५ ॥
इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः ॥ ३,१.३६ ॥
दयायासश्च ॥ ३,१.३७ ॥
उषविदजागृभ्योऽन्यतरस्याम् ॥ ३,१.३८ ॥
भीह्रीभृहुवां श्लुवच्च ॥ ३,१.३९ ॥
कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि ॥ ३,१.४० ॥
विदाङ्कुर्वन्त्वित्यन्यतरस्याम् ॥ ३,१.४१ ॥
अभ्युत्सादयांप्रजनयाम्चिकयांरमयामकः पावयाम्क्रियाद्विदामक्रन्निति च्छन्दसि ॥ ३,१.४२ ॥
च्लि लुङि ॥ ३,१.४३ ॥
च्लेः सिच् ॥ ३,१.४४ ॥
शल इगुपधादनिटः क्सः ॥ ३,१.४५ ॥
श्लिष आलिङ्गने ॥ ३,१.४६ ॥
न दृशः ॥ ३,१.४७ ॥
णिश्रिद्रुस्रुभ्यः कर्तरि चङ् ॥ ३,१.४८ ॥
विभाषा धेट्श्व्योः ॥ ३,१.४९ ॥
गुपेश्छन्दसि ॥ ३,१.५० ॥
नोनयतिध्वनयत्येलयत्यर्दयतिभ्यः ॥ ३,१.५१ ॥
अस्यतिवक्तिख्यातिभ्योऽङ् ॥ ३,१.५२ ॥
लिपिसिचिह्वश्च ॥ ३,१.५३ ॥

आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम् ॥ ३,१.५४ ॥
पुषादिद्युताद्यॢदितः प्रस्मैपदेषु ॥ ३,१.५५ ॥
सर्तिशास्त्यर्तिभ्यश्च ॥ ३,१.५६ ॥
इरितो वा ॥ ३,१.५७ ॥
जॄस्तम्भुम्रुचुम्लुचुग्रुचुग्लुचुग्लुञ्चुश्विभ्यश्च ॥ ३,१.५८ ॥
कृमृदृरुहिभ्यश्छन्दसि ॥ ३,१.५९ ॥
चिण्ते पदः ॥ ३,१.६० ॥
दीपजनबुधपूरितायिप्यायिभ्योऽन्यतरस्याम् ॥ ३,१.६१ ॥
अचः कर्मकर्तरि ॥ ३,१.६२ ॥
दुहश्च ॥ ३,१.६३ ॥
न रुधः ॥ ३,१.६४ ॥
तपोऽनुतापे च ॥ ३,१.६५ ॥
चिण्भावकर्मणोः ॥ ३,१.६६ ॥
सार्वधातुके यक् ॥ ३,१.६७ ॥
कर्तरि शप् ॥ ३,१.६८ ॥
दिवादिभ्यः श्यन् ॥ ३,१.६९ ॥
वा भ्राशभ्लाशभ्रमुक्रमुक्लमुत्रसित्रुतिलषः ॥ ३,१.७० ॥
यसोऽनुपसर्गात् ॥ ३,१.७१ ॥
संयसश्च ॥ ३,१.७२ ॥
स्वादिभ्यः श्नुः ॥ ३,१.७३ ॥
श्रुवः शृ च ॥ ३,१.७४ ॥
अक्षोऽन्यतरस्याम् ॥ ३,१.७५ ॥
तनूकरणे तक्षः ॥ ३,१.७६ ॥
तुदादिभ्यः शः ॥ ३,१.७७ ॥
रुद्ःादिभ्यः श्नम् ॥ ३,१.७८ ॥
तनादिकृञ्भ्यः उः ॥ ३,१.७९ ॥
धिन्विकृण्व्योर च ॥ ३,१.८० ॥
क्र्यादिभ्यः श्ना ॥ ३,१.८१ ॥
स्तम्भुस्तुम्भुस्कम्भुस्कुम्भुस्कुञ्भ्यः श्नुश्च ॥ ३,१.८२ ॥
हलः श्नः शानज्झौ ॥ ३,१.८३ ॥
छन्दसि शायजपि ॥ ३,१.८४ ॥
व्यत्ययो बहुलम् ॥ ३,१.८५ ॥
लिङ्याशिष्यङ् ॥ ३,१.८६ ॥
कर्मवत्कर्मणा तुल्यक्रियः ॥ ३,१.८७ ॥
तपस्तपःकर्मकस्य+एव ॥ ३,१.८८ ॥
न दुहस्नुनमां यक्चिणौ ॥ ३,१.८९ ॥
कुषिरजोः प्राचां श्यन् परस्मैपदं च ॥ ३,१.९० ॥
धातोः ॥ ३,१.९१ ॥
तत्र+उपपदं सप्तमीस्थम् ॥ ३,१.९२ ॥
कृदतिङ् ॥ ३,१.९३ ॥
वाऽसरूपोऽस्त्रियाम् ॥ ३,१.९४ ॥
कृत्याः प्रग्ण्वुलः ॥ ३,१.९५ ॥
तव्यत्तव्यानीयरः ॥ ३,१.९६ ॥
अचो यत् ॥ ३,१.९७ ॥
पोरदुपधात् ॥ ३,१.९८ ॥
शकिसहोश्च ॥ ३,१.९९ ॥
गदमदचरयमश्चानुपसर्गे ॥ ३,१.१०० ॥

अवद्यपण्यवर्या गर्ह्यपणितव्यानिरोधेषु ॥ ३,१.१०१ ॥
वह्यं करणम् ॥ ३,१.१०२ ॥
अर्यः स्वमिवैश्ययोः ॥ ३,१.१०३ ॥
उपसर्या काल्या प्रजने ॥ ३,१.१०४ ॥
अजर्यं सङ्गतम् ॥ ३,१.१०५ ॥
वदः सुपि क्यप्च ॥ ३,१.१०६ ॥
भुवो भावे ॥ ३,१.१०७ ॥
हनस्त च ॥ ३,१.१०८ ॥
एतिस्तुशास्वृदृजुषः क्यप् ॥ ३,१.१०९ ॥
ऋदुपधाच्चाक्लृपिचृतेः ॥ ३,१.११० ॥
ई च खनः ॥ ३,१.१११ ॥
भृञोऽसञ्ज्ञायाम् ॥ ३,१.११२ ॥
मृजेर्विभाषा ॥ ३,१.११३ ॥
राजसूयसूर्यमृषोद्यरुच्यकुप्यकृष्टपच्याव्यथ्याः ॥ ३,१.११४ ॥
भिद्योद्ध्यौ नदे ॥ ३,१.११५ ॥
पुष्यसिद्ध्यौ नक्षत्रे ॥ ३,१.११६ ॥
विपूयविनीयजित्या मुञ्जकल्कहलिषु ॥ ३,१.११७ ॥
प्रत्यपिभ्यां ग्रहेश्छन्दसि ॥ ३,१.११८ ॥
पदास्वैरिबाह्यापक्ष्येषु च ॥ ३,१.११९ ॥
विभाषा कृवृषोः ॥ ३,१.१२० ॥
युग्यं च पत्रे ॥ ३,१.१२१ ॥
अमावस्यदन्यतरस्याम् ॥ ३,१.१२२ ॥
छन्दसि
निष्टर्क्यदेवहूयप्रणीयोन्नीयोच्छिष्यमर्यस्तर्यध्वर्यखन्यखान्यदेवयज्यापृच्छ्यप्रतिषीव्यब्रह्मवाद्य
भाव्यस्ताव्योपचाय्यपृडानि ॥ ३,१.१२३ ॥
ऋहलोर्ण्यत् ॥ ३,१.१२४ ॥
ओरावश्यके ॥ ३,१.१२५ ॥
आसुयुवपिरपिलपित्रपिचमश्च ॥ ३,१.१२६ ॥
आनाय्योऽनित्ये ॥ ३,१.१२७ ॥
प्रणाय्योऽसम्मतौ ॥ ३,१.१२८ ॥
पाय्यसान्नाय्यनिकाय्यधाय्या मानहविर्निवाससामिधेनीषु ॥ ३,१.१२९ ॥
क्रतौ कुण्डपाय्यसञ्चाय्यौ ॥ ३,१.१३० ॥
अग्नौ परिचाय्योपचाय्यसमूह्याः ॥ ३,१.१३१ ॥
चित्याग्निचित्ये च ॥ ३,१.१३२ ॥
ण्वुल्तृचौ ॥ ३,१.१३३ ॥
नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः ॥ ३,१.१३४ ॥
इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः ॥ ३,१.१३५ ॥
आतश्च+उपसर्गे ॥ ३,१.१३६ ॥
पाघ्राध्माधेट्दृशः शः ॥ ३,१.१३७ ॥
अनुपसर्गाल्लिम्पविन्दधारिपारिवेद्युदेजिचेतिसातिसाहिभ्यश्च ॥ ३,१.१३८ ॥
ददातिदधात्योर्विभाषा ॥ ३,१.१३९ ॥
ज्वलितिकसन्तेभ्यो णः ॥ ३,१.१४० ॥
श्याद्व्यधास्रुसंस्र्वतीणवसावहृलिहश्लिषश्वसश्च ॥ ३,१.१४१ ॥
दुन्योरनुपसर्गे ॥ ३,१.१४२ ॥
विभाशा ग्रहः ॥ ३,१.१४३ ॥
गेहे कः ॥ ३,१.१४४ ॥
शिल्पिनि ष्वुन् ॥ ३,१.१४५ ॥

गस्थकन् ॥ ३,१.१४६ ॥
ण्युट्च ॥ ३,१.१४७ ॥
हश्च व्रीहिकालयोः ॥ ३,१.१४८ ॥
प्रुसृल्वः समभिहारे वुन् ॥ ३,१.१४९ ॥
आशिषि च ॥ ३,१.१५० ॥

कर्मण्यण् ॥ ३,२.१ ॥
ह्वावामश्च ॥ ३,२.२ ॥
आतोऽनुपसर्गे कः ॥ ३,२.३ ॥
सुपि स्थः ॥ ३,२.४ ॥
तुन्दशोकयोः परिमृजापनुदोः ॥ ३,२.५ ॥
प्रे दाज्ञः ॥ ३,२.६ ॥
समि ख्यः ॥ ३,२.७ ॥
गापोष्टक् ॥ ३,२.८ ॥
हरतेरनुद्यमनेऽच् ॥ ३,२.९ ॥
वयसि च ॥ ३,२.१० ॥
आङि ताच्छील्ये ॥ ३,२.११ ॥
अर्हः ॥ ३,२.१२ ॥
स्तम्बकर्णयो रमिजपोः ॥ ३,२.१३ ॥
शमि धातोः सञ्ज्ञायाम् ॥ ३,२.१४ ॥
अधिकरणे शेतेः ॥ ३,२.१५ ॥
चरेष्टः ॥ ३,२.१६ ॥
भिक्षासेनादायेषु च ॥ ३,२.१७ ॥
पुरोऽग्रतोऽग्रेषु सर्तेः ॥ ३,२.१८ ॥
पूर्वे कर्तरि ॥ ३,२.१९ ॥
कृञो हेतुताच्छील्यानुलोम्येषु ॥ ३,२.२० ॥
दिवाविभानिशाप्रभाभास्कारान्तानन्तादिबहुनान्दीकिंलिपिलिबिबलिभक्तिकर्तृचित्रक्षेत्रसङ्ख्या
जङ्घाबाह्वहर्यत्तद्धनुररुष्षु ॥ ३,२.२१ ॥
कर्मणि भृतौ ॥ ३,२.२२ ॥
न शब्दश्लोककलहगाथावैरचाटुसूत्रमन्त्रपदेषु ॥ ३,२.२३ ॥
स्तम्बशकृतोरिन् ॥ ३,२.२४ ॥
हरतेर्दृतिनाथयोः पशौ ॥ ३,२.२५ ॥
फलेग्रहिरात्मम्भरिश्च ॥ ३,२.२६ ॥
छन्दसि वनसनरक्षिमथाम् ॥ ३,२.२७ ॥
एजेः खश् ॥ ३,२.२८ ॥
नासिकास्तनयोर्ध्माधेटोः ॥ ३,२.२९ ॥
नाडीमुष्ट्योश्च ॥ ३,२.३० ॥
उदि कूले रुजिवहोः ॥ ३,२.३१ ॥
वहाभ्रे लिहः ॥ ३,२.३२ ॥
परिमाणे पचः ॥ ३,२.३३ ॥
मितनखे च ॥ ३,२.३४ ॥
विध्वरुषोस्तुदः ॥ ३,२.३५ ॥
असूर्यललाटयोर्दृशितपोः ॥ ३,२.३६ ॥
उग्रम्पश्येरम्मदपाणिन्धमाश्च ॥ ३,२.३७ ॥
प्रियवशे वदः खच् ॥ ३,२.३८ ॥
द्विषत्परयोस्तापेः ॥ ३,२.३९ ॥
वाचि यमो व्रते ॥ ३,२.४० ॥

पूःसर्वयोर्दारिसहोः ॥ ३,२.४१ ॥
सर्वकूलाभ्रकरीषेषु कषः ॥ ३,२.४२ ॥
मेघर्तिभयेषु कृञः ॥ ३,२.४३ ॥
क्षेमप्रियमद्रेऽण्च ॥ ३,२.४४ ॥
आशिते भुवः करणभावयोः ॥ ३,२.४५ ॥
सञ्ज्ञायां भृतृवृजिधारिसहितपिदमः ॥ ३,२.४६ ॥
गमश्च ॥ ३,२.४७ ॥
अन्तात्यन्ताध्वदूरपारसर्वानन्तेषु डः ॥ ३,२.४८ ॥
आशिषि हनः ॥ ३,२.४९ ॥
अपे क्लेशतमसोः ॥ ३,२.५० ॥
कुमारशीर्षयोर्णिनिः ॥ ३,२.५१ ॥
लक्षणे जायापत्योष्टक् ॥ ३,२.५२ ॥
अमनुष्यकर्तृके च ॥ ३,२.५३ ॥
शक्तौ हस्ति कपाटयोः ॥ ३,२.५४ ॥
पाणिघताडघौ शिल्पिनि ॥ ३,२.५५ ॥
आढ्यसुभगस्थूलपलितनग्नान्धप्रियेषु च्व्यर्थेष्वच्वौ कृञः करणे ख्युन् ॥ ३,२.५६ ॥
कर्तरि भुवः खिष्णुच्खुकञौ ॥ ३,२.५७ ॥
स्पृशोऽनुदके क्विन् ॥ ३,२.५८ ॥
ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च ॥ ३,२.५९ ॥
त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कञ्च ॥ ३,२.६० ॥
सत्सूद्विषद्रुहदुहयुजविदभिदच्छिदजिनीराजामुअसर्गेऽपि क्विप् ॥ ३,२.६१ ॥
भजो ण्विः ॥ ३,२.६२ ॥
छन्दसि सहः ॥ ३,२.६३ ॥
वहश्च ॥ ३,२.६४ ॥
कव्यपुरीषपुरीष्येषु ञ्युट् ॥ ३,२.६५ ॥
हव्येऽनन्तःपादाम् ॥ ३,२.६६ ॥
जनसनखनक्रमगमो विट् ॥ ३,२.६७ ॥
अदोऽनन्ने ॥ ३,२.६८ ॥
क्रव्ये च ॥ ३,२.६९ ॥
दुहः कब्घश्च ॥ ३,२.७० ॥
मन्त्रे श्वेतवहोक्थशस्पुरोडाशो ण्विन् ॥ ३,२.७१ ॥
अवे यजः ॥ ३,२.७२ ॥
विजुपे छन्दसि ॥ ३,२.७३ ॥
आतो मनिन्क्वनिब्वनिपश्च ॥ ३,२.७४ ॥
अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते ॥ ३,२.७५ ॥
क्विप्च ॥ ३,२.७६ ॥
स्थः क च ॥ ३,२.७७ ॥
सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये ॥ ३,२.७८ ॥
कर्तर्युपमामे ॥ ३,२.७९ ॥
व्रते ॥ ३,२.८० ॥
बहुलमाभीक्ष्ण्ये ॥ ३,२.८१ ॥
मनः ॥ ३,२.८२ ॥
आत्ममाने खश्च ॥ ३,२.८३ ॥
भूते ॥ ३,२.८४ ॥
करणे यजः ॥ ३,२.८५ ॥
करमणि हनः ॥ ३,२.८६ ॥
ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु क्विप् ॥ ३,२.८७ ॥

बहुलं छन्दसि ॥ ३,२.८८ ॥
सुकर्मपापमन्त्रपुण्येषु कृञः ॥ ३,२.८९ ॥
सोमे सुञः ॥ ३,२.९० ॥
अग्नौ चेः ॥ ३,२.९१ ॥
कर्मण्यग्न्याख्यायाम् ॥ ३,२.९२ ॥
कर्मणि इनिर्विक्रियः ॥ ३,२.९३ ॥
दृशेः क्वनिप् ॥ ३,२.९४ ॥
राजनि युधिकृञः ॥ ३,२.९५ ॥
सहे च ॥ ३,२.९६ ॥
सप्तम्यां जनेर्डः ॥ ३,२.९७ ॥
पञ्चम्यामजातौ ॥ ३,२.९८ ॥
उपसर्गे च सञ्ज्ञायाम् ॥ ३,२.९९ ॥
अनौ कर्मणि ॥ ३,२.१०० ॥
अन्येष्वपि दृश्यते ॥ ३,२.१०१ ॥
निष्ठा ॥ ३,२.१०२ ॥
सुयजोर्ङ्वनिप् ॥ ३,२.१०३ ॥
जीर्यतेरतृन् ॥ ३,२.१०४ ॥
छन्दसि लिट् ॥ ३,२.१०५ ॥
लिटः कानज्वा ॥ ३,२.१०६ ॥
क्वसुश्च ॥ ३,२.१०७ ॥
भाषायां सदवसश्रुवः ॥ ३,२.१०८ ॥
उपेयिवाननाश्वाननूचानश्च ॥ ३,२.१०९ ॥
लुङ् ॥ ३,२.११० ॥
अनद्यतने लङ् ॥ ३,२.१११ ॥
अभिज्ञावचने लृट् ॥ ३,२.११२ ॥
न यदि ॥ ३,२.११३ ॥
विभाषा साकाङ्क्षे ॥ ३,२.११४ ॥
परोक्षे लिट् ॥ ३,२.११५ ॥
हशश्वतोर्लङ्च ॥ ३,२.११६ ॥
प्रश्ने च आसन्नकले ॥ ३,२.११७ ॥
लट्स्मे ॥ ३,२.११८ ॥
अपरोक्षे च ॥ ३,२.११९ ॥
ननौ पृष्टप्रतिवचने ॥ ३,२.१२० ॥
नन्वोर्विभाषा ॥ ३,२.१२१ ॥
पुरि लुङ्चास्मे ॥ ३,२.१२२ ॥
वर्तमाने लट् ॥ ३,२.१२३ ॥
लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे ॥ ३,२.१२४ ॥
सम्बोधने च ॥ ३,२.१२५ ॥
लक्षणहेत्वोः क्रियायाः ॥ ३,२.१२६ ॥
तौ सत् ॥ ३,२.१२७ ॥
पूङ्यजोः शानन् ॥ ३,२.१२८ ॥
ताच्छीयवयोवचनशक्तिषु चानश् ॥ ३,२.१२९ ॥
इङ्धार्योः शत्रकृच्छ्रिणि ॥ ३,२.१३० ॥
द्विषोऽमित्रे ॥ ३,२.१३१ ॥
सुञो यज्ञसंयोगे ॥ ३,२.१३२ ॥
अर्हः प्रशंसायाम् ॥ ३,२.१३३ ॥
आ क्वेः तच्छीलतद्धर्मतत्साधुकारिषु ॥ ३,२.१३४ ॥

तृन् ॥ ३,२.१३५ ॥
अलङ्कृञ्निराकृञ्प्रजनोत्पचोत्पतोन्मदरुच्यपत्रपवृतुवृधुसहचर इष्णुच् ॥ ३,२.१३६ ॥
णेश्छन्दसि ॥ ३,२.१३७ ॥
भुवश्च ॥ ३,२.१३८ ॥
ग्लाजिस्थश्च क्स्नुः ॥ ३,२.१३९ ॥
त्रसिगृधिधृषिक्षिपेः क्नुः ॥ ३,२.१४० ॥
शमित्यष्टाभ्यो घिनुण् ॥ ३,२.१४१ ॥
संपृचानुरुधाङ्यमाङ्यसपरिसृसंसृजपरिदेविसंज्वरपरिक्षिपपरिरटपरिवदपरिदहपरिमुहदुषद्विषद्रुहदुहयुजाक्रीडविविचत्यजरजभजातिचरापचरामुषाभ्याहनश्च ॥ ३,२.१४२ ॥
वौ कषलसकत्थस्रम्भः ॥ ३,२.१४३ ॥
अपे च लषः ॥ ३,२.१४४ ॥
प्रे लपसृद्रुमथवदवसः ॥ ३,२.१४५ ॥
निन्दहिंसक्लिशखादविनाशपरिक्षिपपरिरटपरिवादिव्याभाषासूयो वुञ् ॥ ३,२.१४६ ॥
देविक्रुशोश्च+उपसर्गे ॥ ३,२.१४७ ॥
चलनशब्दार्थादकर्मकाद्युच् ॥ ३,२.१४८ ॥
अनुदात्तेतश्च हलादेः ॥ ३,२.१४९ ॥
जुचङ्क्रम्यदन्द्रम्यसृगृधिज्वलशुचलषपतपदः ॥ ३,२.१५० ॥
क्रुधमण्डार्थेभ्यश्च ॥ ३,२.१५१ ॥
न यः ॥ ३,२.१५२ ॥
सूददीपदीक्षश्च ॥ ३,२.१५३ ॥
लषपतपदस्थाभूवृषहनकमगमशृभ्य उकञ् ॥ ३,२.१५४ ॥
जल्पभिक्षकुट्टलुण्टवृङः षाकन् ॥ ३,२.१५५ ॥
प्रजोरिनिः ॥ ३,२.१५६ ॥
जिदृक्षिविश्रीण्वमाव्यथाभ्यमपरिभूप्रसूभ्यश्च ॥ ३,२.१५७ ॥
स्पृहिगृहिपतिदयिनिद्रातन्द्राश्रद्धाभ्य आलुच् ॥ ३,२.१५८ ॥
दाधेट्सिशदसदो रुः ॥ ३,२.१५९ ॥
सृघस्यदः क्मरच् ॥ ३,२.१६० ॥
भञ्जभासमिदो घुरच् ॥ ३,२.१६१ ॥
विदिभिदिच्छिदेः कुरच् ॥ ३,२.१६२ ॥
इण्नशिजसर्तिभ्यः क्वरप् ॥ ३,२.१६३ ॥
गत्वरश्च ॥ ३,२.१६४ ॥
जागुरूकः ॥ ३,२.१६५ ॥
यजजपदशां यङः ॥ ३,२.१६६ ॥
नमिकम्पिस्म्यजसकमहिंसदीपो रः ॥ ३,२.१६७ ॥
सनाशंसभिक्ष उः ॥ ३,२.१६८ ॥
विन्दुरिच्छुः ॥ ३,२.१६९ ॥
क्याच्छन्दसि ॥ ३,२.१७० ॥
आदृगमहनजनः किकिनौ लिट्च ॥ ३,२.१७१ ॥
स्वपितृषोर्नजिङ् ॥ ३,२.१७२ ॥
शॄवन्द्योरारुः ॥ ३,२.१७३ ॥
भियः क्रुक्लुकनौ ॥ ३,२.१७४ ॥
स्थेशभासपिसकसो वरच् ॥ ३,२.१७५ ॥
यश्च यङः ॥ ३,२.१७६ ॥
भ्राजभासधुर्विद्युतोर्जिपॄजुग्रावस्तुवः क्विप् ॥ ३,२.१७७ ॥
अन्येभ्योऽपि दृश्यते ॥ ३,२.१७८ ॥
भुवः सञ्ज्ञान्तरयोः ॥ ३,२.१७९ ॥
विप्रसम्भ्यो ड्वसञ्ज्ञायाम् ॥ ३,२.१८० ॥

धः करम्णि ष्ट्रन् ॥ ३,२.१८१ ॥
दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः करणे ॥ ३,२.१८२ ॥
हलसूकरयोः पुवः ॥ ३,२.१८३ ॥
अर्तिलूधूसूखनसहचर इत्रः ॥ ३,२.१८४ ॥
पुवः सञ्ज्ञायाम् ॥ ३,२.१८५ ॥
कर्तरि चर्षिदेवतयोः ॥ ३,२.१८६ ॥
ञीतः क्तः ॥ ३,२.१८७ ॥
मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च ॥ ३,२.१८८ ॥

उणादयो बहुलम् ॥ ३,३.१ ॥
भूतेऽपि दृश्यन्ते ॥ ३,३.२ ॥
भविष्यति गम्यादयः ॥ ३,३.३ ॥
यावत्पुरानिपातयोर्लट् ॥ ३,३.४ ॥
विभाषा कदाकर्ह्योः ॥ ३,३.५ ॥
किंवृत्ते लिप्सायाम् ॥ ३,३.६ ॥
लिप्स्यमानसिद्धौ च ॥ ३,३.७ ॥
लोडर्थलक्षने च ॥ ३,३.८ ॥
लिङ्च+ऊर्ध्वमौहूर्तिके ॥ ३,३.९ ॥
तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम् ॥ ३,३.१० ॥
भाववचनाश्च ॥ ३,३.११ ॥
अण्कर्मणि च ॥ ३,३.१२ ॥
लृट्शेषे च ॥ ३,३.१३ ॥
लृटः सद्वा ॥ ३,३.१४ ॥
अनद्यतने लुट् ॥ ३,३.१५ ॥
पदरुजविशस्पृशो घञ् ॥ ३,३.१६ ॥
सृ स्थिरे ॥ ३,३.१७ ॥
भावे ॥ ३,३.१८ ॥
अकर्तरि च कारके सञ्ज्ञायाम् ॥ ३,३.१९ ॥
परिमाणाख्यायां सर्वेभ्यः ॥ ३,३.२० ॥
इङश्च ॥ ३,३.२१ ॥
उपसर्गे रुवः ॥ ३,३.२२ ॥
समि युद्रुदुवः ॥ ३,३.२३ ॥
श्रिणीभुवोऽनुपसर्गे ॥ ३,३.२४ ॥
वौ क्षुश्रुवः ॥ ३,३.२५ ॥
अवोदोर्नियः ॥ ३,३.२६ ॥
प्रे द्रुस्तुस्रुवः ॥ ३,३.२७ ॥
निरभ्योः पूल्वोः ॥ ३,३.२८ ॥
उन्न्योर्ग्रः ॥ ३,३.२९ ॥
कॄ धान्ये ॥ ३,३.३० ॥
यज्ञे समि स्तुवः ॥ ३,३.३१ ॥
प्रे स्त्रोऽयज्ञे ॥ ३,३.३२ ॥
प्रथने वावशब्दे ॥ ३,३.३३ ॥
छन्दोनाम्नि च ॥ ३,३.३४ ॥
उदि ग्रहः ॥ ३,३.३५ ॥
समि मुष्टौ ॥ ३,३.३६ ॥
परिन्योर्नीणोर्द्यूताभ्रेषयोः ॥ ३,३.३७ ॥
परावनुपात्यय इणः ॥ ३,३.३८ ॥

व्युपयोः शेतेः पर्याये ॥ ३,३.३९ ॥
हस्तादाने चेरस्तेये ॥ ३,३.४० ॥
निवासचितिशरीरोपसमाधानेष्वादेश्च कः ॥ ३,३.४१ ॥
सङ्घे चानौत्तराधर्ये ॥ ३,३.४२ ॥
कर्मव्यतिहारे णच्स्त्रियाम् ॥ ३,३.४३ ॥
अभिविधौ भाव इनुण् ॥ ३,३.४४ ॥
आक्रोशेऽवन्योर्ग्रहः ॥ ३,३.४५ ॥
प्रे लिप्सायाम् ॥ ३,३.४६ ॥
परौ यज्ञे ॥ ३,३.४७ ॥
नौ वृ धान्ये ॥ ३,३.४८ ॥
उदि श्रयतियौतिपूद्रुवः ॥ ३,३.४९ ॥
विभाषा+आङि रुप्लुवोः ॥ ३,३.५० ॥
अवे ग्रहो वर्षप्रतिबन्धे ॥ ३,३.५१ ॥
प्रे वणिजाम् ॥ ३,३.५२ ॥
रश्मौ च ॥ ३,३.५३ ॥
वृणोतेराच्छादने ॥ ३,३.५४ ॥
प्रौ भुवोऽवज्ञाने ॥ ३,३.५५ ॥
एरच् ॥ ३,३.५६ ॥
ॠदोरप् ॥ ३,३.५७ ॥
ग्रहवृदृनिश्चिगमश्च ॥ ३,३.५८ ॥
उपसर्गेऽदः ॥ ३,३.५९ ॥
नौ ण च ॥ ३,३.६० ॥
व्यधजपोरनुपसर्गे ॥ ३,३.६१ ॥
स्वनहसोर्वा ॥ ३,३.६२ ॥
यमः समुपनिविषु च ॥ ३,३.६३ ॥
नौ गदनदपठस्वनः ॥ ३,३.६४ ॥
क्वणो वीणायां च ॥ ३,३.६५ ॥
नित्यं पणः परिमाणे ॥ ३,३.६६ ॥
मदोऽनुपसर्गे ॥ ३,३.६७ ॥
प्रमदसम्मदौ हर्षे ॥ ३,३.६८ ॥
समुदोरजः पशुषु ॥ ३,३.६९ ॥
अक्षेषु ग्लहः ॥ ३,३.७० ॥
प्रजने सर्तेः ॥ ३,३.७१ ॥
ह्वः सम्प्रसारणं च न्यभ्युपविषु ॥ ३,३.७२ ॥
आङि युद्धे ॥ ३,३.७३ ॥
निपानमाहावः ॥ ३,३.७४ ॥
भावेऽनुपसर्गस्य ॥ ३,३.७५ ॥
हनश्च वधः ॥ ३,३.७६ ॥
मूर्तौ घनः ॥ ३,३.७७ ॥
अन्तर्घनो देशे ॥ ३,३.७८ ॥
अगारैकदेशे प्रघणः प्रघाणाश्च ॥ ३,३.७९ ॥
उद्घनोऽत्याधानम् ॥ ३,३.८० ॥
अपघनोऽङ्गम् ॥ ३,३.८१ ॥
करणेऽयोविद्रुषु ॥ ३,३.८२ ॥
स्तम्बे क च ॥ ३,३.८३ ॥
परौ घः ॥ ३,३.८४ ॥
उपघ्न आश्रये ॥ ३,३.८५ ॥

सङ्घोद्घौ गणप्रशंसयोः ॥ ३,३.८६ ॥
निघो निमितम् ॥ ३,३.८७ ॥
ड्वितः क्त्रिः ॥ ३,३.८८ ॥
ट्वितोऽथुच् ॥ ३,३.८९ ॥
यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो नङ् ॥ ३,३.९० ॥
स्वपो नन् ॥ ३,३.९१ ॥
उपसर्गे घोः किः ॥ ३,३.९२ ॥
कर्मण्यधिकरणे च ॥ ३,३.९३ ॥
स्त्रियां क्तिन् ॥ ३,३.९४ ॥
स्थागापापचो भावे ॥ ३,३.९५ ॥
मन्त्रे वृषेषपचमनविदभूवीरा उदात्तः ॥ ३,३.९६ ॥
ऊतियूतिजूतिसातिहेतिकीर्तयश्च ॥ ३,३.९७ ॥
व्रजयजोभावे क्यप् ॥ ३,३.९८ ॥
सञ्ज्ञायां समजनिषदनिपतमनविदषुञ्शीङ्भृञिणः ॥ ३,३.९९ ॥
कृञः श च ॥ ३,३.१०० ॥
इच्छ्या ॥ ३,३.१०१ ॥
अ प्रत्ययात् ॥ ३,३.१०२ ॥
गुरोश्च हलः ॥ ३,३.१०३ ॥
षिद्भिदादिभ्योऽङ् ॥ ३,३.१०४ ॥
चिन्तिपूजिकथिकुम्बिचर्चश्च ॥ ३,३.१०५ ॥
आतश्च+उपसर्गे ॥ ३,३.१०६ ॥
ण्यासश्रन्थो युच् ॥ ३,३.१०७ ॥
रोगाख्यायं ण्वुल्बहुलम् ॥ ३,३.१०८ ॥
सञ्ज्ञायाम् ॥ ३,३.१०९ ॥
विभाषख्यानपरिप्रश्नयोरिञ्च ॥ ३,३.११० ॥
पर्यायार्हर्णोत्पत्तिषु ण्वुच् ॥ ३,३.१११ ॥
आक्रोशे नञ्यतिः ॥ ३,३.११२ ॥
कृत्यल्युटो बहुलम् ॥ ३,३.११३ ॥
नपुंसके भावे क्तः ॥ ३,३.११४ ॥
ल्युट्च ॥ ३,३.११५ ॥
कर्मणि च येन संस्पर्शात्कर्तुः शरीरसुखम् ॥ ३,३.११६ ॥
करणाधिकरणयोश्च ॥ ३,३.११७ ॥
पुंसि सञ्ज्ञायां घः प्रायेण ॥ ३,३.११८ ॥
गोचरसञ्चरवहव्रजव्यजापणनिगमाश्च ॥ ३,३.११९ ॥
अवे तृस्त्रोर्घञ् ॥ ३,३.१२० ॥
हलश्च ॥ ३,३.१२१ ॥
अध्यायन्यायोद्यावसंहाराधारावायाश्च ॥ ३,३.१२२ ॥
उदङ्कोऽनुदके ॥ ३,३.१२३ ॥
जालमानायः ॥ ३,३.१२४ ॥
खनो घ च ॥ ३,३.१२५ ॥
ईषद्दुःसुषु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल् ॥ ३,३.१२६ ॥
कर्तृकर्मणोश्च भूकृञोः ॥ ३,३.१२७ ॥
आतो युच् ॥ ३,३.१२८ ॥
छन्दसि गत्यर्थेभ्यः ॥ ३,३.१२९ ॥
अन्येभ्योऽपि दृश्यते ॥ ३,३.१३० ॥
वर्तमानसामीप्ये वर्तमानवद्वा ॥ ३,३.१३१ ॥
आशंसायां भूतवच्च ॥ ३,३.१३२ ॥

क्षिप्रवचने लृट् ॥ ३,३.१३३ ॥
आशंसावचने लिङ् ॥ ३,३.१३४ ॥
नानद्यतनवत्क्रियाप्रबन्धसामीप्ययोः ॥ ३,३.१३५ ॥
भविष्यति मर्यादावचनेऽवरस्मिन् ॥ ३,३.१३६ ॥
कालविभागे चानहोरात्राणाम् ॥ ३,३.१३७ ॥
परस्मिन् विभाषा ॥ ३,३.१३८ ॥
लिङ्निमित्ते लृङ्क्रियातिपत्तौ ॥ ३,३.१३९ ॥
भूते च ॥ ३,३.१४० ॥
वोताप्योः ॥ ३,३.१४१ ॥
गर्हायां लडपिजात्वोः ॥ ३,३.१४२ ॥
विभाष कथमि लिङ्च ॥ ३,३.१४३ ॥
किंवृत्ते लिङ्लृटौ ॥ ३,३.१४४ ॥
अनवक्लृप्त्यमर्षयोरकिंवृत्तेऽपि ॥ ३,३.१४५ ॥
किंकिलास्त्यर्थेषु लृट् ॥ ३,३.१४६ ॥
जातुयदोर्लिङ् ॥ ३,३.१४७ ॥
यच्चयत्रयोः ॥ ३,३.१४८ ॥
गर्हायां च ॥ ३,३.१४९ ॥
चित्रीकरणे च ॥ ३,३.१५० ॥
शेषे लृडयदौ ॥ ३,३.१५१ ॥
उताप्योः समर्थयोर्लिङ् ॥ ३,३.१५२ ॥
कामप्रवेदनेऽकच्चिति ॥ ३,३.१५३ ॥
सम्भावनेऽलमिति चेत्सिद्धाप्रयोगे ॥ ३,३.१५४ ॥
विभाषा धातौ सम्भावनवचनेऽयदि ॥ ३,३.१५५ ॥
हेतुहेतुमतोर्लिङ् ॥ ३,३.१५६ ॥
इच्छार्थेषु लिङ्लोटौ ॥ ३,३.१५७ ॥
समानकर्तृकेषु तुमुन् ॥ ३,३.१५८ ॥
लिङ्च ॥ ३,३.१५९ ॥
इच्छार्थेभ्यो विभाषा वर्तमाने ॥ ३,३.१६० ॥
विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु लिङ् ॥ ३,३.१६१ ॥
लोट्च ॥ ३,३.१६२ ॥
प्रैषातिसर्गप्राप्तकालेषु कत्र्त्याश्च ॥ ३,३.१६३ ॥
लिङ्च+ऊर्ध्वमौहूर्तिके ॥ ३,३.१६४ ॥
स्मे लोट् ॥ ३,३.१६५ ॥
अधीष्टे च ॥ ३,३.१६६ ॥
कालसमयवेलासु तुमुन् ॥ ३,३.१६७ ॥
लिङ्यदि ॥ ३,३.१६८ ॥
अर्हे कृत्यतृचश्च ॥ ३,३.१६९ ॥
आवश्यकाधमर्ण्ययोर्णिनिः ॥ ३,३.१७० ॥
कृत्याश्च ॥ ३,३.१७१ ॥
शकि लिङ्च ॥ ३,३.१७२ ॥
आशिषि लिङ्लोटौ ॥ ३,३.१७३ ॥
क्तिच्क्तौ च सञ्ज्ञायाम् ॥ ३,३.१७४ ॥
माङि लुङ् ॥ ३,३.१७५ ॥
स्मोत्तरे लङ्च ॥ ३,३.१७६ ॥

धातुसम्बन्धे प्रत्ययाः ॥ ३,४.१ ॥
क्रियासमभिहारे लोट्लोटो हिस्वौ वा च तध्वमोः ॥ ३,४.२ ॥

सयुच्चयेऽन्यतरस्याम् ॥ ३,४.३ ॥
यथाविध्यनुप्रयोगः पूर्वस्मिन् ॥ ३,४.४ ॥
समुच्चये सामान्यवचनस्य ॥ ३,४.५ ॥
छन्दसि लुङ्लङ्लिटः ॥ ३,४.६ ॥
लिङर्थे लेट् ॥ ३,४.७ ॥
उपसंवादाशङ्कयोश्च ॥ ३,४.८ ॥
तुमर्थे सेसेनसेसेन्क्षेकसेनध्ययध्यैन्कध्यैकध्यैन्शध्यैशध्यैन्तवैतवेङ्तवेनः ॥ ३,४.९ ॥
प्रयै रोहिष्यै अव्यथिष्यै ॥ ३,४.१० ॥
दृशे विख्ये च ॥ ३,४.११ ॥
शकि णमुल्कमुलौ ॥ ३,४.१२ ॥
ईश्वरे तोसुन्कसुनौ ॥ ३,४.१३ ॥
कृत्यार्थे तवैकेन्केन्यत्वनः ॥ ३,४.१४ ॥
अवचक्षे च ॥ ३,४.१५ ॥
भावलक्षने स्थेण्कृञ्वदिचरिहुतमिजनिभ्यस्तोसुन् ॥ ३,४.१६ ॥
सृपितृदोः कसुन् ॥ ३,४.१७ ॥
अलंखल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां क्त्वा ॥ ३,४.१८ ॥
उदीचां माङो व्यतीहारे ॥ ३,४.१९ ॥
परावरयोगे च ॥ ३,४.२० ॥
समानकर्तृकयोः पूर्वकाले ॥ ३,४.२१ ॥
आभीक्ष्ण्ये णमुल्च ॥ ३,४.२२ ॥
न यद्यनाकाङ्क्षे ॥ ३,४.२३ ॥
विभाषाऽग्रे प्रथमपूर्वेषु ॥ ३,४.२४ ॥
कर्मण्याक्रोशे कृञः खमुञ् ॥ ३,४.२५ ॥
स्वादुमि णमुल् ॥ ३,४.२६ ॥
अन्यथैवंकथमित्थंसु सिद्धाप्रयोगश्चेत् ॥ ३,४.२७ ॥
यथातथयोरसूयाप्रतिवचने ॥ ३,४.२८ ॥
कर्मणि दृशिविदोः साकल्ये ॥ ३,४.२९ ॥
यावति विन्दजीवोः ॥ ३,४.३० ॥
चर्मोदरयोः पूरेः ॥ ३,४.३१ ॥
वर्षप्रमाण ऊलोपश्चास्यान्यत्रस्याम् ॥ ३,४.३२ ॥
चेले क्नोपेः ॥ ३,४.३३ ॥
निमूलसमूलयोः कषः ॥ ३,४.३४ ॥
शुष्कचूर्णरूक्षेषु पिषः ॥ ३,४.३५ ॥
समूलाकृतजीवेषु हन्कृञ्ग्रहः ॥ ३,४.३६ ॥
करणे हनः ॥ ३,४.३७ ॥
स्नेहने पिषः ॥ ३,४.३८ ॥
हस्ते वर्तिग्रहोः ॥ ३,४.३९ ॥
स्वे पुषः ॥ ३,४.४० ॥
अधिकरणे वन्धः ॥ ३,४.४१ ॥
सञ्ज्ञायाम् ॥ ३,४.४२ ॥
कर्त्रोर्जीवपुरुषयोर्नशिवहोः ॥ ३,४.४३ ॥
ऊर्ध्वे शुषिपूरोः ॥ ३,४.४४ ॥
उपमाने कर्मणि च ॥ ३,४.४५ ॥
कषादिषु यथाविध्यनुप्रयोगः ॥ ३,४.४६ ॥
उपदंशस्तृतीयायाम् ॥ ३,४.४७ ॥
हिंसार्थानां च समानकर्मकाणाम् ॥ ३,४.४८ ॥
सप्तम्यां च+उपपीडरुधकर्षः ॥ ३,४.४९ ॥

समासत्तौ ॥ ३,४.५० ॥
प्रमाणे च ॥ ३,४.५१ ॥
अपादाने परीप्सायाम् ॥ ३,४.५२ ॥
द्वितियायां च ॥ ३,४.५३ ॥
स्वाङ्गेऽध्रुवे ॥ ३,४.५४ ॥
परिक्लिश्यमाने च ॥ ३,४.५५ ॥
विशिपतिपदिस्कन्दां व्याप्यमानासेव्यमानयोः ॥ ३,४.५६ ॥
अस्यतितृषोः क्रियान्तरे कालेषु ॥ ३,४.५७ ॥
नाम्न्यादिशिग्रहोः ॥ ३,४.५८ ॥
अव्ययेऽयथाभिप्रेताख्याने कृञः क्त्वाणमुलौ ॥ ३,४.५९ ॥
तिर्यच्यपवर्गे ॥ ३,४.६० ॥
स्वाङ्गे तस्प्रत्यये कृभ्वोः ॥ ३,४.६१ ॥
नाधार्थप्रत्यये च्व्यर्थे ॥ ३,४.६२ ॥
तूष्णीमि भुवः ॥ ३,४.६३ ॥
अन्वच्यानुलोम्ये ॥ ३,४.६४ ॥
शकधृषज्ञाग्लाघटरभलभक्रमसहार्हास्त्यर्थेषु तुमुन् ॥ ३,४.६५ ॥
पर्याप्तिवचनेष्वलमर्थेषु ॥ ३,४.६६ ॥
कर्तरि कृत् ॥ ३,४.६७ ॥
भव्यगेयप्रवचनीयोपस्थानीयजन्याप्लाव्यापात्या वा ॥ ३,४.६८ ॥
लः कर्मणि च भावे चाक्रमकेभ्यः ॥ ३,४.६९ ॥
तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः ॥ ३,४.७० ॥
आदिकर्मणि क्तः कर्तरि च ॥ ३,४.७१ ॥
गत्यर्थाक्रमकश्लिषशीङ्स्थासवसजनरुहजीर्यतिभ्यश्च ॥ ३,४.७२ ॥
दाशगोघ्नौ सम्प्रदाने ॥ ३,४.७३ ॥
भीमादयोऽपादाने ॥ ३,४.७४ ॥
ताभ्यामन्यत्रोणादयः ॥ ३,४.७५ ॥
क्तोऽधिकरणे च ध्रौव्यगतिप्रत्यवसानार्थेभ्यः ॥ ३,४.७६ ॥
लस्य ॥ ३,४.७७ ॥
तिप्तस्झिसिप्थस्थमिब्वस्मस्तातांझथासाथाम्ध्वमिड्वहिमहिङ् ॥ ३,४.७८ ॥
टित आत्मनेपदानां टेरे ॥ ३,४.७९ ॥
थासः से ॥ ३,४.८० ॥
लिटस्तझयोरेशिरेच् ॥ ३,४.८१ ॥
परस्मैपदानां णलतुसुस्थल्थुसणल्वमाः ॥ ३,४.८२ ॥
विदो लटो वा ॥ ३,४.८३ ॥
ब्रुवः पञ्चानामादित आहो ब्रुवः ॥ ३,४.८४ ॥
लोटो लङ्वत् ॥ ३,४.८५ ॥
एरुः ॥ ३,४.८६ ॥
सेर्ह्यपिच्च ॥ ३,४.८७ ॥
वा छन्दसि ॥ ३,४.८८ ॥
मेर्निः ॥ ३,४.८९ ॥
आमेतः ॥ ३,४.९० ॥
सवाभ्यां वामौ ॥ ३,४.९१ ॥
आडुत्तमस्य पिच्च ॥ ३,४.९२ ॥
एताइ ॥ ३,४.९३ ॥
लेटोऽडाटौ ॥ ३,४.९४ ॥
आताइ ॥ ३,४.९५ ॥
वैतोऽन्यत्र ॥ ३,४.९६ ॥

इतश्च लोपः परस्मैपदेसु ॥ ३,४.९७ ॥
स उत्तमस्य ॥ ३,४.९८ ॥
नित्यं ङितः ॥ ३,४.९९ ॥
इतश्च ॥ ३,४.१०० ॥
तस्थस्थमिपां तांतंतामः ॥ ३,४.१०१ ॥
लिङः सीयुट् ॥ ३,४.१०२ ॥
यासुट्परस्मैपदेसु उदात्तो ङिच्च ॥ ३,४.१०३ ॥
किदाशिसि ॥ ३,४.१०४ ॥
झस्य रन् ॥ ३,४.१०५ ॥
इटोऽत् ॥ ३,४.१०६ ॥
सुट्तिथोः ॥ ३,४.१०७ ॥
झेर्जुस् ॥ ३,४.१०८ ॥
सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च ॥ ३,४.१०९ ॥
आतः ॥ ३,४.११० ॥
लङः शाकटायनस्य+एव ॥ ३,४.१११ ॥
द्विषश्च ॥ ३,४.११२ ॥
तिङशित्सार्वधातुकम् ॥ ३,४.११३ ॥
आर्धधातुकं शेषः ॥ ३,४.११४ ॥
लिट्च ॥ ३,४.११५ ॥
लिङाशिषि ॥ ३,४.११६ ॥
छन्दस्युभयथा ॥ ३,४.११७ ॥

ङ्याप्प्रातिपदिकात् ॥ ४,१.१ ॥
स्वौजसमौट्छष्टाभ्यांभिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्यांभ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् ॥ ४,१.२ ॥
स्त्रियाम् ॥ ४,१.३ ॥
अजाद्यतष्टाप् ॥ ४,१.४ ॥
ऋन्नेभ्यो ङीप् ॥ ४,१.५ ॥
उगितश्च ॥ ४,१.६ ॥
वनो र च ॥ ४,१.७ ॥
पादोऽन्यतरस्याम् ॥ ४,१.८ ॥
टाबृचि ॥ ४,१.९ ॥
न षट्स्वस्रादिभ्यः ॥ ४,१.१० ॥
मनः ॥ ४,१.११ ॥
अनो बहुव्रीहेः ॥ ४,१.१२ ॥
डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम् ॥ ४,१.१३ ॥
अनुपसर्जनात् ॥ ४,१.१४ ॥
टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरप्ख्युनाम् ॥ ४,१.१५ ॥
यञश्च ॥ ४,१.१६ ॥
प्राचां ष्फ तद्धितः ॥ ४,१.१७ ॥
सर्वत्र लोहितादिकतन्तेभ्यः ॥ ४,१.१८ ॥
कौरव्यमाण्डूकाभ्यां च ॥ ४,१.१९ ॥
वयसि प्रथमे ॥ ४,१.२० ॥
द्विगोः ॥ ४,१.२१ ॥
अपरिमाणबिस्ताचितकम्बल्येभ्यो न तद्धितलुकि ॥ ४,१.२२ ॥
काण्डान्तात्क्षेत्रे ॥ ४,१.२३ ॥
पुरुषात्प्रमाणेऽन्यतरस्याम् ॥ ४,१.२४ ॥

बहुव्रीहेरूधसो ङीष् ॥ ४,१.२५ ॥
सङ्ख्याव्ययादेर्ङीप् ॥ ४,१.२६ ॥
दामहायनान्ताच्च ॥ ४,१.२७ ॥
अन उपधालोपिनोऽन्यतरस्याम् ॥ ४,१.२८ ॥
नित्यं सञ्ज्ञाछन्दसोः ॥ ४,१.२९ ॥
केवलमामकभागधेयपापापरसमानार्यकृतसुमङ्गलभेषजाच्च ॥ ४,१.३० ॥
रात्रेश्चाजसौ ॥ ४,१.३१ ॥
अन्तर्वत्पतिवतोर्नुक् ॥ ४,१.३२ ॥
पत्युर्नो यज्ञसंयोगे ॥ ४,१.३३ ॥
विभाषा सपूर्वस्य ॥ ४,१.३४ ॥
नित्यं सपत्न्यादिषु ॥ ४,१.३५ ॥
पूतक्रतोरै च ॥ ४,१.३६ ॥
वृषाकप्यग्निकुसितकुसिदानामुदात्तः ॥ ४,१.३७ ॥
मनोरौ वा ॥ ४,१.३८ ॥
वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः ॥ ४,१.३९ ॥
अन्यतो ङीष् ॥ ४,१.४० ॥
षिद्गौरादिभ्यश्च ॥ ४,१.४१ ॥
जानपदकुण्डगोणस्थलभाजनागकालनीलकुशकामुककबराद्वृत्त्यमत्रावपनाकृत्रिमाश्राणास्थौल्यवर्णानाच्छादनायोविकारमैथुनेच्छाकेशवेशेषु ॥ ४,१.४२ ॥
शोणात्प्राचाम् ॥ ४,१.४३ ॥
वा+उतो गुणवचनात् ॥ ४,१.४४ ॥
बह्वादिभ्यश्च ॥ ४,१.४५ ॥
नित्यं छन्दसि ॥ ४,१.४६ ॥
भुवश्च ॥ ४,१.४७ ॥
पुंयोगादाख्यायाम् ॥ ४,१.४८ ॥
इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणामानुक् ॥ ४,१.४९ ॥
क्रीतात्करणपूर्वात् ॥ ४,१.५० ॥
क्तादल्पाअख्यायाम् ॥ ४,१.५१ ॥
बहुव्रीहेश्चान्तोदत्तात् ॥ ४,१.५२ ॥
अस्वाङ्गपूर्वपदाद्वा ॥ ४,१.५३ ॥
स्वाङ्गाच्च+उपसर्जनादसंयोगोपधात् ॥ ४,१.५४ ॥
नासिकोदरौष्ठजङ्घादन्तकर्णशृङ्गाच्च ॥ ४,१.५५ ॥
न क्रोडादिबह्वचः ॥ ४,१.५६ ॥
सहनञ्विद्यमानपूर्वाच्च ॥ ४,१.५७ ॥
नखमुखात्सञ्ज्ञायाम् ॥ ४,१.५८ ॥
दीर्घजिह्वी च च्छन्दसि ॥ ४,१.५९ ॥
दिक्पूर्वपदान् ङीप् ॥ ४,१.६० ॥
वाहः ॥ ४,१.६१ ॥
सख्यशिष्वी इति भाषायाम् ॥ ४,१.६२ ॥
जातेरस्त्रीविषयादयोपधात् ॥ ४,१.६३ ॥
पाककर्णपर्णपुष्पफलमूलवालोत्तरपदाच्च ॥ ४,१.६४ ॥
इतो मनुस्यजातेः ॥ ४,१.६५ ॥
ऊङुतः ॥ ४,१.६६ ॥
बाह्वन्तात्सञ्ज्ञायाम् ॥ ४,१.६७ ॥
पङ्गोश्च ॥ ४,१.६८ ॥
ऊरूत्तरपदादौपम्ये ॥ ४,१.६९ ॥
संहितशफलक्षणवामादेश्च ॥ ४,१.७० ॥

कद्रुकमण्डल्वोश्छन्दसि ॥ ४,१.७१ ॥
सञ्ज्ञायाम् ॥ ४,१.७२ ॥
शाङ्गरवाद्यञो ङीन् ॥ ४,१.७३ ॥
यङश्चाप् ॥ ४,१.७४ ॥
आवट्याच्च ॥ ४,१.७५ ॥
तद्धिताः ॥ ४,१.७६ ॥
यूनस्तिः ॥ ४,१.७७ ॥
अणिञोरनार्षयोर्गुरूपोत्तमयोः ष्यङ्गोत्रे ॥ ४,१.७८ ॥
गोत्रावयवात् ॥ ४,१.७९ ॥
क्रौड्यादिभ्यश्च ॥ ४,१.८० ॥
दैवयज्ञिशौचिवृक्षिसात्यमुग्रिकाण्ठेविद्धिभ्योऽन्यतरस्याम् ॥ ४,१.८१ ॥
समर्थानां प्रथमाद्वा ॥ ४,१.८२ ॥
प्राग्दीव्यतोऽण् ॥ ४,१.८३ ॥
अश्वपत्यादिभ्यश्च ॥ ४,१.८४ ॥
दित्यदित्यादित्यपत्युत्तरपदाण्ण्यः ॥ ४,१.८५ ॥
उत्सादिभ्योऽञ् ॥ ४,१.८६ ॥
स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ भवनात् ॥ ४,१.८७ ॥
द्विगोर्लुगनपत्ये ॥ ४,१.८८ ॥
गोत्रेऽलुगचि ॥ ४,१.८९ ॥
यूनि लुक् ॥ ४,१.९० ॥
फक्फिञोरन्यतरस्याम् ॥ ४,१.९१ ॥
तस्यापत्यम् ॥ ४,१.९२ ॥
एको गोत्रे ॥ ४,१.९३ ॥
गोत्राद्यून्यस्त्रियां ॥ ४,१.९४ ॥
अत इञ् ॥ ४,१.९५ ॥
बाह्वादिभ्यश्च ॥ ४,१.९६ ॥
सुधातुरकङ्च ॥ ४,१.९७ ॥
गोत्रे कुञ्जादिभ्यश्च्फञ् ॥ ४,१.९८ ॥
नडादिभ्यः फक् ॥ ४,१.९९ ॥
हरितादिभ्योऽञः ॥ ४,१.१०० ॥
यञिञोश्च ॥ ४,१.१०१ ॥
शरद्वच्छुनकदर्भाद्भृगुवत्साग्रायणेषु ॥ ४,१.१०२ ॥
द्रोणपर्वतजीवन्तादन्यतरस्याम् ॥ ४,१.१०३ ॥
अनृष्यानन्तर्ये बिदादिभ्योऽञ् ॥ ४,१.१०४ ॥
गर्गादिभ्यो यञ् ॥ ४,१.१०५ ॥
मधुबभ्र्वोर्ब्राह्मणकौशिकयोः ॥ ४,१.१०६ ॥
कपिबोधादाङ्गिरसे ॥ ४,१.१०७ ॥
वतण्डाच्च ॥ ४,१.१०८ ॥
लुक्स्त्रियाम् ॥ ४,१.१०९ ॥
अश्वादिभ्यः फञ् ॥ ४,१.११० ॥
भर्गात्त्रैगर्ते ॥ ४,१.१११ ॥
शिवादिभ्योऽण् ॥ ४,१.११२ ॥
अवृद्धाभ्यो नदीमानुषीभ्यस्तन्नामिकाभ्यः ॥ ४,१.११३ ॥
ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च ॥ ४,१.११४ ॥
मातुरुत्सङ्ख्यासंभद्रपूर्वायाः ॥ ४,१.११५ ॥
कन्यायाः कनीन च ॥ ४,१.११६ ॥
विकर्णशुङ्गछङ्गलाद्वत्सभरद्वाजात्रिषु ॥ ४,१.११७ ॥

पीलाया वा ॥ ४,१.११८ ॥
ठक्च मण्डूकात् ॥ ४,१.११९ ॥
स्त्रीभ्यो ढक् ॥ ४,१.१२० ॥
द्व्यचः ॥ ४,१.१२१ ॥
इतश्चानिञः ॥ ४,१.१२२ ॥
शुभ्रादिभ्यश्च ॥ ४,१.१२३ ॥
विकर्णकुषीतकात्काश्यपे ॥ ४,१.१२४ ॥
भ्रुवो वुक्च ॥ ४,१.१२५ ॥
कल्याण्यादीनामिनङ् ॥ ४,१.१२६ ॥
कुलटाया ॥ ४,१.१२७ ॥
चटकाया ऐरक् ॥ ४,१.१२८ ॥
गोधाया ढ्रक् ॥ ४,१.१२९ ॥
आरगुदीचाम् ॥ ४,१.१३० ॥
क्षुद्राभ्यो वा ॥ ४,१.१३१ ॥
पितृष्वसुश्छण् ॥ ४,१.१३२ ॥
ठकि लोपः ॥ ४,१.१३३ ॥
मातृष्वसुश्च ॥ ४,१.१३४ ॥
चतुष्पाद्भ्यो ढञ् ॥ ४,१.१३५ ॥
गृष्ट्यादिभ्यश्च ॥ ४,१.१३६ ॥
राजश्वशुराद्यत् ॥ ४,१.१३७ ॥
क्षत्राद्घः ॥ ४,१.१३८ ॥
कुलात्खः ॥ ४,१.१३९ ॥
अपूर्वपदादन्यतरस्यां यड्ढकञौ ॥ ४,१.१४० ॥
महाकुलादञ्खञौ ॥ ४,१.१४१ ॥
दुष्कुलाड्ढक् ॥ ४,१.१४२ ॥
स्वसुश्छः ॥ ४,१.१४३ ॥
भ्रातुर्व्यच्च ॥ ४,१.१४४ ॥
व्यन् सपत्ने ॥ ४,१.१४५ ॥
रेवत्यादिभ्यष्ठक् ॥ ४,१.१४६ ॥
गोत्रस्त्रियाः कुत्सने ण च ॥ ४,१.१४७ ॥
वृद्धाट्ठक्सौवीरेषु बहुलम् ॥ ४,१.१४८ ॥
फेश्छ च ॥ ४,१.१४९ ॥
फाण्डाहृतिमिमताभ्यां णफिञौ ॥ ४,१.१५० ॥
कुर्वादिभ्यो ण्यः ॥ ४,१.१५१ ॥
सेनान्तलक्षणकारिभ्यश्च ॥ ४,१.१५२ ॥
उदीचामिञ् ॥ ४,१.१५३ ॥
तिकादिभ्यः फिञ् ॥ ४,१.१५४ ॥
कौशल्यकार्मार्याभ्यां च ॥ ४,१.१५५ ॥
अणो द्व्यचः ॥ ४,१.१५६ ॥
उदीचां वृद्धादगोत्रात् ॥ ४,१.१५७ ॥
वाकिनादीनां कुक्च ॥ ४,१.१५८ ॥
पुत्रान्तादन्यतरस्याम् ॥ ४,१.१५९ ॥
प्राचामवृद्धात्फिन् बहुलम् ॥ ४,१.१६० ॥
मनोर्जातावञ्यतौ षुक्च ॥ ४,१.१६१ ॥
अपत्येअं पौत्रप्रभृति गोत्रम् ॥ ४,१.१६२ ॥
जीवति तु वंश्ये युवा ॥ ४,१.१६३ ॥
भ्रातरि च ज्यायसि ॥ ४,१.१६४ ॥

वा अन्यस्मिन् सपिण्डे स्थविरतरे जिवति ॥ ४,१.१६५ ॥
वृद्धस्य च पूजायाम् ॥ ४,१.१६६ ॥
यूनश्च कुत्सायाम् ॥ ४,१.१६७ ॥
जनपदशब्दात्क्षत्रियादञ् ॥ ४,१.१६८ ॥
साल्वेयगान्धारिभ्यां च ॥ ४,१.१६९ ॥
द्व्यञ्मगधकलिङ्गसूरमसादण् ॥ ४,१.१७० ॥
वृद्धेत्कोसलाजादाञ्ञ्यङ् ॥ ४,१.१७१ ॥
कुरुनादिभ्यो ण्यः ॥ ४,१.१७२ ॥
साल्वावयवप्रत्यग्रथकलकूटाश्मकादिञ् ॥ ४,१.१७३ ॥
ते तद्राजाः ॥ ४,१.१७४ ॥
कम्बोजाल्लुक् ॥ ४,१.१७५ ॥
स्त्रियामवन्तिकुन्तिकुरुभ्यश्च ॥ ४,१.१७६ ॥
अतश्च ॥ ४,१.१७७ ॥
न प्राच्यभर्गादियौधेयादिभ्यः ॥ ४,१.१७८ ॥

तेन रक्तं रागात् ॥ ४,२.१ ॥
लाक्षारोचनाशकलकर्दमाट्ठक् ॥ ४,२.२ ॥
नक्षत्रेण युक्तं कालः ॥ ४,२.३ ॥
लुबविशेषे ॥ ४,२.४ ॥
सञ्ज्ञायां श्रवणाश्वत्थाभ्याम् ॥ ४,२.५ ॥
द्वन्वाच्छः ॥ ४,२.६ ॥
दृष्टं साम ॥ ४,२.७ ॥
कलेर्ढक् ॥ ४,२.८ ॥
वामदेवाड्ड्यड्ड्यौ ॥ ४,२.९ ॥
परिवृतो रथः ॥ ४,२.१० ॥
पाण्डुकम्बलादिनिः ॥ ४,२.११ ॥
द्वैपवैयाघ्रादञ् ॥ ४,२.१२ ॥
कौमारापूर्ववचने ॥ ४,२.१३ ॥
तत्र+उद्धृतममत्रेभ्यः ॥ ४,२.१४ ॥
स्थण्डिलाच्छयितरि व्रते ॥ ४,२.१५ ॥
संस्कृतं भक्षाः ॥ ४,२.१६ ॥
शूलोखाद्यत् ॥ ४,२.१७ ॥
दध्नष्ठक् ॥ ४,२.१८ ॥
उदश्वितोऽन्यतरस्याम् ॥ ४,२.१९ ॥
क्षीराड्ढञ् ॥ ४,२.२० ॥
साऽस्मिन् पौर्णमासी इति सञ्ज्ञायाम् ॥ ४,२.२१ ॥
आग्रहायण्यश्वत्थाट्ठक् ॥ ४,२.२२ ॥
विभाषा फाल्गुनीश्रवणाकार्तिकीचैत्रीभ्यः ॥ ४,२.२३ ॥
साऽस्य देवता ॥ ४,२.२४ ॥
कस्य+इत् ॥ ४,२.२५ ॥
शुक्राद्घन् ॥ ४,२.२६ ॥
अपोनप्त्रपांनप्तृभ्यां घः ॥ ४,२.२७ ॥
छ च ॥ ४,२.२८ ॥
महेन्द्राद्घाणौ च ॥ ४,२.२९ ॥
सोमाट्ट्यण् ॥ ४,२.३० ॥
वाय्वृतुपित्रुषसो यत् ॥ ४,२.३१ ॥
द्यावापृथिवीशुनासीरमरुत्वदग्नीषोमवास्तोष्पतिगृहमेधाच्छ च ॥ ४,२.३२ ॥

अग्नेर्ढक् ॥ ४,२.३३ ॥
कालेभ्यो भववत् ॥ ४,२.३४ ॥
महाराजप्रोष्ठपदाट्ठञ् ॥ ४,२.३५ ॥
पितृव्यमातुलमातामहपितामहाः ॥ ४,२.३६ ॥
तस्य समूहः ॥ ४,२.३७ ॥
भिक्षादिभ्योऽण् ॥ ४,२.३८ ॥
गोत्रोक्षोष्ट्रोरभ्रराजराजन्यराजपुत्रवत्समनुष्याजाद्वुञ् ॥ ४,२.३९ ॥
केदाराद्यञ्च ॥ ४,२.४० ॥
ठञ्कवचिनश्च ॥ ४,२.४१ ॥
ब्राह्मणमाणववाडवाद्यन् ॥ ४,२.४२ ॥
ग्रामजनबन्धुसहायेभ्यस्तल् ॥ ४,२.४३ ॥
अनुदात्तादेरञ् ॥ ४,२.४४ ॥
खण्डिकादिभ्यश्च ॥ ४,२.४५ ॥
चरणेभ्यो धर्मवत् ॥ ४,२.४६ ॥
अचित्तहस्तिधेनोष्ठक् ॥ ४,२.४७ ॥
केशाश्वाभ्यां यञ्छावन्यतरस्याम् ॥ ४,२.४८ ॥
पाशादिभ्यो यः ॥ ४,२.४९ ॥
खलगोरथात् ॥ ४,२.५० ॥
इनित्रकट्यचश्च ॥ ४,२.५१ ॥
विषयो देशे ॥ ४,२.५२ ॥
राजन्यादिभ्यो वुञ् ॥ ४,२.५३ ॥
भौरिक्याद्यैषुकार्यादिभ्यो विधल्भक्तलौ ॥ ४,२.५४ ॥
सोऽस्यादिरिति च्छन्दसः प्रगाथेषु ॥ ४,२.५५ ॥
सङ्ग्रामे प्रयोजनयोद्धृभ्यः ॥ ४,२.५६ ॥
तदस्यां प्रहरणमिति क्रीडायां णः ॥ ४,२.५७ ॥
घञः सास्यां क्रियेति ञः ॥ ४,२.५८ ॥
तदधीते तद्वेद ॥ ४,२.५९ ॥
क्रतूक्थादिसूत्रान्ताट्ठक् ॥ ४,२.६० ॥
क्रमादिभ्यो वुन् ॥ ४,२.६१ ॥
अनुब्राह्मणादिनिः ॥ ४,२.६२ ॥
वसन्तादिभ्यष्ठक् ॥ ४,२.६३ ॥
प्रोक्ताल्लुक् ॥ ४,२.६४ ॥
सूत्राच्च क+उपधात् ॥ ४,२.६५ ॥
छन्दोब्राहमणानि च तद्विषयाणि ॥ ४,२.६६ ॥
तदस्मिन्नस्ति इति देशे तन्नाम्नि ॥ ४,२.६७ ॥
तेन निर्वृत्तम् ॥ ४,२.६८ ॥
तस्य निवासः ॥ ४,२.६९ ॥
अदूरभवश्च ॥ ४,२.७० ॥
ओरञ् ॥ ४,२.७१ ॥
मतोश्च बह्वजङ्गात् ॥ ४,२.७२ ॥
बह्वचः कूपेषु ॥ ४,२.७३ ॥
उदक्च विपाशः ॥ ४,२.७४ ॥
सङ्कलादिभ्यश्च ॥ ४,२.७५ ॥
स्त्रीषु सौवीरसाल्वप्राक्षु ॥ ४,२.७६ ॥
सुवास्त्वादिभ्योऽण् ॥ ४,२.७७ ॥
रोणी ॥ ४,२.७८ ॥
कोपधाच्च ॥ ४,२.७९ ॥

वुञ्छण्कठजिलसेनिरढ
ण्ययफक्फिफिञिञ्यकक्ठकोऽरीहणकृशाश्वश्र्यकुमुदकाशतृणप्रेक्षाश्मसखिसङ्काशबलपक्षकर्णसु
तङ्गमप्रगदिन्वराहकुमुदादिभ्यः ॥ ४,२.८० ॥
जनपदे लुप् ॥ ४,२.८१ ॥
वरणादिभ्यश्च ॥ ४,२.८२ ॥
शर्कराया वा ॥ ४,२.८३ ॥
ठक्छौ च ॥ ४,२.८४ ॥
नद्यां मतुप् ॥ ४,२.८५ ॥
मध्वादिभ्यश्च ॥ ४,२.८६ ॥
कुमुदनडवेतसेभ्यो ड्मतुप् ॥ ४,२.८७ ॥
नडशादाड्ड्वलच् ॥ ४,२.८८ ॥
शिखाया वलच् ॥ ४,२.८९ ॥
उत्करादिभ्यश्छः ॥ ४,२.९० ॥
नडादीनां कुक्च ॥ ४,२.९१ ॥
शेषे ॥ ४,२.९२ ॥
राष्ट्रावारपाराद्धखौ ॥ ४,२.९३ ॥
राष्ट्रावारपाराद्धखौ ॥ ४,२.९४ ॥
कत्र्यादिभ्यो ढकञ् ॥ ४,२.९५ ॥
कुलकुक्षिग्रीवाभ्यः श्वास्यलङ्कारेषु ॥ ४,२.९६ ॥
नद्यादिभ्यो ढक् ॥ ४,२.९७ ॥
दक्षिणापश्चात्पुरसस्त्यक् ॥ ४,२.९८ ॥
कापिश्याः ष्फक् ॥ ४,२.९९ ॥
रङ्कोरमनुष्येऽण्च ॥ ४,२.१०० ॥
द्युप्रागपागुदक्प्रतीचो यत् ॥ ४,२.१०१ ॥
कन्थायाष्ठक् ॥ ४,२.१०२ ॥
वर्णौ वुक् ॥ ४,२.१०३ ॥
अव्ययात्त्यप् ॥ ४,२.१०४ ॥
ऐषमेओह्यःश्वसोऽन्यतरस्याम् ॥ ४,२.१०५ ॥
तीररूप्योत्तरपदादञ्ञौ ॥ ४,२.१०६ ॥
दिक्पूर्वपदादसञ्ज्ञायां ञः ॥ ४,२.१०७ ॥
मद्रेभ्योऽञ् ॥ ४,२.१०८ ॥
उदीच्यग्रामाच्च बह्वचोऽन्तोदात्तात् ॥ ४,२.१०९ ॥
प्रस्थोत्तरपदपलद्यादिकोपधादण् ॥ ४,२.११० ॥
कण्वादिभ्यो गोत्रे ॥ ४,२.१११ ॥
इञश्च ॥ ४,२.११२ ॥
न द्व्यचः प्राच्यभरतेसु ॥ ४,२.११३ ॥
वृद्धाच्छः ॥ ४,२.११४ ॥
भवतष्ठक्छसौ ॥ ४,२.११५ ॥
काश्यादिभ्यष्ठञ्ञिठौ ॥ ४,२.११६ ॥
वाहीकग्रामेभ्यश्च ॥ ४,२.११७ ॥
विभाषा+उशीनरेषु ॥ ४,२.११८ ॥
ओर्देशे ठञ् ॥ ४,२.११९ ॥
वृद्धत्प्राचाम् ॥ ४,२.१२० ॥
धन्वयोपधाद्वुञ् ॥ ४,२.१२१ ॥
प्रस्थपुरवहान्ताच्च ॥ ४,२.१२२ ॥
रोपधेतोः प्राचाम् ॥ ४,२.१२३ ॥
जनपदतदवध्योश्च ॥ ४,२.१२४ ॥

अवृद्धादपि बहुवचनविषयात् ॥ ४,२.१२५ ॥
कच्छाग्निवक्त्रगर्तोत्तरपदात् ॥ ४,२.१२६ ॥
धूमादिभ्यश्च ॥ ४,२.१२७ ॥
नगरात्कुत्सनप्रावीण्ययोः ॥ ४,२.१२८ ॥
अरण्यान्मनुस्ये ॥ ४,२.१२९ ॥
विभाषा कुरुयुगन्धराभ्याम् ॥ ४,२.१३० ॥
मद्रवृज्योः कन् ॥ ४,२.१३१ ॥
कोपधादण् ॥ ४,२.१३२ ॥
कच्छादिभ्यश्च ॥ ४,२.१३३ ॥
मनुस्यतत्स्थयोर्वुञ् ॥ ४,२.१३४ ॥
अपदातौ साल्वात् ॥ ४,२.१३५ ॥
गोयवग्वोश्च ॥ ४,२.१३६ ॥
गर्तोत्तरपदाच्छः ॥ ४,२.१३७ ॥
गहादिभ्यश्च ॥ ४,२.१३८ ॥
प्राचां कटादेः ॥ ४,२.१३९ ॥
राज्ञः क च ॥ ४,२.१४० ॥
वृद्धादकेकान्तखोपधात् ॥ ४,२.१४१ ॥
कन्थापलदनगरग्रामह्रदोत्तरपदात् ॥ ४,२.१४२ ॥
पर्वताच्च ॥ ४,२.१४३ ॥
विभाषाऽमनुष्ये ॥ ४,२.१४४ ॥
कृकणपर्णाद्भरद्वाजे ॥ ४,२.१४५ ॥

युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ्च ॥ ४,३.१ ॥
तस्मिन्नणि च युष्माकास्माकौ ॥ ४,३.२ ॥
तवकममकावेकवचने ॥ ४,३.३ ॥
अर्धाद्यत् ॥ ४,३.४ ॥
परावराधमोत्तमपूर्वाच्च ॥ ४,३.५ ॥
दिक्पूर्वपदाट्ठञ्च ॥ ४,३.६ ॥
ग्रामजनपद+एकदेशादञ्ठञौ ॥ ४,३.७ ॥
मध्यान्मः ॥ ४,३.८ ॥
अ साम्प्रतिके ॥ ४,३.९ ॥
द्वीपादनुसमुद्रं यञ् ॥ ४,३.१० ॥
कालाट्ठञ् ॥ ४,३.११ ॥
श्राद्धे शरदः ॥ ४,३.१२ ॥
विभाषा रोगातपयोः ॥ ४,३.१३ ॥
निशाप्रदोषाभ्यां च ॥ ४,३.१४ ॥
श्वसस्तुट्च ॥ ४,३.१५ ॥
सन्धिवेलाद्यृतुनक्षत्रेभ्योऽण् ॥ ४,३.१६ ॥
प्रावृष एण्यः ॥ ४,३.१७ ॥
वर्षाभ्यष्ठक् ॥ ४,३.१८ ॥
छन्दसि ठञ् ॥ ४,३.१९ ॥
वसन्ताच्च ॥ ४,३.२० ॥
हेमन्ताच्च ॥ ४,३.२१ ॥
सर्वत्राण्च तलोपश्च ॥ ४,३.२२ ॥
सायंचिरंप्राह्णेप्रगेऽव्ययेभ्यष्ट्युट्युलौ तुट्च ॥ ४,३.२३ ॥
विभाषा पूर्वाह्णापराह्णाभ्याम् ॥ ४,३.२४ ॥
तत्र जातः ॥ ४,३.२५ ॥

प्रावृषष्ठप् ॥ ४,३.२६ ॥
सञ्ज्ञायां शरदो वुञ् ॥ ४,३.२७ ॥
पूर्वाह्णापराह्णार्द्रामूलप्रदोषावस्कराद्वुन् ॥ ४,३.२८ ॥
पथः पन्थ च ॥ ४,३.२९ ॥
अमावास्याया वा ॥ ४,३.३० ॥
अ च ॥ ४,३.३१ ॥
सिन्धवपकराभ्यां कन् ॥ ४,३.३२ ॥
अणञौ च ॥ ४,३.३३ ॥
श्रविष्ठाफल्गुन्यनुराधास्वातितिष्यपुनर्वसुहस्तविशाखाषाढाबहुलाल्लुक् ॥ ४,३.३४ ॥
स्थानान्तगोशालखरशालाच्च ॥ ४,३.३५ ॥
वत्सशालाभिजिदश्वयुक्छतभिषजो वा ॥ ४,३.३६ ॥
नक्षत्रेभ्यो बहुलम् ॥ ४,३.३७ ॥
कृतलब्धक्रीतकुशलाः ॥ ४,३.३८ ॥
प्रायभवः ॥ ४,३.३९ ॥
उपजानूपकर्णोपनीवेष्ठक् ॥ ४,३.४० ॥
सम्भूते ॥ ४,३.४१ ॥
कोशाड्ढञ् ॥ ४,३.४२ ॥
कालात्साधुपुष्प्यत्पच्यमानेषु ॥ ४,३.४३ ॥
उप्ते च ॥ ४,३.४४ ॥
आश्वयुज्या वुञ् ॥ ४,३.४५ ॥
ग्रीष्मवसन्तादन्यतरस्याम् ॥ ४,३.४६ ॥
देयमृणे ॥ ४,३.४७ ॥
कलाप्यश्वत्थयवबुसाद्वुन् ॥ ४,३.४८ ॥
ग्रीष्मावरसमाद्वुञ् ॥ ४,३.४९ ॥
संवत्सराग्रहायणीभ्यां ठञ्च ॥ ४,३.५० ॥
व्याहरति मृगः ॥ ४,३.५१ ॥
तदस्य सोढम् ॥ ४,३.५२ ॥
तत्र भवः ॥ ४,३.५३ ॥
दिगादिभ्यो यत् ॥ ४,३.५४ ॥
शरीरावयवाच्च ॥ ४,३.५५ ॥
दृतिकुक्षिकलशिवस्त्यस्त्यहेर्ढञ् ॥ ४,३.५६ ॥
ग्रीवाभ्योऽण्च ॥ ४,३.५७ ॥
गम्भीराञ्ञ्यः ॥ ४,३.५८ ॥
अव्ययीभावाच्च ॥ ४,३.५९ ॥
अन्तःपूर्वपदाट्ठञ् ॥ ४,३.६० ॥
ग्रामात्पर्यनुपूर्वात् ॥ ४,३.६१ ॥
जिह्वामूलाङ्गुलेश्छः ॥ ४,३.६२ ॥
वर्गान्ताच्च ॥ ४,३.६३ ॥
अशब्दे यत्खावन्यतरस्याम् ॥ ४,३.६४ ॥
कर्णललाटात्कनलङ्कारे ॥ ४,३.६५ ॥
तस्य व्याख्यान इति च व्याख्यातव्यनाम्नः ॥ ४,३.६६ ॥
बह्वचोऽन्तोदात्ताट्ठञ् ॥ ४,३.६७ ॥
क्रतुयज्ञेभ्यश्च ॥ ४,३.६८ ॥
अध्यायेष्वेव र्षेः ॥ ४,३.६९ ॥
पौरोडाशपुरोडाशात्ष्ठन् ॥ ४,३.७० ॥
छन्दसो यदणौ ॥ ४,३.७१ ॥
द्व्यजृद्ब्राह्मणर्क्प्रथमाध्वरपुरश्चरणनामाख्याताट्ठक् ॥ ४,३.७२ ॥

अणृगयनादिभ्यः ॥ ४,३.७३ ॥
तत आगतः ॥ ४,३.७४ ॥
ठगायस्थानेभ्यः ॥ ४,३.७५ ॥
शुण्डिकादिभ्योऽण् ॥ ४,३.७६ ॥
विद्यायोनिसम्बन्धेभ्यो वुञ् ॥ ४,३.७७ ॥
ऋतष्ठञ् ॥ ४,३.७८ ॥
पितुर्यच्च ॥ ४,३.७९ ॥
गोत्रादङ्कवत् ॥ ४,३.८० ॥
हेतुमनुष्येभ्योऽन्यतरस्यां रूप्यः ॥ ४,३.८१ ॥
मयट्च ॥ ४,३.८२ ॥
प्रभवति ॥ ४,३.८३ ॥
विदूराञ्ञ्यः ॥ ४,३.८४ ॥
तद्गच्छति पथिदूतयोः ॥ ४,३.८५ ॥
अभिनिष्क्रामति द्वारम् ॥ ४,३.८६ ॥
अधिकृत्य कृते ग्रन्थे ॥ ४,३.८७ ॥
शिशुक्रन्दयमसभद्वन्द्वेन्द्रजननादिभ्यश्छः ॥ ४,३.८८ ॥
सोऽस्य निवासः ॥ ४,३.८९ ॥
अभिजनश्च ॥ ४,३.९० ॥
आयुधजीविभ्यश्छः पर्वते ॥ ४,३.९१ ॥
शण्दिकादिभ्यो ञ्यः ॥ ४,३.९२ ॥
सिन्धुतक्षशिलादिभ्योऽणञौ ॥ ४,३.९३ ॥
तूदीशलातुरवर्मतीकूचवाराड्ठक्छण्ढञ्यकः ॥ ४,३.९४ ॥
भक्तिः ॥ ४,३.९५ ॥
अचित्तादद्देशकालाट्ठक् ॥ ४,३.९६ ॥
महाराजाट्ठञ् ॥ ४,३.९७ ॥
वासुदेवार्जुनाभ्यां वुन् ॥ ४,३.९८ ॥
गोत्रक्षत्रियाख्येभ्यो बहुलं वुञ् ॥ ४,३.९९ ॥
जनपदिनां जनपदवत्सर्वं जनपदेन समानशब्दानां बहुवचने ॥ ४,३.१०० ॥
तेन प्रोक्तम् ॥ ४,३.१०१ ॥
तित्तिरिवरतन्तुखण्डिकोखाच्छण् ॥ ४,३.१०२ ॥
काश्यपकौशिकाभ्यामृषिभ्यां णिनिः ॥ ४,३.१०३ ॥
कलापिवैशम्पायनान्तेवासिभ्यश्च ॥ ४,३.१०४ ॥
पुराणप्रोक्तेषु ब्राह्मणकल्पेषु ॥ ४,३.१०५ ॥
शौनकादिभ्यश्छन्दसि ॥ ४,३.१०६ ॥
कठचरकाल्लुक् ॥ ४,३.१०७ ॥
कलापिनोऽण् ॥ ४,३.१०८ ॥
छगलिनो ढिनुक् ॥ ४,३.१०९ ॥
पाराशर्यशिलालिभ्यां भिक्षुनटसूत्रयोः ॥ ४,३.११० ॥
कर्मन्दकृशाश्वादिनिः ॥ ४,३.१११ ॥
तेन+एकदिक् ॥ ४,३.११२ ॥
तसिश्च ॥ ४,३.११३ ॥
उरसो यच्च ॥ ४,३.११४ ॥
उपज्ञाते ॥ ४,३.११५ ॥
कृते ग्रन्थे ॥ ४,३.११६ ॥
सञ्ज्ञायाम् ॥ ४,३.११७ ॥
कुलालादिभ्यो वुञ् ॥ ४,३.११८ ॥
क्षुद्राभ्रमरवटरपादपादञ् ॥ ४,३.११९ ॥

तस्य+इदम् ॥ ४,३.१२० ॥
रथाद्यत् ॥ ४,३.१२१ ॥
पत्रपूर्वा दञ् ॥ ४,३.१२२ ॥
पत्राध्वर्युपरिषदश्च ॥ ४,३.१२३ ॥
हलसीराट्ठक् ॥ ४,३.१२४ ॥
द्वन्द्वाद्वुन् वैरमैथुनिकयोः ॥ ४,३.१२५ ॥
गोत्रचरणाद्वुञ् ॥ ४,३.१२६ ॥
सङ्घाङ्कलक्षणेष्वञ्यञिञामण् ॥ ४,३.१२७ ॥
शाकलाद्वा ॥ ४,३.१२८ ॥
छन्दोगाउक्थिकयाज्ञिकबह्वृचनटाञ्ञ्यः ॥ ४,३.१२९ ॥
न दण्डमाणवान्तेवासिषु ॥ ४,३.१३० ॥
रैवतिकादिभ्यश्छः ॥ ४,३.१३१ ॥
कौपिञ्जलहासितपदादण् ॥ ४,३.१३२ ॥
आथर्वणिकस्य+इकलोपश्च ॥ ४,३.१३३ ॥
तस्य विकारः ॥ ४,३.१३४ ॥
अवयवे च प्राण्योषधिवृक्षेभ्यः ॥ ४,३.१३५ ॥
बिल्वादिभ्योऽण् ॥ ४,३.१३६ ॥
कोपाधाच्च ॥ ४,३.१३७ ॥
त्रपुजतुनोः षुक् ॥ ४,३.१३८ ॥
ओरञ् ॥ ४,३.१३९ ॥
अनुदात्तादेश्च ॥ ४,३.१४० ॥
पलाशादिभ्यो वा ॥ ४,३.१४१ ॥
शम्याष्ट्लञ् ॥ ४,३.१४२ ॥
मयड्वआ+एतयोर्भाषायामभक्ष्य आच्छादनयोः ॥ ४,३.१४३ ॥
नित्यं वृद्धशरादिभ्यः ॥ ४,३.१४४ ॥
गोश्च पुरीषे ॥ ४,३.१४५ ॥
पिष्टाच्च ॥ ४,३.१४६ ॥
सञ्ज्ञायां कन् ॥ ४,३.१४७ ॥
व्रीहेः पुरोडाशे ॥ ४,३.१४८ ॥
असञ्ज्ञायां तिलयवाभ्याम् ॥ ४,३.१४९ ॥
द्व्यचश्छन्दसि ॥ ४,३.१५० ॥
न+उत्वद्वर्ध्रबिल्वात् ॥ ४,३.१५१ ॥
तालादिभ्योऽण् ॥ ४,३.१५२ ॥
जातरूपेभ्यः परिमाणे ॥ ४,३.१५३ ॥
प्राणिरजतादिभ्योऽञ् ॥ ४,३.१५४ ॥
ञितश्च तत्प्रत्ययात् ॥ ४,३.१५५ ॥
क्रीतवत्प्रैमाणात् ॥ ४,३.१५६ ॥
उष्ट्राद्वुञ् ॥ ४,३.१५७ ॥
उमोर्णयोर्वा ॥ ४,३.१५८ ॥
एण्या ढञ् ॥ ४,३.१५९ ॥
गोपयसोर्यत् ॥ ४,३.१६० ॥
द्रोश्च ॥ ४,३.१६१ ॥
माने वयः ॥ ४,३.१६२ ॥
फले लुक् ॥ ४,३.१६३ ॥
प्लक्षादिभ्योऽण् ॥ ४,३.१६४ ॥
जम्ब्वा वा ॥ ४,३.१६५ ॥
लुप्च ॥ ४,३.१६६ ॥

हरीतक्यादिभ्य श्च ॥ ४,३.१६७ ॥
कंसीयपरशव्ययोर्यञञौ लुक्च ॥ ४,३.१६८ ॥

प्राग्वहतेष्ठक् ॥ ४,४.१ ॥
तेन दीव्यति खनति जयति जितम् ॥ ४,४.२ ॥
संस्कृतम् ॥ ४,४.३ ॥
कुलत्थकोपधादण् ॥ ४,४.४ ॥
तरति ॥ ४,४.५ ॥
गोपुच्छाट्ठञ् ॥ ४,४.६ ॥
नौद्व्यचष्ठन् ॥ ४,४.७ ॥
परति ॥ ४,४.८ ॥
आकर्षात्ष्ठल् ॥ ४,४.९ ॥
पर्पादिभ्यः ष्ठन् ॥ ४,४.१० ॥
श्वगणाट्ठञ्च ॥ ४,४.११ ॥
वेतनादिभ्यो जीवति ॥ ४,४.१२ ॥
वस्नक्रयविक्रयाट्ठन् ॥ ४,४.१३ ॥
आयुधच्छ च ॥ ४,४.१४ ॥
हरत्युत्सङ्गादिभ्यः ॥ ४,४.१५ ॥
भस्त्रादिभ्यः ष्ठन् ॥ ४,४.१६ ॥
विभाषा विवधवीवधात् ॥ ४,४.१७ ॥
अण्कुटिलिकायाः ॥ ४,४.१८ ॥
निर्वृत्तेऽक्षद्यूतादिभ्यः ॥ ४,४.१९ ॥
त्रेर्म नित्यम् ॥ ४,४.२० ॥
अपमित्ययाचिताभ्यां कक्कनौ ॥ ४,४.२१ ॥
संसृष्टे ॥ ४,४.२२ ॥
चूर्णादिनिः ॥ ४,४.२३ ॥
लवणाल्लुक् ॥ ४,४.२४ ॥
मुद्गादण् ॥ ४,४.२५ ॥
व्यञ्जनैरुपसिक्ते ॥ ४,४.२६ ॥
ओजःसहोऽम्भसा वर्तते ॥ ४,४.२७ ॥
तत्प्रत्यनुपूर्वमीपलोमकूलम् ॥ ४,४.२८ ॥
परिमुखं च ॥ ४,४.२९ ॥
प्रयच्छति गर्ह्यम् ॥ ४,४.३० ॥
कुसीददशैकादशात्ष्ठन्ष्ठचौ ॥ ४,४.३१ ॥
उञ्छति ॥ ४,४.३२ ॥
रक्षति ॥ ४,४.३३ ॥
शब्ददर्दुरं करोति ॥ ४,४.३४ ॥
पक्षिमत्स्यमृगान् हन्ति ॥ ४,४.३५ ॥
परिपन्थं च तिष्ठति ॥ ४,४.३६ ॥
माथोत्तरपदपदव्यनुपदं धावति ॥ ४,४.३७ ॥
आक्रन्दाट्ठञ्च ॥ ४,४.३८ ॥
पदोत्तरपदं गृह्णाति ॥ ४,४.३९ ॥
प्रतिकण्ठार्थललामं च ॥ ४,४.४० ॥
धर्मं चरति ॥ ४,४.४१ ॥
प्रतिपथमेति ठंश्च ॥ ४,४.४२ ॥
समवायान् समवैति ॥ ४,४.४३ ॥
परिषदो ण्यः ॥ ४,४.४४ ॥

सेनाया वा ॥ ४,४.४५ ॥
सञ्ज्ञायां ललाटकुक्कुट्यौ पश्यति ॥ ४,४.४६ ॥
तस्य धर्म्यम् ॥ ४,४.४७ ॥
अण्महिष्यादिभ्यः ॥ ४,४.४८ ॥
ऋतोऽञ् ॥ ४,४.४९ ॥
अवक्रयः ॥ ४,४.५० ॥
तदस्य पण्यम् ॥ ४,४.५१ ॥
लवणाट्ठञ् ॥ ४,४.५२ ॥
किशरादिभ्यः ष्ठन् ॥ ४,४.५३ ॥
शलालुनोऽन्यतरस्याम् ॥ ४,४.५४ ॥
शिल्पम् ॥ ४,४.५५ ॥
मड्डुकझर्झरादणन्यतरस्याम् ॥ ४,४.५६ ॥
प्रहरणम् ॥ ४,४.५७ ॥
परश्वधाट्ठञ्च ॥ ४,४.५८ ॥
शक्तियष्ट्योरीकक् ॥ ४,४.५९ ॥
अस्तिनास्तिदिष्टं मतिः ॥ ४,४.६० ॥
शीलं ॥ ४,४.६१ ॥
छत्रादिभ्यो णः ॥ ४,४.६२ ॥
कर्माध्ययने वृत्तम् ॥ ४,४.६३ ॥
बह्वच्पूर्वपदाट्ठच् ॥ ४,४.६४ ॥
हितं भक्षाः ॥ ४,४.६५ ॥
त दस्मै दीयते नियुक्तम् ॥ ४,४.६६ ॥
श्राणामांसौदनाट्टिठन् ॥ ४,४.६७ ॥
भक्टादणान्यतरस्याम् ॥ ४,४.६८ ॥
तत्र नियुक्तः ॥ ४,४.६९ ॥
अगारान्ताट्ठन् ॥ ४,४.७० ॥
अध्यायिन्यदेशकालात् ॥ ४,४.७१ ॥
कठिनान्तप्रस्तारसंस्थानेषु व्यवहरति ॥ ४,४.७२ ॥
निकटे वसति ॥ ४,४.७३ ॥
आवसथात्ष्ठल् ॥ ४,४.७४ ॥
प्राग्घिताद्यत् ॥ ४,४.७५ ॥
तद्वहति रथयुगप्रासङ्गम् ॥ ४,४.७६ ॥
धुरो यड्ढकौ ॥ ४,४.७७ ॥
खः सर्वधुरात् ॥ ४,४.७८ ॥
एकधुराल्लुक्च ॥ ४,४.७९ ॥
शकटादण् ॥ ४,४.८० ॥
हलसीराट्ठक् ॥ ४,४.८१ ॥
सञ्ज्ञायां जन्याः ॥ ४,४.८२ ॥
विध्यत्यधनुषा ॥ ४,४.८३ ॥
धनगणं लब्धा ॥ ४,४.८४ ॥
अन्नाण्णः ॥ ४,४.८५ ॥
वशं गतः ॥ ४,४.८६ ॥
पदमस्मिन् दृश्यम् ॥ ४,४.८७ ॥
मूलमस्य आवर्हि ॥ ४,४.८८ ॥
सञ्ज्ञायां धेनुष्या ॥ ४,४.८९ ॥
गृहपतिना संयुक्ते ञ्यः ॥ ४,४.९० ॥
नौवयोधर्मविषमूलमूलसीतातुलाभ्यस्तार्यतुल्यप्राप्यवध्यानाम्यसमसमितसंमितेषु ॥ ४,४.९१ ॥

धर्मपथ्यर्थन्यायादनपेते ॥ ४,४.९२ ॥
छन्दसो निर्मिते ॥ ४,४.९३ ॥
उरसोऽण्च ॥ ४,४.९४ ॥
हृदयस्य प्रियः ॥ ४,४.९५ ॥
बन्धने चर्षौ ॥ ४,४.९६ ॥
मतजनहलात्करणजल्पकर्षेषु ॥ ४,४.९७ ॥
तत्र साधुः ॥ ४,४.९८ ॥
प्रतिजनादिभ्यः खञ् ॥ ४,४.९९ ॥
भक्ताण्णः ॥ ४,४.१०० ॥
परिषदो ण्यः ॥ ४,४.१०१ ॥
कथादिभ्यष्ठक् ॥ ४,४.१०२ ॥
गुडादिभ्यष्ठञ् ॥ ४,४.१०३ ॥
पथ्यतिथिवसतिस्वपतेर्ढञ् ॥ ४,४.१०४ ॥
सभायाः यः ॥ ४,४.१०५ ॥
ढश्छन्दसि ॥ ४,४.१०६ ॥
समानातीर्थे वासी ॥ ४,४.१०७ ॥
समानोदरे शयित ओ चोदात्तः ॥ ४,४.१०८ ॥
सोदराद्यः ॥ ४,४.१०९ ॥
भवे छन्दसि ॥ ४,४.११० ॥
पाथोनदीभ्यां ड्यण् ॥ ४,४.१११ ॥
वेशन्तहिमवद्भ्यामण् ॥ ४,४.११२ ॥
स्रोतसो विभाषा ड्यड्ड्यौ ॥ ४,४.११३ ॥
सगर्भसयूथसनुताद्यन् ॥ ४,४.११४ ॥
तुग्राद्घन् ॥ ४,४.११५ ॥
अग्राद्यत् ॥ ४,४.११६ ॥
घच्छौ च ॥ ४,४.११७ ॥
समुद्राभ्राद्घः ॥ ४,४.११८ ॥
बर्हिषि दत्तम् ॥ ४,४.११९ ॥
दुतस्य भागकर्मणी ॥ ४,४.१२० ॥
रक्षोयातूनां हननी ॥ ४,४.१२१ ॥
रेवतीजगतीहविष्याभ्यः प्रशस्ये ॥ ४,४.१२२ ॥
असुरस्य स्वम् ॥ ४,४.१२३ ॥
मायायामण् ॥ ४,४.१२४ ॥
तद्वानासामुपधानो मन्त्र इति इष्टकासु लुक्च मतोः ॥ ४,४.१२५ ॥
अश्विमानण् ॥ ४,४.१२६ ॥
वयस्यासु मूध्नी मतुप् ॥ ४,४.१२७ ॥
मत्वर्हे मासतन्वोः ॥ ४,४.१२८ ॥
मधोर्ञ च ॥ ४,४.१२९ ॥
ओजसोऽहनि यत्खौ ॥ ४,४.१३० ॥
वेशोयशादेर्भगाद्यल् ॥ ४,४.१३१ ॥
ख च ॥ ४,४.१३२ ॥
पूर्वैः कृतमिनयौ च ॥ ४,४.१३३ ॥
अद्भिः संस्कृतम् ॥ ४,४.१३४ ॥
सहस्रेण संमितौ घः ॥ ४,४.१३५ ॥
मतौ च ॥ ४,४.१३६ ॥
सोममर्हति यः ॥ ४,४.१३७ ॥
मये च ॥ ४,४.१३८ ॥

मधोः ॥ ४,४.१३९ ॥
वसोः समूहे च ॥ ४,४.१४० ॥
नक्षत्राद्घः ॥ ४,४.१४१ ॥
सर्वदेवात्तातिल् ॥ ४,४.१४२ ॥
शिवशमरिष्टस्य करे ॥ ४,४.१४३ ॥
भावे च ॥ ४,४.१४४ ॥

प्राक्क्रीताच्छः ॥ ५,१.१ ॥
उगवादिभ्यो यत् ॥ ५,१.२ ॥
कंवलाच्च सञ्ज्ञायाम् ॥ ५,१.३ ॥
विभाषा हविरपूपादिभ्यः ॥ ५,१.४ ॥
तस्मै हितम् ॥ ५,१.५ ॥
शरीरावयवाद्यत् ॥ ५,१.६ ॥
खलयवमाषतिलवृषब्रह्मणश्च ॥ ५,१.७ ॥
अजाविभ्यां थ्यन् ॥ ५,१.८ ॥
आत्मन्विश्वजनभोगोत्तरपदात्खः ॥ ५,१.९ ॥
सर्वपुरुषाभ्यां णढञौ ॥ ५,१.१० ॥
माणवचरकाभ्यां खञ् ॥ ५,१.११ ॥
तदर्थं विकृतेः प्रकृतौ ॥ ५,१.१२ ॥
छदिरुपधिबलेर्ढञ् ॥ ५,१.१३ ॥
ऋषभोपानहोर्ञ्यः ॥ ५,१.१४ ॥
चर्मणोऽञ् ॥ ५,१.१५ ॥
तदस्य तदस्मिन् स्यादिति ॥ ५,१.१६ ॥
परिखाया ठञ् ॥ ५,१.१७ ॥
प्राग्वतेष्ठञ् ॥ ५,१.१८ ॥
आर्हादगोपुच्छसङ्ख्यापरिमाणाट्ठक् ॥ ५,१.१९ ॥
असमासे निष्कादिभ्यः ॥ ५,१.२० ॥
शताच्च ठन्यतावशते ॥ ५,१.२१ ॥
सङ्ख्याया अतिशदन्तायाः कन् ॥ ५,१.२२ ॥
वतोरिड्वा ॥ ५,१.२३ ॥
विंशतित्रिंशद्भ्यां ड्वुनसञ्ज्ञायाम् ॥ ५,१.२४ ॥
कंसाट्टिठण् ॥ ५,१.२५ ॥
शूर्पादञन्यतरस्याम् ॥ ५,१.२६ ॥
शतमानविंशतिकसहस्रवसनादण् ॥ ५,१.२७ ॥
अध्यर्धपूर्वद्विगोर्लुगसञ्ज्ञायाम् ॥ ५,१.२८ ॥
विभाषा कार्षापणसहस्राभ्याम् ॥ ५,१.२९ ॥
द्वित्रिपूर्वान्निष्कात् ॥ ५,१.३० ॥
बिस्ताच्च ॥ ५,१.३१ ॥
विंशतिकात्खः ॥ ५,१.३२ ॥
खार्या ईकन् ॥ ५,१.३३ ॥
पणपादमाषशताद्यत् ॥ ५,१.३४ ॥
शाणाद्वा ॥ ५,१.३५ ॥
द्वित्रिपूर्वादण्च ॥ ५,१.३६ ॥
तेन क्रीतम् ॥ ५,१.३७ ॥
तस्य निमित्तं संयोगोत्पातौ ॥ ५,१.३८ ॥
गोद्व्यचोऽसङ्ख्यापरिमाणाश्वादेर्यत् ॥ ५,१.३९ ॥

पुत्राच्छ च ॥ ५,१.४० ॥
सर्वभूमिपृथिवीभ्यामणञौ ॥ ५,१.४१ ॥
तस्य+ईश्वरः ॥ ५,१.४२ ॥
तत्र विदित इति च ॥ ५,१.४३ ॥
लोकसर्वलोकाट्ठञ् ॥ ५,१.४४ ॥
तस्य वापः ॥ ५,१.४५ ॥
पात्रात्ष्ठन् ॥ ५,१.४६ ॥
तदस्मिन् वृद्ध्यायलाभशुल्कोपदा दीयते ॥ ५,१.४७ ॥
पूरणार्धाट्ठन् ॥ ५,१.४८ ॥
भागाद्यच्च ॥ ५,१.४९ ॥
तद्धरति वहत्यावहति भाराद्वंशादिभ्यः ॥ ५,१.५० ॥
वस्नद्रव्याभ्यां ठन्कनौ ॥ ५,१.५१ ॥
सम्भवत्यवहरति पचति ॥ ५,१.५२ ॥
आढकाचितपात्रात्खोऽन्यतरस्याम् ॥ ५,१.५३ ॥
द्विगोः ष्ठंश्च ॥ ५,१.५४ ॥
कुलिजाल्लुक्खौ च ॥ ५,१.५५ ॥
सोऽस्यांशवस्नभृतयः ॥ ५,१.५६ ॥
तदस्य परिमाणम् ॥ ५,१.५७ ॥
सङ्ख्यायाः सञ्ज्ञासङ्घसूत्राध्ययनेषु ॥ ५,१.५८ ॥
पङ्क्तिविंशतित्रिंशच्चत्वारिंशत्पञ्चाशत्षष्टिसप्तत्यशीतिनवतिशतम् ॥ ५,१.५९ ॥
पञ्चद्दशतौ वर्गे वा ॥ ५,१.६० ॥
सप्तनोऽञ्छन्दसि ॥ ५,१.६१ ॥
त्रिंशच्चत्वारिंशतोर्ब्राह्मणे सञ्ज्ञायां डण् ॥ ५,१.६२ ॥
तदर्हति ॥ ५,१.६३ ॥
छेदादिभ्यो नित्यम् ॥ ५,१.६४ ॥
शीर्षच्छेदाद्यच्च ॥ ५,१.६५ ॥
दण्डादिभ्यः ॥ ५,१.६६ ॥
छन्दसि च ॥ ५,१.६७ ॥
पात्राद्घंश्च ॥ ५,१.६८ ॥
कडङ्करदक्षिणाच्छ च ॥ ५,१.६९ ॥
स्थालीबिलात् ॥ ५,१.७० ॥
यज्ञर्त्विग्भ्यां घखञौ ॥ ५,१.७१ ॥
पारायणतुरायणचाद्रायणं वर्तयति ॥ ५,१.७२ ॥
संशयमापन्नः ॥ ५,१.७३ ॥
योजनं गच्छति ॥ ५,१.७४ ॥
पथः ष्कन् ॥ ५,१.७५ ॥
पन्थो ण नित्यम् ॥ ५,१.७६ ॥
उत्तरपथेनाहृतं च ॥ ५,१.७७ ॥
कालात् ॥ ५,१.७८ ॥
तेन निर्वृत्तम् ॥ ५,१.७९ ॥
तमधीष्टो भृतो भूतो भावी ॥ ५,१.८० ॥
मासाद्वयसि यत्खञौ ॥ ५,१.८१ ॥
द्विगोर्यप् ॥ ५,१.८२ ॥
षण्मासाण्ण्यच्च ॥ ५,१.८३ ॥
अवयसि ठंश्च ॥ ५,१.८४ ॥
समायाः खः ॥ ५,१.८५ ॥
द्विगोर्वा ॥ ५,१.८६ ॥

रात्र्यहःसंवत्सराच्च ॥ ५,१.८७ ॥
वर्षाल्लुक्च ॥ ५,१.८८ ॥
चित्तवति नित्यम् ॥ ५,१.८९ ॥
षष्टिकाः षष्टिरात्रेण पच्यन्ते ॥ ५,१.९० ॥
वत्सरान्ताच्छश्छन्दसि ॥ ५,१.९१ ॥
संपरिपूर्वात्ख च ॥ ५,१.९२ ॥
तेन परिजय्यलभ्यकार्यसुकरम् ॥ ५,१.९३ ॥
तदस्य ब्रह्मचर्यम् ॥ ५,१.९४ ॥
तस्य च दक्षिणा यज्ञाख्येभ्यः ॥ ५,१.९५ ॥
तत्र च दीयते कार्यं भववत् ॥ ५,१.९६ ॥
व्युष्टादिभ्योऽण् ॥ ५,१.९७ ॥
तेन यथाकथाचहस्ताभ्यां णयतौ ॥ ५,१.९८ ॥
सम्पादिनि ॥ ५,१.९९ ॥
कर्मवेषाद्यत् ॥ ५,१.१०० ॥
तस्मै प्रभवति सन्तापादिभ्यः ॥ ५,१.१०१ ॥
योगाद्यच्च ॥ ५,१.१०२ ॥
कर्मण उकञ् ॥ ५,१.१०३ ॥
समयस्तदस्य प्राप्तम् ॥ ५,१.१०४ ॥
ऋतोरण् ॥ ५,१.१०५ ॥
छन्दसि घस् ॥ ५,१.१०६ ॥
कालाद्यत् ॥ ५,१.१०७ ॥
प्रकृष्टे ठञ् ॥ ५,१.१०८ ॥
प्रयोजनम् ॥ ५,१.१०९ ॥
विशाखाषाढादण्मन्थदण्डयोः ॥ ५,१.११० ॥
अनुप्रवचनादिभ्यश्छः ॥ ५,१.१११ ॥
समापनात्सपूर्वपदात् ॥ ५,१.११२ ॥
ऐकागारिकट्चौरे ॥ ५,१.११३ ॥
आकालिकडाद्यन्तवचने ॥ ५,१.११४ ॥
तेन तुल्यं क्रिया चेद्वतिः ॥ ५,१.११५ ॥
तत्र तस्य+इव ॥ ५,१.११६ ॥
तदर्हम् ॥ ५,१.११७ ॥
उपसर्गाच्छन्दसि धात्वर्थे ॥ ५,१.११८ ॥
तस्य भावस्त्वतलौ ॥ ५,१.११९ ॥
आ च त्वात् ॥ ५,१.१२० ॥
न नञ्पूर्वात्तत्पुरुषादचतुरसङ्गतलवणवटबुधकतरसलसेभ्यः ॥ ५,१.१२१ ॥
पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा ॥ ५,१.१२२ ॥
वर्णदृढादिभ्यः ष्यञ्च ॥ ५,१.१२३ ॥
गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च ॥ ५,१.१२४ ॥
स्तोनाद्यन्नलोपश्च ॥ ५,१.१२५ ॥
सख्युर्यः ॥ ५,१.१२६ ॥
कपिज्ञात्योर्ढक् ॥ ५,१.१२७ ॥
पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक् ॥ ५,१.१२८ ॥
प्राणभृज्जातिवयोवचनोद्गात्रादिभ्योऽञ् ॥ ५,१.१२९ ॥
हायनान्तयुवादिभ्योऽण् ॥ ५,१.१३० ॥
इगन्ताश्च लघुपूर्वात् ॥ ५,१.१३१ ॥
योपधाद्गुरूपोत्तमाद्वुञ् ॥ ५,१.१३२ ॥
द्वन्द्वमनोज्ञादिभ्यश्च ॥ ५,१.१३३ ॥

गोत्रचरणाच्छ्लाघात्याकारतदवेतेषु ॥ ५,१.१३४ ॥
होत्राभ्यश्छः ॥ ५,१.१३५ ॥
ब्रह्मणस्त्वः ॥ ५,१.१३६ ॥

धान्यानां भवने क्षेत्रे खञ् ॥ ५,२.१ ॥
व्रीहिशाल्योर्ढक् ॥ ५,२.२ ॥
यवयवकषष्टिकाद्यत् ॥ ५,२.३ ॥
विभाषा तिलमाषोमाभङ्गाणुभ्यः ॥ ५,२.४ ॥
सर्वचर्मणः कृतः खखञौ ॥ ५,२.५ ॥
यथामुखसम्मुखस्य दर्शनः खः ॥ ५,२.६ ॥
तत्सर्वादेः पथ्यङ्गकर्मपत्रपात्रं व्याप्नोति ॥ ५,२.७ ॥
आप्रपदं प्राप्नोति ॥ ५,२.८ ॥
अनुपदसर्वान्नायानयं बद्धाभक्षयतिनेयेषु ॥ ५,२.९ ॥
परोवरपरम्परपुत्रपौत्रमनुभवति ॥ ५,२.१० ॥
अवारपारात्यन्तानुकामं गामी ॥ ५,२.११ ॥
समांसमां विजायते ॥ ५,२.१२ ॥
अद्यश्वीना अवष्टब्धे ॥ ५,२.१३ ॥
आगवीनः ॥ ५,२.१४ ॥
अनुग्वलङ्गामी ॥ ५,२.१५ ॥
अध्वनो यत्खौ ॥ ५,२.१६ ॥
अभ्यमित्राच्छ च ॥ ५,२.१७ ॥
गोष्ठात्खञ्भूतपूर्वे ॥ ५,२.१८ ॥
अश्वस्यैकाहगमः ॥ ५,२.१९ ॥
शालीनकौपीने अधृष्टाकार्ययोः ॥ ५,२.२० ॥
व्रातेन जीवति ॥ ५,२.२१ ॥
साप्तपदीनं सख्यम् ॥ ५,२.२२ ॥
हैयङ्गवीनं सञ्ज्ञायाम् ॥ ५,२.२३ ॥
तस्य पाकमूले पील्वदिकर्णादिभ्यः कुणब्जाहचौ ॥ ५,२.२४ ॥
पक्षात्तिः ॥ ५,२.२५ ॥
तेन वित्तश्चुञ्चुप्चणपौ ॥ ५,२.२६ ॥
विनञ्भ्यां नानाञौ नसह ॥ ५,२.२७ ॥
वेः शालच्छङ्कटचौ ॥ ५,२.२८ ॥
संप्रोदश्च कटच् ॥ ५,२.२९ ॥
अवात्कुटारच्च ॥ ५,२.३० ॥
नते नासिकायाः सञ्ज्ञायां टीटञ्नाटज्भ्रटचः ॥ ५,२.३१ ॥
नेर्बिडज्बिरीसचौ ॥ ५,२.३२ ॥
इनच्पिटच्चिक चि च ॥ ५,२.३३ ॥
उपाधिभ्यां त्यकन्नासन्नारूढयोः ॥ ५,२.३४ ॥
कर्मणि घटोऽठच् ॥ ५,२.३५ ॥
तदस्य सञ्जातं तारकादिभ्य इतच् ॥ ५,२.३६ ॥
प्रमाणे द्वयसज्दघ्नञ्मात्रचः ॥ ५,२.३७ ॥
पुरुषहस्तिभ्यामण्च ॥ ५,२.३८ ॥
यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप् ॥ ५,२.३९ ॥
किमिदम्भ्यां वो घः ॥ ५,२.४० ॥
किमः सङ्ख्यापरिमाणे डति च ॥ ५,२.४१ ॥
सङ्ख्याया अवयवे तयप् ॥ ५,२.४२ ॥
द्वित्रिभ्यां तयस्यायज्वा ॥ ५,२.४३ ॥

उभादुदात्तो नित्यम् ॥ ५,२.४४ ॥
तदस्मिन्नधिकमिति दशान्ताड्डः ॥ ५,२.४५ ॥
शदन्तविंशतेश्च ॥ ५,२.४६ ॥
सङ्ख्याया गुणस्य निमाने मयट् ॥ ५,२.४७ ॥
तस्य पूरणे डट् ॥ ५,२.४८ ॥
नान्तादसङ्ख्यादेर्मट् ॥ ५,२.४९ ॥
थट्च छन्दसि ॥ ५,२.५० ॥
षट्कतिकतिपयचतुरां थुक् ॥ ५,२.५१ ॥
बहुपूगगणसङ्घस्य तिथुक् ॥ ५,२.५२ ॥
वतोरिथुक् ॥ ५,२.५३ ॥
द्वेस्तीयः ॥ ५,२.५४ ॥
त्रेः सम्प्रसारणं च ॥ ५,२.५५ ॥
विंशत्यादिभ्यस्तमडन्यतरस्याम् ॥ ५,२.५६ ॥
नित्यं शतादिमासार्धमाससंवत्सराच्च ॥ ५,२.५७ ॥
षष्ट्यादेश्चासङ्ख्यादेः ॥ ५,२.५८ ॥
मतौ छः सूक्तसाम्नोः ॥ ५,२.५९ ॥
अध्यायानुवाकयोर्लुक् ॥ ५,२.६० ॥
विमुक्तादिभ्योऽण् ॥ ५,२.६१ ॥
गोषदादिभ्यो वुन् ॥ ५,२.६२ ॥
तत्र कुशलः पथः ॥ ५,२.६३ ॥
आकर्षादिभ्यः कन् ॥ ५,२.६४ ॥
धनहिरण्यात्कामे ॥ ५,२.६५ ॥
स्वाङ्गेभ्यः प्रसिते ॥ ५,२.६६ ॥
उदराट्ठगाद्यूने ॥ ५,२.६७ ॥
सस्येन परिजातः ॥ ५,२.६८ ॥
अंशं हारि ॥ ५,२.६९ ॥
तन्त्रादचिरापहृते ॥ ५,२.७० ॥
ब्राह्मणकोष्णिके सञ्ज्ञायाम् ॥ ५,२.७१ ॥
शीतोष्णाभ्यां कारिणि ॥ ५,२.७२ ॥
अधिकम् ॥ ५,२.७३ ॥
अनुकाभिकाभीकः कमिता ॥ ५,२.७४ ॥
पार्श्वेनान्विच्छति ॥ ५,२.७५ ॥
अयःशूलदण्डाजिनाभ्यां ठक्ठञौ ॥ ५,२.७६ ॥
तावतिथं ग्रहणमिति लुग्वा ॥ ५,२.७७ ॥
स एषां ग्रामणीः ॥ ५,२.७८ ॥
शृङ्खलमस्य बन्धनं करभे ॥ ५,२.७९ ॥
उत्क उनमनाः ॥ ५,२.८० ॥
कालप्रयोजनाद्रोगे ॥ ५,२.८१ ॥
तदस्मिन्नन्नं प्राये सञ्ज्ञायाम् ॥ ५,२.८२ ॥
कुल्माषादञ् ॥ ५,२.८३ ॥
श्रोत्रियं श्छन्दोऽधीते ॥ ५,२.८४ ॥
श्राद्धमनेनन् भुक्तमिनिठनौ ॥ ५,२.८५ ॥
पूर्वादिनिः ॥ ५,२.८६ ॥
सपूर्वाच्च ॥ ५,२.८७ ॥
इष्टादिभ्यश्च ॥ ५,२.८८ ॥
छन्दसि परिपन्थिपरिपरिणौ पर्यवस्थातरि ॥ ५,२.८९ ॥
अनुपद्यन्वेष्टा ॥ ५,२.९० ॥

साक्षाद्द्रष्टरि सञ्ज्ञायाम् ॥ ५,२.९१ ॥
क्षेत्रियच्परक्षेत्रे चिकित्स्यः ॥ ५,२.९२ ॥
इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गमिन्द्रदृष्टमिन्द्रसृष्टमिन्द्रजुष्टमिन्द्रदत्तमिति वा ॥ ५,२.९३ ॥
तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् ॥ ५,२.९४ ॥
रसादिभ्यश्च ॥ ५,२.९५ ॥
प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्याम् ॥ ५,२.९६ ॥
सिध्मादिभ्यश्च ॥ ५,२.९७ ॥
वत्सांसाभ्यां कामबले ॥ ५,२.९८ ॥
फेनादिलच्च ॥ ५,२.९९ ॥
लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यः शनेलचः ॥ ५,२.१०० ॥
प्रज्ञाश्रद्धार्चावृत्तिभ्यो णः ॥ ५,२.१०१ ॥
तपःसहस्राभ्यां विनीनी ॥ ५,२.१०२ ॥
अण्च ॥ ५,२.१०३ ॥
सिकताशर्कराभ्यां च ॥ ५,२.१०४ ॥
देशे लुबिलचौ च ॥ ५,२.१०५ ॥
दन्त उन्नत उरच् ॥ ५,२.१०६ ॥
ऊषसुषिमुष्कमधो रः ॥ ५,२.१०७ ॥
द्युद्रुभ्यां मः ॥ ५,२.१०८ ॥
केशाद्वोऽन्यतरस्याम् ॥ ५,२.१०९ ॥
गाण्ड्यजगात्सञ्ज्ञायाम् ॥ ५,२.११० ॥
काण्डाण्डादीरन्नीरचौ ॥ ५,२.१११ ॥
रजःकृष्यासुतिपरिषदो वलच् ॥ ५,२.११२ ॥
दन्तशिखात्सञ्ज्ञायाम् ॥ ५,२.११३ ॥
ज्योत्स्नातमिस्राशृङ्गिणोर्जस्विन्नूर्जस्वलगोमिन्मलिनमलीमसाः ॥ ५,२.११४ ॥
अत इनिठनौ ॥ ५,२.११५ ॥
व्रीह्यादिभ्यश्च ॥ ५,२.११६ ॥
तुन्दादिभ्य इलच्च ॥ ५,२.११७ ॥
एकगोपूर्वाट्ठञ्नित्यम् ॥ ५,२.११८ ॥
शतसहस्रान्ताच्च निष्कात् ॥ ५,२.११९ ॥
रूपादाहतप्रशंसयोर्यप् ॥ ५,२.१२० ॥
अस्मायामेधास्रजो विनिः ॥ ५,२.१२१ ॥
बहुलं छन्दसि ॥ ५,२.१२२ ॥
ऊर्णाया युस् ॥ ५,२.१२३ ॥
वाचो ग्मिनिः ॥ ५,२.१२४ ॥
आलजाटचौ बहुभाषिणि ॥ ५,२.१२५ ॥
स्वामिन्नैश्वर्ये ॥ ५,२.१२६ ॥
अर्शादिभ्योऽच् ॥ ५,२.१२७ ॥
द्वन्द्वोपतापगर्ह्यात्प्राणिस्थादिनिः ॥ ५,२.१२८ ॥
वातातिसाराभ्यां कुक्च ॥ ५,२.१२९ ॥
वयसि पूरणात् ॥ ५,२.१३० ॥
सुखादिभ्यश्च ॥ ५,२.१३१ ॥
धर्मशीलवर्णान्ताच्च ॥ ५,२.१३२ ॥
हस्ताज्जातौ ॥ ५,२.१३३ ॥
वर्णाद्ब्राह्मचारिणि ॥ ५,२.१३४ ॥
पुष्करादिभ्यो देशे ॥ ५,२.१३५ ॥
बलादिभ्यो मतुबन्यतरस्याम् ॥ ५,२.१३६ ॥
सञ्ज्ञायां मन्माभ्याम् ॥ ५,२.१३७ ॥

कंशंभ्यां बभयुस्तितुतयसः ॥ ५,२.१३८ ॥
तुन्दिबलिवटेर्भः ॥ ५,२.१३९ ॥
अहंशुभमोर्युस् ॥ ५,२.१४० ॥

प्राग्दिशो विभक्तिः ॥ ५,३.१ ॥
किंसर्वनामबहुभ्योऽद्व्यादिभ्यः ॥ ५,३.२ ॥
इदमिश् ॥ ५,३.३ ॥
एतेतौ रथोः ॥ ५,३.४ ॥
एतदोऽश् ॥ ५,३.५ ॥
सर्वस्य सोऽन्यतरस्यां दि ॥ ५,३.६ ॥
पञ्चम्यास्तसिल् ॥ ५,३.७ ॥
तसेश्च ॥ ५,३.८ ॥
पर्यभिभ्यां च ॥ ५,३.९ ॥
सप्तम्यास्त्रल् ॥ ५,३.१० ॥
इदमो हः ॥ ५,३.११ ॥
किमोऽत् ॥ ५,३.१२ ॥
वा ह च च्छन्दसि ॥ ५,३.१३ ॥
इतराभ्योऽपि दृश्यन्ते ॥ ५,३.१४ ॥
सर्वैकान्यकिंयत्तदः काले दा ॥ ५,३.१५ ॥
इदमो र्हिल् ॥ ५,३.१६ ॥
अधुना ॥ ५,३.१७ ॥
दानीं च ॥ ५,३.१८ ॥
तदो दा च ॥ ५,३.१९ ॥
तयोर्दार्हिलौ च छन्दसि ॥ ५,३.२० ॥
अनद्यतने र्हिलन्यतरस्याम् ॥ ५,३.२१ ॥
सद्यः परुत्परार्यैषमः परेद्यव्यद्यपूर्वेद्युरन्येद्युरन्यतरेद्युरितरेद्युरपरेद्युरधरेद्युरुभयेद्युरुत्तरेद्युः ॥ ५,३.२२ ॥
प्रकारवचने थाल् ॥ ५,३.२३ ॥
इदमस्थमुः ॥ ५,३.२४ ॥
किमश्च ॥ ५,३.२५ ॥
था हेतौ च च्छन्दसि ॥ ५,३.२६ ॥
दिक्शब्देभ्यः सप्तमीपञ्चमीप्रथमाभ्यो दिग्देशकालेष्वस्तातिः ॥ ५,३.२७ ॥
दक्षिणोत्तराभ्यामतसुच् ॥ ५,३.२८ ॥
विभाषा परावराभ्याम् ॥ ५,३.२९ ॥
अञ्चेर्लुक् ॥ ५,३.३० ॥
उपर्युपरिष्टात् ॥ ५,३.३१ ॥
पश्चात् ॥ ५,३.३२ ॥
पश्च पश्चा च छन्दसि ॥ ५,३.३३ ॥
उत्तराधरदक्षिणादातिः ॥ ५,३.३४ ॥
एनबन्यतरस्यामदूरेऽपञ्चम्याः ॥ ५,३.३५ ॥
दक्षिणादाच् ॥ ५,३.३६ ॥
आहि च दूरे ॥ ५,३.३७ ॥
उत्तराच्च ॥ ५,३.३८ ॥
पूर्वाधरावरानामसि पुरद्ःवश्च+एषाम् ॥ ५,३.३९ ॥
अस्ताति च ॥ ५,३.४० ॥
विभाषाऽवरस्य ॥ ५,३.४१ ॥
सङ्ख्याया विधार्थे धा ॥ ५,३.४२ ॥

अधिकरणविचाले च ॥ ५,३.४३ ॥
एकाद्धो ध्यमुञन्यतरस्याम् ॥ ५,३.४४ ॥
द्वित्र्योश्च धमुञ् ॥ ५,३.४५ ॥
एधाच्च ॥ ५,३.४६ ॥
याप्ये पाशप् ॥ ५,३.४७ ॥
पूरणाद्भागे तीयादन् ॥ ५,३.४८ ॥
प्रागेकादशभ्योऽच्छन्दसि ॥ ५,३.४९ ॥
षष्ठाष्टमाभ्यां ञ च ॥ ५,३.५० ॥
मानपश्वङ्गयोः कन्लुकौ च ॥ ५,३.५१ ॥
एकादाकिनिच्चासहाये ॥ ५,३.५२ ॥
भूतपूर्वे चरट् ॥ ५,३.५३ ॥
षष्ठ्या रूप्य च ॥ ५,३.५४ ॥
अतिशायने तमबिष्ठनौ ॥ ५,३.५५ ॥
तिङश्च ॥ ५,३.५६ ॥
द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुनौ ॥ ५,३.५७ ॥
अजादि गुणवचनादेव ॥ ५,३.५८ ॥
तुश्छन्दसि ॥ ५,३.५९ ॥
प्रशस्यस्य श्रः ॥ ५,३.६० ॥
ज्य च ॥ ५,३.६१ ॥
वृद्धस्य च ॥ ५,३.६२ ॥
अन्तिकबाढयोर्नेदसाधौ ॥ ५,३.६३ ॥
युवाल्पयोः कनन्यतरस्याम् ॥ ५,३.६४ ॥
विन्मतोर्लुक् ॥ ५,३.६५ ॥
प्रशंसायां रूपप् ॥ ५,३.६६ ॥
ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः ॥ ५,३.६७ ॥
विभाषा सुपो बहुच्पुरस्तात्तु ॥ ५,३.६८ ॥
प्रकारवचने जातीयर् ॥ ५,३.६९ ॥
प्रागिवात्कः ॥ ५,३.७० ॥
अव्ययसर्वनाम्नामकच्प्राक्टेः ॥ ५,३.७१ ॥
कस्य च दः ॥ ५,३.७२ ॥
अज्ञाते ॥ ५,३.७३ ॥
कुत्सिते ॥ ५,३.७४ ॥
सञ्ज्ञायां कन् ॥ ५,३.७५ ॥
अनुअम्पायाम् ॥ ५,३.७६ ॥
नीतौ च तद्युक्तात् ॥ ५,३.७७ ॥
बह्वचो मनुस्यनाम्नष्ठज्वा ॥ ५,३.७८ ॥
घनिलचौ च ॥ ५,३.७९ ॥
प्राचामुपादेरडज्वुचौ च ॥ ५,३.८० ॥
जातिनाम्नः कन् ॥ ५,३.८१ ॥
अजिनान्तस्य+उत्तरपदलोपश्च ॥ ५,३.८२ ॥
ठाजादावूर्ध्वं द्वितीयादचः ॥ ५,३.८३ ॥
शेवलसुपरिविशालावरुणार्यमादिनां तृतीयात् ॥ ५,३.८४ ॥
अल्पे ॥ ५,३.८५ ॥
ह्रस्वे ॥ ५,३.८६ ॥
सञ्ज्ञायां कन् ॥ ५,३.८७ ॥
कुटीशमीशुण्डाभ्यो रः ॥ ५,३.८८ ॥
कुत्वा डुपच् ॥ ५,३.८९ ॥

कासूगोणीभ्यां ष्टरच् ॥ ५,३.९० ॥
वत्सोक्षाश्वर्षभेभ्यश्च तनुत्वे ॥ ५,३.९१ ॥
किंयत्तदो निर्धारणे द्वयोरेकस्य डतरच् ॥ ५,३.९२ ॥
वा बहूनां जातिपरिप्रश्नो डतमच् ॥ ५,३.९३ ॥
एकाच्च प्राचाम् ॥ ५,३.९४ ॥
अवक्षेपणे कन् ॥ ५,३.९५ ॥
इवे प्रतिकृतौ ॥ ५,३.९६ ॥
सञ्ज्ञायां च ॥ ५,३.९७ ॥
लुम्मनुष्ये ॥ ५,३.९८ ॥
जीविकार्थे चापण्ये ॥ ५,३.९९ ॥
देवपथादिभ्यश्च ॥ ५,३.१०० ॥
वस्तेर्ढञ् ॥ ५,३.१०१ ॥
शिलाया ढः ॥ ५,३.१०२ ॥
शाखादिभ्यो यत् ॥ ५,३.१०३ ॥
द्रव्यं च भव्ये ॥ ५,३.१०४ ॥
कुशाग्राच्छः ॥ ५,३.१०५ ॥
समासाच्च तद्विषयात् ॥ ५,३.१०६ ॥
शर्करादिभ्योऽण् ॥ ५,३.१०७ ॥
अङ्गुल्यादिभ्यष्ठक् ॥ ५,३.१०८ ॥
एकशालायाष्ठजन्यतरस्याम् ॥ ५,३.१०९ ॥
कर्कलोहितादीकक् ॥ ५,३.११० ॥
प्रत्नपूर्वविश्वेमात्थाल्छन्दसि ॥ ५,३.१११ ॥
पूगाञ्ञ्योऽग्रामणीपूर्वात् ॥ ५,३.११२ ॥
व्रातच्फञोरस्त्रियाम् ॥ ५,३.११३ ॥
आयुधजीविसङ्घाञ्ञ्यड्वाहीकेष्वब्राह्मणराजन्यात् ॥ ५,३.११४ ॥
वृकाट्टेण्यण् ॥ ५,३.११५ ॥
दामन्यादित्रिगर्तषष्ठाच्छः ॥ ५,३.११६ ॥
पर्श्वादियौधेयादिभ्यामणञौ ॥ ५,३.११७ ॥
अभिजिद्विदभृच्छालावच्छिखावच्छमीवदूर्णावच्छ्रुमदणो यञ् ॥ ५,३.११८ ॥
ञ्यादयस्तद्राजाः ॥ ५,३.११९ ॥

पादशतस्य सङ्ख्यादेर्वीप्सायां वुन् लोपश्च ॥ ५,४.१ ॥
दण्डव्यवसर्गयोश्च ॥ ५,४.२ ॥
स्थूलादिभ्यः प्रकारवचने कन् ॥ ५,४.३ ॥
अनत्यन्तगतौ क्तात् ॥ ५,४.४ ॥
न सामिवचने ॥ ५,४.५ ॥
बृहत्या आच्छादने ॥ ५,४.६ ॥
अषडक्षाशितङ्ग्वलङ्कर्मालम्पुरुषाध्युत्तरपदात्खः ॥ ५,४.७ ॥
विभाषाञ्चेरदिक्स्त्रियाम् ॥ ५,४.८ ॥
जात्यन्ताच्छ बन्धुनि ॥ ५,४.९ ॥
स्थानान्ताद्विभाषा सस्थानेन+इति चेत् ॥ ५,४.१० ॥
किमेत्तिङव्ययघादांवद्रव्यप्रकर्षे ॥ ५,४.११ ॥
अमु च च्छन्दसि ॥ ५,४.१२ ॥
अनुगादिनष्ठक् ॥ ५,४.१३ ॥
णचः स्त्रियामञ् ॥ ५,४.१४ ॥
अणिनुणः ॥ ५,४.१५ ॥
विसारिणो मत्स्ये ॥ ५,४.१६ ॥

सङ्ख्यायाः क्रियाभ्यावृत्तिगणने कृत्वसुच् ॥ ५,४.१७ ॥
द्वित्रिचतुर्भ्यः सुच् ॥ ५,४.१८ ॥
एकस्य सकृच्च ॥ ५,४.१९ ॥
विभाषा बहोर्धाऽविप्रकृष्टकाले ॥ ५,४.२० ॥
तत्प्रकृतवचने मयट् ॥ ५,४.२१ ॥
समूहवच्च बहुषु ॥ ५,४.२२ ॥
अनन्तावसथेतिहभेषजाञ्ञ्यः ॥ ५,४.२३ ॥
देवतान्तात्तादर्थ्ये यत् ॥ ५,४.२४ ॥
पादार्घाभ्यां च ॥ ५,४.२५ ॥
अतिथेर्ञ्यः ॥ ५,४.२६ ॥
देवात्तल् ॥ ५,४.२७ ॥
अवेः कः ॥ ५,४.२८ ॥
यावादिभ्यः कन् ॥ ५,४.२९ ॥
लोहितान्मणौ ॥ ५,४.३० ॥
वर्णे चानित्ये ॥ ५,४.३१ ॥
रक्ते ॥ ५,४.३२ ॥
कालाच्च ॥ ५,४.३३ ॥
विनयादिभ्यष्ठक् ॥ ५,४.३४ ॥
वाचो व्याहृतार्थायाम् ॥ ५,४.३५ ॥
तद्युक्तात्कर्मणोऽण् ॥ ५,४.३६ ॥
ओषधेरजातौ ॥ ५,४.३७ ॥
प्रज्ञादिभ्यश्च ॥ ५,४.३८ ॥
मृदस्तिकन् ॥ ५,४.३९ ॥
सस्नौ प्रशंसायां ॥ ५,४.४० ॥
वृकज्येष्ठाभ्यां तिल्तातिलौ च छन्दसि ॥ ५,४.४१ ॥
बह्वल्पार्थाच्छस्कारकादन्यतरस्याम् ॥ ५,४.४२ ॥
सङ्ख्यैकवचनाच्च वीप्सायाम् ॥ ५,४.४३ ॥
प्रतियोगे पञ्चम्यास्तसिः ॥ ५,४.४४ ॥
अपादाने चाहीयरुहोः ॥ ५,४.४५ ॥
अतिग्रहाव्यथनक्षेपेष्वकर्तरि तृतीयायाः ॥ ५,४.४६ ॥
हीयमानपापयोगाच्च ॥ ५,४.४७ ॥
षष्ठ्या व्याश्रये ॥ ५,४.४८ ॥
रोगाच्चापनयने ॥ ५,४.४९ ॥
अभूततद्भावे कृभ्वस्तियोगे सम्पद्यकर्तरि च्विः ॥ ५,४.५० ॥
अरुर्मनश्चक्षुश्चेतोरहोरजसां लोपश्च ॥ ५,४.५१ ॥
विभाषा साति कार्त्स्न्ये ॥ ५,४.५२ ॥
अभिविधौ सम्पदा च ॥ ५,४.५३ ॥
तदधीनवचने ॥ ५,४.५४ ॥
देये त्रा च ॥ ५,४.५५ ॥
देवमनुष्यपुरुषपुरुमर्त्येभ्यो द्वितीयासप्तम्योर्बहुलम् ॥ ५,४.५६ ॥
अव्यक्तानुकरणाद्द्व्यजवरार्धादनितौ डाच् ॥ ५,४.५७ ॥
कृञो द्वितीयतृतीयशम्बबीजात्कृषौ ॥ ५,४.५८ ॥
सङ्ख्यायाश्च गुणान्तायाः ॥ ५,४.५९ ॥
समयाच्च यापनायाम् ॥ ५,४.६० ॥
सपत्रनिष्पत्रादतिव्यथने ॥ ५,४.६१ ॥
निष्कुलान्निष्कोषणे ॥ ५,४.६२ ॥
सुखप्रियादानुलोम्ये ॥ ५,४.६३ ॥

दुःखात्प्रातिलोम्ये ॥ ५,४.६४ ॥
शूलात्पाके ॥ ५,४.६५ ॥
सत्यादशपथे ॥ ५,४.६६ ॥
मद्रात्परिवापणे ॥ ५,४.६७ ॥
समासान्ताः ॥ ५,४.६८ ॥
न पूजनात् ॥ ५,४.६९ ॥
किमः क्षेपे ॥ ५,४.७० ॥
नञस्तत्पुरुषात् ॥ ५,४.७१ ॥
पथो विभाषा ॥ ५,४.७२ ॥
बहुव्रीहौ सङ्ख्येये डजबहुगणात् ॥ ५,४.७३ ॥
ऋक्पूरब्धूःपथामानक्षे ॥ ५,४.७४ ॥
अच्प्रत्यन्ववपूर्वात्सामलोम्नः ॥ ५,४.७५ ॥
अक्ष्णोऽदर्शनात् ॥ ५,४.७६ ॥
अचतुरविचतुरसुचतुरस्त्रीपुंसधेन्वनडुहर्क्षामवाङ्मनसाक्षिभ्रुवदारगवोर्वष्ठीवपदष्ठीवनक्तंदिवरात्रिंदिवाहर्दिवसरजसनिःश्रेयसपुरुषायुषद्व्यायुषत्र्यायुषर्ग्यजुषजातोक्षमहोक्षवृद्धोक्षोपशुनगोष्ठश्वाः ॥ ५,४.७७ ॥
ब्रह्महस्तिभ्यां वर्चसः ॥ ५,४.७८ ॥
अवसमन्धेभ्यस्तमसः ॥ ५,४.७९ ॥
श्वसो वसीयःश्रेयसः ॥ ५,४.८० ॥
अन्ववतप्ताद्रहसः ॥ ५,४.८१ ॥
प्रतेरुरसः सप्तमीस्थात् ॥ ५,४.८२ ॥
अनुगवमायामे ॥ ५,४.८३ ॥
द्विस्तावा तिस्त्रीवा वेदिः ॥ ५,४.८४ ॥
उपसर्गादध्वनः ॥ ५,४.८५ ॥
तत्पुरुषस्याङ्गुलेः सङ्ख्याव्ययादेः ॥ ५,४.८६ ॥
अहःसर्वैकदेशसङ्ख्यातपुण्याच्च रात्रेः ॥ ५,४.८७ ॥
अह्नोऽह्न एतेभ्यः ॥ ५,४.८८ ॥
न सङ्ख्यादेः समाहारे ॥ ५,४.८९ ॥
उत्तमैकाभ्यां च ॥ ५,४.९० ॥
राजाहःसखिभ्यष्टच् ॥ ५,४.९१ ॥
गोरतद्धितलुकि ॥ ५,४.९२ ॥
अग्राख्यायामुरसः ॥ ५,४.९३ ॥
अनोऽश्मायस्सरसां जातिसञ्ज्ञायोः ॥ ५,४.९४ ॥
ग्रामकौटाभ्यां च तक्ष्णः ॥ ५,४.९५ ॥
अतेः शुनः ॥ ५,४.९६ ॥
उअप्मानादप्राणिषु ॥ ५,४.९७ ॥
उत्तरमृगपूर्वाच्च सक्थ्नः ॥ ५,४.९८ ॥
नावो द्विगोः ॥ ५,४.९९ ॥
अर्धाच्च ॥ ५,४.१०० ॥
खार्याः प्राचाम् ॥ ५,४.१०१ ॥
द्वित्रिभ्यामञ्जलेः ॥ ५,४.१०२ ॥
अनसन्तान्नपुंसकाच्छन्दसि ॥ ५,४.१०३ ॥
ब्रह्मणो जानपदाख्यायाम् ॥ ५,४.१०४ ॥
कुमहद्भ्यामन्यतरस्याम् ॥ ५,४.१०५ ॥
द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात्समाहारे ॥ ५,४.१०६ ॥
अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः ॥ ५,४.१०७ ॥
अनश्च ॥ ५,४.१०८ ॥

नपुंसकादन्यतरस्याम् ॥ ५,४.१०९ ॥
नदी पौर्णमास्याग्रहायणीभ्यः ॥ ५,४.११० ॥
ज्ञयः ॥ ५,४.१११ ॥
गिरेश्च ॥ ५,४.११२ ॥
बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात्षच् ॥ ५,४.११३ ॥
अङ्गुलेर्दारुणि ॥ ५,४.११४ ॥
द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः ॥ ५,४.११५ ॥
अप्पूरणीप्रमाण्योः ॥ ५,४.११६ ॥
अन्तर्बहिर्भ्यां च लोम्नः ॥ ५,४.११७ ॥
अञ्नासिकायाः सञ्ज्ञायां नसं चास्थूलात् ॥ ५,४.११८ ॥
उपसर्गाच्च ॥ ५,४.११९ ॥
सुप्रातसुश्वसुदिवशारिकुक्षचतुरश्रैणीपदाजपदप्रोष्ठपदाः ॥ ५,४.१२० ॥
नञ्दुःसुभ्यो हलिसक्थ्योरन्यारस्याम् ॥ ५,४.१२१ ॥
नित्यमसिच्प्रजामेधयोः ॥ ५,४.१२२ ॥
बहुप्रजाश्छन्दसि ॥ ५,४.१२३ ॥
धर्मादनिच्केवलात् ॥ ५,४.१२४ ॥
जम्भा सुहरिततृणसोमेभ्यः ॥ ५,४.१२५ ॥
दक्षिणेर्मा लुब्धयोगे ॥ ५,४.१२६ ॥
इच्कर्मव्यतिहारे ॥ ५,४.१२७ ॥
द्विदण्ड्यादिभ्यश्च ॥ ५,४.१२८ ॥
प्रसंभ्यां जानुनोर्ज्ञुः ॥ ५,४.१२९ ॥
ऊर्ध्वाद्विभाषा ॥ ५,४.१३० ॥
ऊधसोऽनङ् ॥ ५,४.१३१ ॥
धनुषश्च ॥ ५,४.१३२ ॥
वा सञ्ज्ञायाम् ॥ ५,४.१३३ ॥
जायाया निङ् ॥ ५,४.१३४ ॥
गन्धस्य+इदुत्पूतिसुसुरभिभ्यः ॥ ५,४.१३५ ॥
अल्पाख्यायाम् ॥ ५,४.१३६ ॥
उपमानाच्च ॥ ५,४.१३७ ॥
पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः ॥ ५,४.१३८ ॥
कुम्भपदीषु च ॥ ५,४.१३९ ॥
सङ्ख्यासुपूर्वस्य ॥ ५,४.१४० ॥
वयसि दन्तस्य दतृ ॥ ५,४.१४१ ॥
छन्दसि च ॥ ५,४.१४२ ॥
स्त्रियां सञ्ज्ञायाम् ॥ ५,४.१४३ ॥
विभाषा श्यावारोकाभ्याम् ॥ ५,४.१४४ ॥
अग्रान्तशुद्धशुभ्रवृषवराहेभ्यश्च ॥ ५,४.१४५ ॥
ककुदस्यावस्थायां लोपः ॥ ५,४.१४६ ॥
त्रिककुत्पर्वते ॥ ५,४.१४७ ॥
उद्विभ्यां काकुदस्य ॥ ५,४.१४८ ॥
पूर्णाद्विभाषा ॥ ५,४.१४९ ॥
सुहृद्दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः ॥ ५,४.१५० ॥
उरःप्रभृतिभ्यः कप् ॥ ५,४.१५१ ॥
इनः स्त्रियाम् ॥ ५,४.१५२ ॥
नद्यृतश्च ॥ ५,४.१५३ ॥
शेषाद्विभाषा ॥ ५,४.१५४ ॥
न सञ्ज्ञायाम् ॥ ५,४.१५५ ॥

ईयसश्च ॥ ५,४.१५६ ॥
वन्दिते भ्रातुः ॥ ५,४.१५७ ॥
ऋतश्छन्दसि ॥ ५,४.१५८ ॥
नाडीतन्त्र्योः स्वाङ्गे ॥ ५,४.१५९ ॥
निष्प्रवाणिश्च ॥ ५,४.१६० ॥

एकाचो द्वे प्रथमस्य ॥ ६,१.१ ॥
अजादेर्द्वितीयस्य ॥ ६,१.२ ॥
न न्द्राः संयोगादयः ॥ ६,१.३ ॥
पूर्वोऽभ्यासः ॥ ६,१.४ ॥
उभे अभ्यस्तम् ॥ ६,१.५ ॥
जक्षित्यादयः षट् ॥ ६,१.६ ॥
तुजादीनां दीर्घोऽभ्यासस्य ॥ ६,१.७ ॥
लिटि धातोरनभ्यासस्य ॥ ६,१.८ ॥
सन्यङोः ॥ ६,१.९ ॥
श्लौ ॥ ६,१.१० ॥
चङि ॥ ६,१.११ ॥
दाश्वान् साह्वान्मीड्वांश्च ॥ ६,१.१२ ॥
ष्यङः सम्प्रसारणं पुत्रपत्योस्तत्पुरुषे ॥ ६,१.१३ ॥
बन्धुनि बहुव्रीहौ ॥ ६,१.१४ ॥
वचिस्वपियजादीनां किति ॥ ६,१.१५ ॥
ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च ॥ ६,१.१६ ॥
लिट्यभ्यासस्य+उभयेषाम् ॥ ६,१.१७ ॥
स्वापेश्चङि ॥ ६,१.१८ ॥
स्वपिस्यमिव्येञां यङि ॥ ६,१.१९ ॥
न वशः ॥ ६,१.२० ॥
चायः की ॥ ६,१.२१ ॥
स्फायः स्फी निष्ठायाम् ॥ ६,१.२२ ॥
स्त्यः प्रपूर्वस्य ॥ ६,१.२३ ॥
द्रवमूर्तिस्पर्शयोः श्यः ॥ ६,१.२४ ॥
प्रतेश्च ॥ ६,१.२५ ॥
विभाषाऽभ्यवपूर्वस्य ॥ ६,१.२६ ॥
शृतं पाके ॥ ६,१.२७ ॥
प्यायः पी ॥ ६,१.२८ ॥
लिड्यङोश्च ॥ ६,१.२९ ॥
विभाषा श्वेः ॥ ६,१.३० ॥
णौ च संश्चङोः ॥ ६,१.३१ ॥
ह्वः संप्रसारणम् ॥ ६,१.३२ ॥
अभ्यस्तस्य च ॥ ६,१.३३ ॥
बहुलं छन्दसि ॥ ६,१.३४ ॥
चायः की ॥ ६,१.३५ ॥
अपस्पृधेथामानृचुरानृहुश्चिच्युषेतित्याजश्राताः श्रितमाशीराशीर्ताः ॥ ६,१.३६ ॥
न सम्प्रसारणे सम्प्रसारणम् ॥ ६,१.३७ ॥
लिटि व्यो यः ॥ ६,१.३८ ॥
वश्चास्यान्यतरस्यां किति ॥ ६,१.३९ ॥
वेञः ॥ ६,१.४० ॥

ल्यपि च ॥ ६,१.४१ ॥
ज्यश्च ॥ ६,१.४२ ॥
व्यश्च ॥ ६,१.४३ ॥
विभाषा परेः ॥ ६,१.४४ ॥
आदेच उपदेशेऽशिति ॥ ६,१.४५ ॥
न व्यो लिटि ॥ ६,१.४६ ॥
स्फुरतिस्फुलत्योर्घञि ॥ ६,१.४७ ॥
क्रीङ्जीनां णौ ॥ ६,१.४८ ॥
सिध्यतेरपारलौकिके ॥ ६,१.४९ ॥
मीनातिमिनोतिदीङां ल्यपि च ॥ ६,१.५० ॥
विभाषा लीयतेः ॥ ६,१.५१ ॥
खिदेश्छन्दसि ॥ ६,१.५२ ॥
अपगुरो णमुलि ॥ ६,१.५३ ॥
चिस्फुरोर्णौ ॥ ६,१.५४ ॥
प्रजने वीयतेः ॥ ६,१.५५ ॥
बिभेतेर्हेतुभये ॥ ६,१.५६ ॥
नित्यं स्मयतेः ॥ ६,१.५७ ॥
सृजिदृशोर्झल्यमकिति ॥ ६,१.५८ ॥
अनुदात्तस्य च र्दुपधस्यान्यतरस्याम् ॥ ६,१.५९ ॥
शीर्षंश्छन्दसि ॥ ६,१.६० ॥
ये च तद्धिते ॥ ६,१.६१ ॥
अचि शीर्षः ॥ ६,१.६२ ॥
पद्दन्नोमास्हृन्निशसन्यूषन्दोषन्यकञ्छकन्नुदन्नासञ्छस्प्रभृतिषु ॥ ६,१.६३ ॥
धात्वादेः षः सः ॥ ६,१.६४ ॥
णो नः ॥ ६,१.६५ ॥
लोपो व्योर्वलि ॥ ६,१.६६ ॥
वेरपृक्तस्य ॥ ६,१.६७ ॥
हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् ॥ ६,१.६८ ॥
एङ्ह्रस्वात्सम्बुद्धेः ॥ ६,१.६९ ॥
शेः छन्दसि बहुलम् ॥ ६,१.७० ॥
ह्रस्वस्य पिति कृति तुक् ॥ ६,१.७१ ॥
संहितायाम् ॥ ६,१.७२ ॥
छे च ॥ ६,१.७३ ॥
आङ्माङोश्च ॥ ६,१.७४ ॥
दीर्घात् ॥ ६,१.७५ ॥
पदान्ताद्वा ॥ ६,१.७६ ॥
इको यणचि ॥ ६,१.७७ ॥
एचोऽयवायावः ॥ ६,१.७८ ॥
वान्तो यि प्रत्यये ॥ ६,१.७९ ॥
धातोस्तन्निमित्तस्य+एव ॥ ६,१.८० ॥
क्षय्यजय्यौ शक्यार्थे ॥ ६,१.८१ ॥
क्रय्यस्तदर्थे ॥ ६,१.८२ ॥
भय्यप्रवय्ये च च्छन्दसि ॥ ६,१.८३ ॥
एकः पूर्वपरयोः ॥ ६,१.८४ ॥
अन्तादिवच्च ॥ ६,१.८५ ॥
षत्वतुकोरसिद्धः ॥ ६,१.८६ ॥
आद्गुणः ॥ ६,१.८७ ॥

वृद्धिरेचि ॥ ६,१.८८ ॥
एत्येधत्यूठ्सु ॥ ६,१.८९ ॥
आटश्च ॥ ६,१.९० ॥
उपसर्गादृति धातौ ॥ ६,१.९१ ॥
वा सुप्यापिशलेः ॥ ६,१.९२ ॥
औतोऽम्शसोः ॥ ६,१.९३ ॥
एङि पररूपम् ॥ ६,१.९४ ॥
ओमाङोश्च ॥ ६,१.९५ ॥
उस्यपदान्तात् ॥ ६,१.९६ ॥
अतो गुणे ॥ ६,१.९७ ॥
अव्यक्तानुकरणस्यात इतौ ॥ ६,१.९८ ॥
न आम्रेडितस्यानत्यस्य तु वा ॥ ६,१.९९ ॥
नित्यमाम्रेडिते डाचि ॥ ६,१.१०० ॥
अकः सवर्णे दीर्घः ॥ ६,१.१०१ ॥
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः ॥ ६,१.१०२ ॥
तस्माच्छसो नः पुंसि ॥ ६,१.१०३ ॥
नादिचि ॥ ६,१.१०४ ॥
दीर्घाज्जसि च ॥ ६,१.१०५ ॥
वा छन्दसि ॥ ६,१.१०६ ॥
अमि पूर्वः ॥ ६,१.१०७ ॥
सम्प्रसारणाच्च ॥ ६,१.१०८ ॥
एङः पदान्तादति ॥ ६,१.१०९ ॥
ङसिङसोश्च ॥ ६,१.११० ॥
ऋत उत् ॥ ६,१.१११ ॥
ख्यत्यात्परस्य ॥ ६,१.११२ ॥
अतो रोरप्लुतादप्लुते ॥ ६,१.११३ ॥
हशि च ॥ ६,१.११४ ॥
प्रकृत्याऽन्तःपादमव्यपरे ॥ ६,१.११५ ॥
अव्यादवद्यादवक्रमुरव्रतायमवन्त्ववस्युसु च ॥ ६,१.११६ ॥
यजुष्युरः ॥ ६,१.११७ ॥
आपोजुषणोवृष्णोवर्षिष्ठेऽम्बेऽम्बालेऽम्बिकेपूर्वे ॥ ६,१.११८ ॥
अङ्ग इत्यादौ च ॥ ६,१.११९ ॥
अनुदात्ते च कुधपरे ॥ ६,१.१२० ॥
अवपथासि च ॥ ६,१.१२१ ॥
सर्वत्र विभाषा गोः ॥ ६,१.१२२ ॥
अवङ्स्फोटायनस्य ॥ ६,१.१२३ ॥
इन्द्रे च नित्यम् ॥ ६,१.१२४ ॥
प्लुतप्रगृह्या अचि ॥ ६,१.१२५ ॥
आङोऽनुनासिकश्छन्दसि ॥ ६,१.१२६ ॥
इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च ॥ ६,१.१२७ ॥
ऋत्यकः ॥ ६,१.१२८ ॥
अप्लुतवदुपस्थिते ॥ ६,१.१२९ ॥
ई३ चाक्रवर्मणस्य ॥ ६,१.१३० ॥
दिव उत् ॥ ६,१.१३१ ॥
एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि ॥ ६,१.१३२ ॥
स्यश्छन्दसि बहुलम् ॥ ६,१.१३३ ॥
सोऽचि लोपे चेत्पादपूरणम् ॥ ६,१.१३४ ॥

सुट्कात्पूर्वः ॥ ६,१.१३५ ॥
अडभ्यासव्यवायेऽपि ॥ ६,१.१३६ ॥
सम्पर्युपेभ्यः करोतौ भूषणे ॥ ६,१.१३७ ॥
समवाये च ॥ ६,१.१३८ ॥
उपात्प्रतियत्नवैकृतवाक्याध्याहारेसु ॥ ६,१.१३९ ॥
किरतौ लवने ॥ ६,१.१४० ॥
हिंसायां प्रतेश्च ॥ ६,१.१४१ ॥
अपाच्चतुष्पाच्छकुनिष्वालेखने ॥ ६,१.१४२ ॥
कुस्तुम्बुरूणि जातिः ॥ ६,१.१४३ ॥
अपरस्पराः क्रियासातत्ये ॥ ६,१.१४४ ॥
गोष्पदं सेवितासेवितप्रमाणेसु ॥ ६,१.१४५ ॥
आस्पदं प्रतिष्ठायाम् ॥ ६,१.१४६ ॥
आश्चर्यमनित्ये ॥ ६,१.१४७ ॥
वर्चस्केऽवस्करः ॥ ६,१.१४८ ॥
अपस्करो रथाङ्गम् ॥ ६,१.१४९ ॥
विष्किरः शकुन्निर्विकिरो वा ॥ ६,१.१५० ॥
ह्रस्वाच्चन्द्रोत्तरपदे मन्त्रे ॥ ६,१.१५१ ॥
प्रतिष्कशश्च कशेः ॥ ६,१.१५२ ॥
प्रस्कण्वहरिश्चन्द्रावृषी ॥ ६,१.१५३ ॥
मस्करमस्करिणौ वेणुपरिव्राजकयोः ॥ ६,१.१५४ ॥
कास्तीराजस्तुन्दे नगरे ॥ ६,१.१५५ ॥
कारस्करो वृक्षः ॥ ६,१.१५६ ॥
पारस्करप्रभृतीनि च सञ्ज्ञायाम् ॥ ६,१.१५७ ॥
अनुदात्तं पदमेकवर्जम् ॥ ६,१.१५८ ॥
कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः ॥ ६,१.१५९ ॥
उच्छादीनां च ॥ ६,१.१६० ॥
अनुदात्तस्य च यत्र+उदात्तलोपः ॥ ६,१.१६१ ॥
धातोः ॥ ६,१.१६२ ॥
चितः ॥ ६,१.१६३ ॥
तद्धितस्य ॥ ६,१.१६४ ॥
कितः ॥ ६,१.१६५ ॥
तिसृभ्यो जसः ॥ ६,१.१६६ ॥
चतुरः शसि ॥ ६,१.१६७ ॥
सावेकाचस्तृतीयादिर्विभक्तिः ॥ ६,१.१६८ ॥
अन्तोदात्तादुत्तरपदादन्यतरस्यामनित्यसमासे ॥ ६,१.१६९ ॥
अञ्चेश्छन्दस्यसर्वनामस्थानम् ॥ ६,१.१७० ॥
ऊडिदंपदाद्यप्पुम्रैद्युभ्यः ॥ ६,१.१७१ ॥
अष्टनो दीर्घात् ॥ ६,१.१७२ ॥
शतुरनुमो नद्यजादी ॥ ६,१.१७३ ॥
उदात्तयणो हल्पूर्वात् ॥ ६,१.१७४ ॥
न+उङ्धात्वोः ॥ ६,१.१७५ ॥
ह्रस्वनुड्भ्यां मतुप् ॥ ६,१.१७६ ॥
नामन्यतरस्याम् ॥ ६,१.१७७ ॥
ङ्याश्छन्दसि बहुलम् ॥ ६,१.१७८ ॥
षट्त्रिचतुर्भ्यो हलादिः ॥ ६,१.१७९ ॥
झल्युपोत्तमम् ॥ ६,१.१८० ॥
विभाषा भाषायाम् ॥ ६,१.१८१ ॥

न गोश्वन्साववर्णराडङ्क्रुङ्कृद्भ्यः ॥ ६,१.१८२ ॥
दिवो झल् ॥ ६,१.१८३ ॥
नृ चान्यतरस्याम् ॥ ६,१.१८४ ॥
तित्स्वरितम् ॥ ६,१.१८५ ॥
तास्यनुदात्तेन्ङिददुपदेशाल्लसार्वधातुकमनुदात्तमह्न्विङोः ॥ ६,१.१८६ ॥
आदिः सिचोऽन्यतरस्याम् ॥ ६,१.१८७ ॥
स्वपादिहिंसामच्यनिटि ॥ ६,१.१८८ ॥
अभ्यस्तानामादिः ॥ ६,१.१८९ ॥
अनुदात्ते च ॥ ६,१.१९० ॥
सर्वस्य सुपि ॥ ६,१.१९१ ॥
भीह्रीभृहुमदजनधनदरिद्राजागरां प्रत्ययात्पूर्वं पिति ॥ ६,१.१९२ ॥
लिति ॥ ६,१.१९३ ॥
आदिर्णमुल्यन्यतरस्याम् ॥ ६,१.१९४ ॥
अचः कर्तृयकि ॥ ६,१.१९५ ॥
थलि च सेटीडन्तो वा ॥ ६,१.१९६ ॥
ञ्नित्यादिर्नित्यम् ॥ ६,१.१९७ ॥
आमन्त्रितस्य च ॥ ६,१.१९८ ॥
पथिमथोः सर्वनामस्थाने ॥ ६,१.१९९ ॥
अन्तश्च तवै युगपत् ॥ ६,१.२०० ॥
क्षयो निवासे ॥ ६,१.२०१ ॥
जयः करणम् ॥ ६,१.२०२ ॥
वृषादीनां च ॥ ६,१.२०३ ॥
सञ्ज्ञायामुपमानम् ॥ ६,१.२०४ ॥
निष्ठा च द्व्यजनात् ॥ ६,१.२०५ ॥
शुष्कधृष्टौ ॥ ६,१.२०६ ॥
आशितः कर्ता ॥ ६,१.२०७ ॥
रिक्ते विभाषा ॥ ६,१.२०८ ॥
जुष्टार्पिते च च्छन्दसि ॥ ६,१.२०९ ॥
नित्यं मन्त्रे ॥ ६,१.२१० ॥
युष्मदस्मदोर्ङसि ॥ ६,१.२११ ॥
ङयि च ॥ ६,१.२१२ ॥
यतोऽनावः ॥ ६,१.२१३ ॥
ईडवन्दवृशंसदुहां ण्यतः ॥ ६,१.२१४ ॥
विभाषा वेण्विन्धानयोः ॥ ६,१.२१५ ॥
त्यागरागहासकुहश्वठक्रथानाम् ॥ ६,१.२१६ ॥
उपोत्तमं रिति ॥ ६,१.२१७ ॥
चङ्यन्यतरस्याम् ॥ ६,१.२१८ ॥
मतोः पूर्वमात्सञ्ज्ञायां स्त्रियाम् ॥ ६,१.२१९ ॥
अन्तोऽवत्याः ॥ ६,१.२२० ॥
ईवत्याः ॥ ६,१.२२१ ॥
चौ ॥ ६,१.२२२ ॥
समासस्य ॥ ६,१.२२३ ॥

बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् ॥ ६,२.१ ॥
तत्पुरुषे तुल्यार्थतृतीयासप्तम्युपमानाव्ययद्वितीयाकृत्याः ॥ ६,२.२ ॥
वर्णो वर्णेष्वनेते ॥ ६,२.३ ॥
गाधलवणयोः प्रमाणे ॥ ६,२.४ ॥

दायाद्यं दायादे ॥ ६,२.५ ॥
प्रतिबन्धि चिरकृच्छ्रयोः ॥ ६,२.६ ॥
पदेऽपदेशे ॥ ६,२.७ ॥
निवाते वातत्राणे ॥ ६,२.८ ॥
शारदेऽनार्तवे ॥ ६,२.९ ॥
अध्वर्युकषाययोर्जातौ ॥ ६,२.१० ॥
सदृशप्रतिरूपयोः सादृश्ये ॥ ६,२.११ ॥
द्विगौ प्रमाणे ॥ ६,२.१२ ॥
गन्तव्यपण्य वाणिजे ॥ ६,२.१३ ॥
मात्रोपज्ञोपक्रमच्छाये नपुंसके ॥ ६,२.१४ ॥
सुखप्रिययोर्हिते ॥ ६,२.१५ ॥
प्रीतौ च ॥ ६,२.१६ ॥
स्वं स्वामिनि ॥ ६,२.१७ ॥
पत्यावैश्वर्ये ॥ ६,२.१८ ॥
न भूवाक्चिद्दिधिषु ॥ ६,२.१९ ॥
वा भूवनम् ॥ ६,२.२० ॥
आशङ्काबाधनेदीयस्सु सम्भावने ॥ ६,२.२१ ॥
पूर्वे भूतपूर्वे ॥ ६,२.२२ ॥
सविधसनीडसमर्यादसवेशसदेशेषु सामीप्ये ॥ ६,२.२३ ॥
विस्पष्टादीनि गुणवचनेषु ॥ ६,२.२४ ॥
श्रज्यावमकन्पापवत्सु भावे कर्मधारये ॥ ६,२.२५ ॥
कुमारश्च ॥ ६,२.२६ ॥
आदिः प्रत्येनसि ॥ ६,२.२७ ॥
पूगेष्वन्यतरस्याम् ॥ ६,२.२८ ॥
इगन्तकालकपालभगालशरावेषु द्विगौ ॥ ६,२.२९ ॥
बह्वन्यतरस्याम् ॥ ६,२.३० ॥
दिष्टिवितस्त्योश्च ॥ ६,२.३१ ॥
सप्तमी सिद्धशुष्कपक्वबन्धेष्वकालात् ॥ ६,२.३२ ॥
परिप्रत्युपापा वर्ज्यमानाहोरात्रावयवेषु ॥ ६,२.३३ ॥
राजन्यबहुवचनद्वन्द्वेऽन्धकवृष्णिषु ॥ ६,२.३४ ॥
सङ्ख्या ॥ ६,२.३५ ॥
आचार्योपसर्जनश्चान्तेवासी ॥ ६,२.३६ ॥
कार्तकौजपादयश्च ॥ ६,२.३७ ॥
महान् व्रीह्यपराह्णगृष्टीष्वासजाबालभारभारतहैलिहिलरौरवप्रवृद्धेषु ॥ ६,२.३८ ॥
क्षुल्लकश्च वैश्वदेवे ॥ ६,२.३९ ॥
उष्ट्रः सादिवाम्योः ॥ ६,२.४० ॥
गौः सादसादिसारथिषु ॥ ६,२.४१ ॥
कुरुगार्हपतरिक्तगुर्वसूतजरत्यश्लीलदृढरूपापारेवडवातैतिलकद्रूपण्यकम्बलो दासीभाराणां च ॥ ६,२.४२ ॥
चतुर्थी तदर्थे ॥ ६,२.४३ ॥
अर्थे ॥ ६,२.४४ ॥
क्ते च ॥ ६,२.४५ ॥
कर्मधारयेऽनिष्ठा ॥ ६,२.४६ ॥
अहीने द्वितीया ॥ ६,२.४७ ॥
तृतीया कर्मणि ॥ ६,२.४८ ॥
गतिरनन्तरः ॥ ६,२.४९ ॥
तादौ च निति कृत्यतौ ॥ ६,२.५० ॥

तवै चान्तश्च युगपत् ॥ ६,२.५१ ॥
अनिगन्तोऽञ्चतौ वप्रत्यये ॥ ६,२.५२ ॥
न्यधी च ॥ ६,२.५३ ॥
ईषदन्यतरस्याम् ॥ ६,२.५४ ॥
हिरण्यपरिमाणं धने ॥ ६,२.५५ ॥
प्रथमोऽचिरोपसम्पत्तौ ॥ ६,२.५६ ॥
कतरकतमौ कर्मधारये ॥ ६,२.५७ ॥
आयी ब्राह्मणकुमारयोः ॥ ६,२.५८ ॥
राजा च ॥ ६,२.५९ ॥
षष्ठी प्रत्येनसि ॥ ६,२.६० ॥
क्ते नित्यार्थे ॥ ६,२.६१ ॥
ग्रामः शिल्पिनि ॥ ६,२.६२ ॥
राजा च प्रशंसायाम् ॥ ६,२.६३ ॥
आदिरुदात्तः ॥ ६,२.६४ ॥
सप्तमीहारिणौ धर्म्येऽहरणे ॥ ६,२.६५ ॥
युक्ते च ॥ ६,२.६६ ॥
विभाषा अध्यक्षे ॥ ६,२.६७ ॥
पापं च शिल्पिनि ॥ ६,२.६८ ॥
गोत्रान्तेवासिमानवब्राह्मणेसु क्षेपे ॥ ६,२.६९ ॥
अङ्गानि मैरेये ॥ ६,२.७० ॥
भक्ताख्यास्तदर्थेषु ॥ ६,२.७१ ॥
गोबिडालसिंहसैन्धवेषु उपमाने ॥ ६,२.७२ ॥
अके जीविकार्थे ॥ ६,२.७३ ॥
प्राचां क्रीडायां ॥ ६,२.७४ ॥
अणि नियुक्ते ॥ ६,२.७५ ॥
शिल्पिनि चाकृञः ॥ ६,२.७६ ॥
सञ्ज्ञायां च ॥ ६,२.७७ ॥
गोतन्तियवं पाले ॥ ६,२.७८ ॥
णिनि ॥ ६,२.७९ ॥
उपमनं शब्दार्थप्रकृतावेव ॥ ६,२.८० ॥
युक्तारोह्यादयश्च ॥ ६,२.८१ ॥
दीर्घकाशतुषभ्राष्ट्रवटं जे ॥ ६,२.८२ ॥
अन्त्यात्पूर्वं बह्वचः ॥ ६,२.८३ ॥
ग्रामेऽनिवसन्तः ॥ ६,२.८४ ॥
घोषादिषु च ॥ ६,२.८५ ॥
छात्र्यादयः शालायाम् ॥ ६,२.८६ ॥
प्रस्थेऽवृद्धमकर्क्यादीनाम् ॥ ६,२.८७ ॥
मालादीनां च ॥ ६,२.८८ ॥
अमहन्नवं नगरेऽनुदीचाम् ॥ ६,२.८९ ॥
अर्मे चावर्णं द्व्यच्त्र्यच् ॥ ६,२.९० ॥
न भूताधिकसञ्जीवमद्राश्मकज्जलम् ॥ ६,२.९१ ॥
अन्तः ॥ ६,२.९२ ॥
व्क्ष्यति सर्वं गुणकार्त्स्न्ये ॥ ६,२.९३ ॥
सञ्ज्ञायां गिरिनिकाययोः ॥ ६,२.९४ ॥
कुमार्यां वयसि ॥ ६,२.९५ ॥
उदकेऽकेवले ॥ ६,२.९६ ॥
द्विगौ क्रतौ ॥ ६,२.९७ ॥

सभायां नपुंसके ॥ ६,२.९८ ॥
पुरे प्राचाम् ॥ ६,२.९९ ॥
अरिष्टगौडपूर्वे च ॥ ६,२.१०० ॥
न हास्तिनफलकमार्देयाः ॥ ६,२.१०१ ॥
कुसूलकूपकुम्भशालं बिले ॥ ६,२.१०२ ॥
दिक्शब्दा ग्रामजनपदाख्यानचानराटेषु ॥ ६,२.१०३ ॥
आचार्योपसर्जनश्चान्तेवासिनि ॥ ६,२.१०४ ॥
उत्तरपदवृद्धौ सर्वं च ॥ ६,२.१०५ ॥
बहुव्रीहौ विश्वं सञ्ज्ञायां ॥ ६,२.१०६ ॥
उदराश्वेषुषु ॥ ६,२.१०७ ॥
क्षेपे ॥ ६,२.१०८ ॥
नदी बन्धुनि ॥ ६,२.१०९ ॥
निष्ठोपसर्गपूर्वमन्यतरस्याम् ॥ ६,२.११० ॥
उत्तरपदादिः ॥ ६,२.१११ ॥
कर्णो वर्णलक्षणात् ॥ ६,२.११२ ॥
सञ्ज्ञाउपम्ययोश्च ॥ ६,२.११३ ॥
कण्ठपृष्ठग्रीवाजङ्घं च ॥ ६,२.११४ ॥
शृङ्गमवस्थायां च ॥ ६,२.११५ ॥
नञो जरमरमित्रमृताः ॥ ६,२.११६ ॥
सोर्मनसी अलोमोषसी ॥ ६,२.११७ ॥
क्रत्वादयश्च ॥ ६,२.११८ ॥
आद्युदात्तं द्व्यच्छन्दसि ॥ ६,२.११९ ॥
वीरवीर्यौ च ॥ ६,२.१२० ॥
कूलतीरतूलमूलशालाक्षसममव्ययीभावे ॥ ६,२.१२१ ॥
किंसमन्थशूर्पपाय्यकाण्डं द्विगौ ॥ ६,२.१२२ ॥
तत्पुरुषे शालायां नपुंसके ॥ ६,२.१२३ ॥
कन्था च ॥ ६,२.१२४ ॥
आदिश्चिहणादीनां ॥ ६,२.१२५ ॥
चेलखेटकटुककाण्डं गर्हायाम् ॥ ६,२.१२६ ॥
चीरमुपमानम् ॥ ६,२.१२७ ॥
पललसूपशाकं मिश्रे ॥ ६,२.१२८ ॥
कूलसूदस्थलकर्षाः सञ्ज्ञायाम् ॥ ६,२.१२९ ॥
अकर्मधारये राज्यम् ॥ ६,२.१३० ॥
वर्ग्यादयश्च ॥ ६,२.१३१ ॥
पुत्रः पुम्भ्यः ॥ ६,२.१३२ ॥
न आचार्यराजर्त्विक्संयुक्तज्ञात्याख्येभ्यः ॥ ६,२.१३३ ॥
चूर्णादीन्यप्राणिषष्ठ्याः ॥ ६,२.१३४ ॥
षट्च काण्डादीनि ॥ ६,२.१३५ ॥
कुण्डं वनम् ॥ ६,२.१३६ ॥
प्रकृत्या भगालम् ॥ ६,२.१३७ ॥
शितेर्नित्याबह्वज्बहुव्रीहावभसत् ॥ ६,२.१३८ ॥
गतिकारकोपपदात्कृत् ॥ ६,२.१३९ ॥
उभे वनस्पत्यादिषु युगपत् ॥ ६,२.१४० ॥
देवताद्वन्द्वे च ॥ ६,२.१४१ ॥
न+उत्तरपदेऽनुदात्तादावपृथिवीरुद्रपूषमन्थिषु ॥ ६,२.१४२ ॥
अन्तः ॥ ६,२.१४३ ॥
थाथघञ्क्ताजबित्रकाणाम् ॥ ६,२.१४४ ॥

सूपमानात्क्तः ॥ ६,२.१४५ ॥
सञ्ज्ञायामनाचितादीनाम् ॥ ६,२.१४६ ॥
प्रवृद्धादीनां च ॥ ६,२.१४७ ॥
कारकाद्दत्तश्रुतयोरेव आशिषि ॥ ६,२.१४८ ॥
इत्थंभूतेन कृतमिति च ॥ ६,२.१४९ ॥
अनो भावकर्मवचनः ॥ ६,२.१५० ॥
मन्क्तिन्व्याख्यानशयनासनस्थानयाजकादिक्रीताः ॥ ६,२.१५१ ॥
सप्तम्याः पुण्यम् ॥ ६,२.१५२ ॥
ऊनार्थकलहं तृतीआयाः ॥ ६,२.१५३ ॥
मिश्रं चानुपसर्गमसन्धौ ॥ ६,२.१५४ ॥
नञो गुणप्रतिषेधे सम्पाद्यर्हहितालमर्थास्तद्धिताः ॥ ६,२.१५५ ॥
ययतोश्चातदर्थे ॥ ६,२.१५६ ॥
अच्कावशक्तौ ॥ ६,२.१५७ ॥
आक्रोशे च ॥ ६,२.१५८ ॥
सञ्ज्ञायाम् ॥ ६,२.१५९ ॥
कृत्योकेष्णुच्चार्वादयश्च ॥ ६,२.१६० ॥
विभाषा तृन्नन्नतीक्ष्णशुचिषु ॥ ६,२.१६१ ॥
बहुव्रीहाविदमेतत्तद्भ्यः प्रथमपूरनयोः क्रियागणने ॥ ६,२.१६२ ॥
सङ्ख्यायाः स्तनः ॥ ६,२.१६३ ॥
विभाषा ॥ ६,२.१६४ ॥
सञ्ज्ञायां मित्राजिनयोः ॥ ६,२.१६५ ॥
व्यवायिनोऽन्तरम् ॥ ६,२.१६६ ॥
मुखं स्वाङ्गं ॥ ६,२.१६७ ॥
नाव्ययदिक्शब्दगोमहत्स्थूलमुष्टिपृथुवत्सेभ्यः ॥ ६,२.१६८ ॥
निष्ठोपमानादन्यतरस्याम् ॥ ६,२.१६९ ॥
जातिकालसुखादिभ्योऽनाच्छादनात्क्तोऽकृतमितप्रतिपन्नाः ॥ ६,२.१७० ॥
वा जाते ॥ ६,२.१७१ ॥
नञ्सुभ्याम् ॥ ६,२.१७२ ॥
कपि पूर्वम् ॥ ६,२.१७३ ॥
ह्रस्वान्तेऽन्त्यात्पूर्वम् ॥ ६,२.१७४ ॥
बहोर्नञ्वदुत्तरपदभूम्नि ॥ ६,२.१७५ ॥
न गुणादयोऽवयवाः ॥ ६,२.१७६ ॥
उपसर्गात्स्वाङ्गं ध्रुवमपर्शु ॥ ६,२.१७७ ॥
वनं समासे ॥ ६,२.१७८ ॥
अन्तः ॥ ६,२.१७९ ॥
अन्तश्च ॥ ६,२.१८० ॥
न निविभ्याम् ॥ ६,२.१८१ ॥
परेरभितोभावि मण्डलम् ॥ ६,२.१८२ ॥
प्रादस्वङ्गं सञ्ज्ञायाम् ॥ ६,२.१८३ ॥
निरुदकादीनि च ॥ ६,२.१८४ ॥
अभेर्मुखम् ॥ ६,२.१८५ ॥
अपाच्च ॥ ६,२.१८६ ॥
स्फिगपूतवीणाञ्जोऽध्वकुक्षिसीरनामनाम च ॥ ६,२.१८७ ॥
अधेरुपरिस्थम् ॥ ६,२.१८८ ॥
अनोरप्रधानकनीयसी ॥ ६,२.१८९ ॥
पुरुषश्चान्वादिष्टः ॥ ६,२.१९० ॥
अतेरकृत्पदे ॥ ६,२.१९१ ॥

नेरनिधाने ॥ ६,२.१९२ ॥
प्रतेरंश्वादयस्तत्पुरुषे ॥ ६,२.१९३ ॥
उपाद्द्व्यजजिनमगौरादयः ॥ ६,२.१९४ ॥
सोरवक्षेपणे ॥ ६,२.१९५ ॥
विभाषा+उत्पुच्छे ॥ ६,२.१९६ ॥
द्वित्रिभ्यां पाद्दन्मूर्धसु बहुव्रीहौ ॥ ६,२.१९७ ॥
सक्थं चाक्रान्तात् ॥ ६,२.१९८ ॥
परादिश्छन्दसि बहुलम् ॥ ६,२.१९९ ॥

अलुगुत्तरपदे ॥ ६,३.१ ॥
पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः ॥ ६,३.२ ॥
ओजःसहोऽम्भस्तमसस्तृतीयायाः ॥ ६,३.३ ॥
मनसः सञ्ज्ञायाम् ॥ ६,३.४ ॥
आज्ञायिनि च ॥ ६,३.५ ॥
आत्मनश्च पूरणे ॥ ६,३.६ ॥
वैयाकरणाख्यायां चतुर्थ्याः ॥ ६,३.७ ॥
परस्य च ॥ ६,३.८ ॥
हलदन्तात्सप्तम्याः सञ्ज्ञायाम् ॥ ६,३.९ ॥
कारनाम्नि च प्राचां हलादौ ॥ ६,३.१० ॥
मध्याद्गुरौ ॥ ६,३.११ ॥
अमूर्धमस्तकात्स्वाङ्गादकामे ॥ ६,३.१२ ॥
बन्धे च विभाषा ॥ ६,३.१३ ॥
तत्पुरुषे कृति बहुलम् ॥ ६,३.१४ ॥
प्रावृट्शरत्कालदिवां जे ॥ ६,३.१५ ॥
विभाषा ॥ ६,३.१६ ॥
घकालतनेसु कालनाम्नः ॥ ६,३.१७ ॥
शयवासवासिष्वकलात् ॥ ६,३.१८ ॥
नेन्सिद्धबध्नातिषु च ॥ ६,३.१९ ॥
स्थे च भाषायाम् ॥ ६,३.२० ॥
षष्ठ्या आक्रोशे ॥ ६,३.२१ ॥
पुत्रेऽन्यतरस्याम् ॥ ६,३.२२ ॥
ऋतो विद्यायोनिसम्बन्धेभ्यः ॥ ६,३.२३ ॥
विभाषा स्वसृपत्योः ॥ ६,३.२४ ॥
अनङृतो द्वन्द्वे ॥ ६,३.२५ ॥
देवताद्वन्द्वे च ॥ ६,३.२६ ॥
ईदग्नेः सोमवरुणयोः ॥ ६,३.२७ ॥
इद्वृद्धौ ॥ ६,३.२८ ॥
देवो द्यावा ॥ ६,३.२९ ॥
दिवसश्च पृथिव्याम् ॥ ६,३.३० ॥
उषासोषसः ॥ ६,३.३१ ॥
मातरपितरावुदीचम् ॥ ६,३.३२ ॥
पितरामातरा च च्छन्दसि ॥ ६,३.३३ ॥
स्त्रियाः पुंवद्भाषीतपुंस्कादनूङ्समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु ॥ ६,३.३४ ॥
तसिलादिष्वा कृत्वसुचः ॥ ६,३.३५ ॥
क्यङ्मानिनोश्च ॥ ६,३.३६ ॥
न कोपधायाः ॥ ६,३.३७ ॥
सञ्ज्ञापूरण्योश्च ॥ ६,३.३८ ॥

वृद्धिनिमित्तस्य च तद्धितस्यारक्तविकारे ॥ ६,३.३९ ॥
स्वाङ्गाच्च+इतोऽमानिनि ॥ ६,३.४० ॥
जातेश्च ॥ ६,३.४१ ॥
पुंवत्कर्मधारयजातीयदेशीयेषु ॥ ६,३.४२ ॥
घरूपकल्पचेलड्ब्रुवगोत्रमतहतेषु ङ्योऽनेकाचो ह्रस्वः ॥ ६,३.४३ ॥
नद्याः शेषस्यान्यतरस्याम् ॥ ६,३.४४ ॥
उगितश्च ॥ ६,३.४५ ॥
आन्महतः समानाधिकरनजातीययोः ॥ ६,३.४६ ॥
द्व्यष्टनः सङ्ख्यायामबहुव्रीह्यशीत्योः ॥ ६,३.४७ ॥
त्रेस्त्रयः ॥ ६,३.४८ ॥
विभाषा चत्वारिंशत्प्रभृतौ सर्वेषाम् ॥ ६,३.४९ ॥
हृदयस्य हृल्लेखयदण्लासेषु ॥ ६,३.५० ॥
वा शोकष्यञ्रोगेषु ॥ ६,३.५१ ॥
पादस्य पदाज्यातिगोपहतेसु ॥ ६,३.५२ ॥
पद्यत्यतदर्थे ॥ ६,३.५३ ॥
हिमकाषिहतिसु च ॥ ६,३.५४ ॥
ऋचः शे ॥ ६,३.५५ ॥
वा घोषमिश्रशब्देषु ॥ ६,३.५६ ॥
उदकस्य+उदः सञ्ज्ञायाम् ॥ ६,३.५७ ॥
पेषम्वासवाहनधिषु च ॥ ६,३.५८ ॥
एकहलादौ पूरयितव्येऽन्यतरस्याम् ॥ ६,३.५९ ॥
मन्थौदनसक्तुबिन्दुवज्रभारहारवीवधगाहेषु च ॥ ६,३.६० ॥
इको ह्रस्वोऽङ्यो गालवस्य ॥ ६,३.६१ ॥
एक तद्धिते च ॥ ६,३.६२ ॥
ङ्यापोः सञ्ज्ञाछन्दसोर्बहुलम् ॥ ६,३.६३ ॥
त्वे च ॥ ६,३.६४ ॥
इष्टकेषीकामालानां चिततूलभारिषु ॥ ६,३.६५ ॥
खित्यनव्ययस्य ॥ ६,३.६६ ॥
अरुर्द्विषदजन्तस्य मुम् ॥ ६,३.६७ ॥
इच एकाचोऽम्प्रत्ययवच्च ॥ ६,३.६८ ॥
वाचंयमपुरन्दरौ च ॥ ६,३.६९ ॥
कारे सत्यागदस्य ॥ ६,३.७० ॥
श्येनतिलस्य पाते ञे ॥ ६,३.७१ ॥
रात्रेः कृति विभाषा ॥ ६,३.७२ ॥
नलोपो नञः ॥ ६,३.७३ ॥
तस्मान्नुडचि ॥ ६,३.७४ ॥
नभ्राण्नपान्नवेदानासत्यानमुचिनकुलनखनपुंसकनक्षत्रनक्रनाकेषु प्रकृत्या ॥ ६,३.७५ ॥
एकादिश्च+एकस्य च आदुक् ॥ ६,३.७६ ॥
नगोऽप्राणिष्वन्यतरस्याम् ॥ ६,३.७७ ॥
सहस्य सः सञ्ज्ञायाम् ॥ ६,३.७८ ॥
ग्रन्थान्ताधिके च ॥ ६,३.७९ ॥
द्वितीये चानुपाख्ये ॥ ६,३.८० ॥
अव्ययीभावे चाकाले ॥ ६,३.८१ ॥
वा+उपसर्जनस्य ॥ ६,३.८२ ॥
प्रकृत्या आशिष्यगोवत्सहलेषु ॥ ६,३.८३ ॥
समानस्य छन्दस्यपूर्धप्रभृत्युदर्केषु ॥ ६,३.८४ ॥
ज्योतिर्जनपदरात्रिनाभिनामगोत्ररूपस्थानवर्णवयीवचनबन्धुषु ॥ ६,३.८५ ॥

चरणे ब्रह्मचारिणि ॥ ६,३.८६ ॥
तीर्थे ये ॥ ६,३.८७ ॥
विभाषा+उदरे ॥ ६,३.८८ ॥
दृग्दृशवतुषु ॥ ६,३.८९ ॥
इदं किमोरीश्की ॥ ६,३.९० ॥
आ सर्वनाम्नः ॥ ६,३.९१ ॥
विष्वग्देवयोश्च टेरद्र्यञ्चतौ वप्रत्यये ॥ ६,३.९२ ॥
समः समि ॥ ६,३.९३ ॥
तिरसस्तिर्यलोपे ॥ ६,३.९४ ॥
सहस्य सध्रिः ॥ ६,३.९५ ॥
सध मादस्थयोश्छन्दसि ॥ ६,३.९६ ॥
द्व्यन्तरुपसर्गेभ्योऽप ईत् ॥ ६,३.९७ ॥
ऊदनोर्देशे ॥ ६,३.९८ ॥
अषष्ठ्यतृतीयास्थस्यानयस्य दुगाशीराशास्थास्थितोत्सुकोतिकारकरागच्छेषु ॥ ६,३.९९ ॥
अर्थे विभाषा ॥ ६,३.१०० ॥
कोः कत्तत्पुरुषेऽचि ॥ ६,३.१०१ ॥
रथवदयोश्च ॥ ६,३.१०२ ॥
तृणे च जातौ ॥ ६,३.१०३ ॥
का पथ्यक्षयोः ॥ ६,३.१०४ ॥
ईषदर्थे च ॥ ६,३.१०५ ॥
विभाषा पुरुषे ॥ ६,३.१०६ ॥
कवञ्चोष्णे ॥ ६,३.१०७ ॥
पथि च च्छन्दसि ॥ ६,३.१०८ ॥
पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम् ॥ ६,३.१०९ ॥
सङ्ख्याविसायपूर्वस्याह्नस्याहन्नन्यतरस्यां ङौ ॥ ६,३.११० ॥
ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः ॥ ६,३.१११ ॥
सहिवहोरोदवर्णस्य ॥ ६,३.११२ ॥
साढ्यै साढ्वा साढ+इति निगमे ॥ ६,३.११३ ॥
संहितायाम् ॥ ६,३.११४ ॥
कर्णे लक्षणस्याविष्टाष्टपञ्चमणिभिन्नच्छिन्नच्छिद्रस्रुवस्वस्तिकस्य ॥ ६,३.११५ ॥
नहिवृतिवृषिव्यधिरुचिसहितनिषु क्वौ ॥ ६,३.११६ ॥
वनगिर्योः सञ्ज्ञायां कोटरकिंशुलुकादीनाम् ॥ ६,३.११७ ॥
वले ॥ ६,३.११८ ॥
मतौ बह्वचोऽनजिरादीनाम् ॥ ६,३.११९ ॥
शरादीनां च ॥ ६,३.१२० ॥
इको वहेऽपीलोः ॥ ६,३.१२१ ॥
उपसर्गस्य घञ्यमनुष्ये बहुलम् ॥ ६,३.१२२ ॥
इकः काशे ॥ ६,३.१२३ ॥
दस्ति ॥ ६,३.१२४ ॥
अष्टनः सञ्ज्ञायाम् ॥ ६,३.१२५ ॥
छन्दसि च ॥ ६,३.१२६ ॥
चितेः कपि ॥ ६,३.१२७ ॥
विश्वस्य वसुराटोः ॥ ६,३.१२८ ॥
नरे सञ्ज्ञायाम् ॥ ६,३.१२९ ॥
मित्रे चर्षौ ॥ ६,३.१३० ॥
मन्त्रे सोमाश्वेन्द्रियविश्वदेव्यस्य मतौ ॥ ६,३.१३१ ॥
ओषधेश्च विभक्तावप्रथमायाम् ॥ ६,३.१३२ ॥

ऋचि तुनुघमक्षुतङ्कुत्रोरुष्याणाम् ॥ ६,३.१३३ ॥
इकः सुञि ॥ ६,३.१३४ ॥
द्व्यचोऽतस्तिङः ॥ ६,३.१३५ ॥
निपातस्य च ॥ ६,३.१३६ ॥
अन्येषामपि दृश्यते ॥ ६,३.१३७ ॥
चौ ॥ ६,३.१३८ ॥
सम्प्रसारणस्य ॥ ६,३.१३९ ॥

अङ्गस्य ॥ ६,४.१ ॥
हलः ॥ ६,४.२ ॥
नामि ॥ ६,४.३ ॥
न तिसृचतसृ ॥ ६,४.४ ॥
छन्दस्युभयथा ॥ ६,४.५ ॥
नृ च ॥ ६,४.६ ॥
नोपधायाः ॥ ६,४.७ ॥
सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ ॥ ६,४.८ ॥
वा षपूर्वस्य निगमे ॥ ६,४.९ ॥
सान्तमहतः संयोगस्य ॥ ६,४.१० ॥
अप्तृन्तृच्स्वसृनप्तृनेष्टृत्वष्टृक्षत्तृहोतृपोतृप्रशास्तृणाम् ॥ ६,४.११ ॥
इन्हन्पूषार्यम्णां शौ ॥ ६,४.१२ ॥
सौ च ॥ ६,४.१३ ॥
अत्वसन्तस्य चाधातोः ॥ ६,४.१४ ॥
अनुनासिकस्य क्विझलोः क्ङिति ॥ ६,४.१५ ॥
अज्झनगमां सनि ॥ ६,४.१६ ॥
तनोतेर्विभाषा ॥ ६,४.१७ ॥
क्रमश्च क्त्वि ॥ ६,४.१८ ॥
च्छ्वोः शूडनुनासिके च ॥ ६,४.१९ ॥
ज्वरत्वरस्रिव्यविमवामुपधायाश्च ॥ ६,४.२० ॥
राल्लोपः ॥ ६,४.२१ ॥
असिद्धवत्रा भात् ॥ ६,४.२२ ॥
श्नान्नलोपः ॥ ६,४.२३ ॥
अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति ॥ ६,४.२४ ॥
दंशसञ्जस्वञ्जां शपि ॥ ६,४.२५ ॥
रञ्जेश्च ॥ ६,४.२६ ॥
घञि च भावकरनयोः ॥ ६,४.२७ ॥
स्यदो जवे ॥ ६,४.२८ ॥
अवोदैदोद्मप्रश्रथहिमश्रथाः ॥ ६,४.२९ ॥
नाञ्चेः पूजायाम् ॥ ६,४.३० ॥
क्त्वि स्कन्दिस्यन्दोः ॥ ६,४.३१ ॥
जान्तनशां विभाषा ॥ ६,४.३२ ॥
भञ्जेश्च चिणि ॥ ६,४.३३ ॥
शास इदङ्हलोः ॥ ६,४.३४ ॥
शा हौ ॥ ६,४.३५ ॥
हन्तेर्जः ॥ ६,४.३६ ॥
अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति ॥ ६,४.३७ ॥
वा ल्यपि ॥ ६,४.३८ ॥
न क्तिचि दीर्घश्च ॥ ६,४.३९ ॥

गमः क्वौ ॥ ६,४.४० ॥
विड्वनोरनुनासिकस्य आत् ॥ ६,४.४१ ॥
जनसनखनां सञ्झलोः ॥ ६,४.४२ ॥
ये विभाषा ॥ ६,४.४३ ॥
तनोतेर्यकि ॥ ६,४.४४ ॥
सनः क्तिचि लोपश्चास्यान्यतरस्याम् ॥ ६,४.४५ ॥
आर्धधातुके ॥ ६,४.४६ ॥
भ्रस्जो रोपधयो रमन्यतरस्याम् ॥ ६,४.४७ ॥
अतो लोपः ॥ ६,४.४८ ॥
यस्य हलः ॥ ६,४.४९ ॥
क्यस्य विभाषा ॥ ६,४.५० ॥
णेरनिटि ॥ ६,४.५१ ॥
निष्ठायां सेटि ॥ ६,४.५२ ॥
जनिता मन्त्रे ॥ ६,४.५३ ॥
शमिता यज्ञे ॥ ६,४.५४ ॥
अयामन्ताल्वाय्येत्न्विष्णुषु ॥ ६,४.५५ ॥
ल्यपि लघुपूर्वात् ॥ ६,४.५६ ॥
विभाषा+आपः ॥ ६,४.५७ ॥
युप्लुवोर्दीर्घश्छन्दसि ॥ ६,४.५८ ॥
क्षियः ॥ ६,४.५९ ॥
नष्ठायामण्यदर्थे ॥ ६,४.६० ॥
वा+आक्रोशदैन्ययोः ॥ ६,४.६१ ॥
स्यसिच्सीयुट्तासिषु भावकर्मणोरुपदेशेऽज्झनग्रहदृशां वा चिण्वदिट्च ॥ ६,४.६२ ॥
दीङो युडचि क्ङिति ॥ ६,४.६३ ॥
आतो लोप इटि च ॥ ६,४.६४ ॥
ईद्यति ॥ ६,४.६५ ॥
घुमास्थागापाजहातिसा हलि ॥ ६,४.६६ ॥
एर्लिङि ॥ ६,४.६७ ॥
वाऽन्यस्य संयोगादेः ॥ ६,४.६८ ॥
न ल्यपि ॥ ६,४.६९ ॥
मयतेरिदन्यतरस्याम् ॥ ६,४.७० ॥
लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः ॥ ६,४.७१ ॥
आडजादीनाम् ॥ ६,४.७२ ॥
छन्दस्यपि दृश्यते ॥ ६,४.७३ ॥
न माङ्योगे ॥ ६,४.७४ ॥
बहुलं छन्दस्यमाङ्योगेऽपि ॥ ६,४.७५ ॥
इरयो रे ॥ ६,४.७६ ॥
अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ ॥ ६,४.७७ ॥
अभ्यासस्यासवर्णे ॥ ६,४.७८ ॥
स्त्रियाः ॥ ६,४.७९ ॥
वाऽम्शसोः ॥ ६,४.८० ॥
इणो यण् ॥ ६,४.८१ ॥
एरनेकाचोऽसम्योगपूर्वस्य ॥ ६,४.८२ ॥
ओः सुपि ॥ ६,४.८३ ॥
वर्षाभ्वश्च ॥ ६,४.८४ ॥
न भूसुधियोः ॥ ६,४.८५ ॥
छन्दस्युभयथा ॥ ६,४.८६ ॥

हुश्नुवोः सार्वधातुके ॥ ६,४.८७ ॥
भुवो वुग्लुङ्लिटोः ॥ ६,४.८८ ॥
ऊदुपधाया गोहः ॥ ६,४.८९ ॥
दोषो णौ ॥ ६,४.९० ॥
वा चित्तविरागे ॥ ६,४.९१ ॥
मितां ह्रस्वः ॥ ६,४.९२ ॥
चिण्णमुलोर्दीर्घोऽन्यतरस्याम् ॥ ६,४.९३ ॥
खचि ह्रस्वः ॥ ६,४.९४ ॥
ह्लादो निष्ठायाम् ॥ ६,४.९५ ॥
छादेर्घेऽद्व्युपसर्गस्य ॥ ६,४.९६ ॥
इस्मन्त्रन्क्विषु च ॥ ६,४.९७ ॥
गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि ॥ ६,४.९८ ॥
तनिपत्योश्छन्दसि ॥ ६,४.९९ ॥
घसिभसोर्हलि च ॥ ६,४.१०० ॥
हुझल्भ्यो हेर्धिः ॥ ६,४.१०१ ॥
श्रुशृणुपॄकृवृभ्यश्छन्दसि ॥ ६,४.१०२ ॥
अङितश्च ॥ ६,४.१०३ ॥
चिणो लुक् ॥ ६,४.१०४ ॥
अतो हेः ॥ ६,४.१०५ ॥
उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात् ॥ ६,४.१०६ ॥
लोपश्चास्यान्यतरस्यां म्वोः ॥ ६,४.१०७ ॥
नित्यं करोतेः ॥ ६,४.१०८ ॥
ये च ॥ ६,४.१०९ ॥
अत उत्सार्वधातुके ॥ ६,४.११० ॥
श्नसोरल्लोपः ॥ ६,४.१११ ॥
श्नाभ्यस्तयोरातः ॥ ६,४.११२ ॥
ई हल्यघोः ॥ ६,४.११३ ॥
इद्दरिद्रस्य ॥ ६,४.११४ ॥
भियोऽन्यतरस्यम् ॥ ६,४.११५ ॥
जहातेश्च ॥ ६,४.११६ ॥
आ च हौ ॥ ६,४.११७ ॥
लोपो यि ॥ ६,४.११८ ॥
घ्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च ॥ ६,४.११९ ॥
अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि ॥ ६,४.१२० ॥
थलि च सेति ॥ ६,४.१२१ ॥
तॄफलभजत्रपश्च ॥ ६,४.१२२ ॥
राधो हिंसायाम् ॥ ६,४.१२३ ॥
वा जॄभ्रमुत्रसाम् ॥ ६,४.१२४ ॥
फणां च सप्तानाम् ॥ ६,४.१२५ ॥
न शसददवादिगुणानाम् ॥ ६,४.१२६ ॥
अर्वणस्त्रसावनञः ॥ ६,४.१२७ ॥
मघवा बहुलम् ॥ ६,४.१२८ ॥
भस्य ॥ ६,४.१२९ ॥
पादः पत् ॥ ६,४.१३० ॥
वसोः सम्प्रसारणं ॥ ६,४.१३१ ॥
वाह ऊठ् ॥ ६,४.१३२ ॥
श्वयुवमघोनामतद्धिते ॥ ६,४.१३३ ॥

अल्लोपोऽनः ॥ ६,४.१३४ ॥
षपूर्वहन्धृतराज्ञामणि ॥ ६,४.१३५ ॥
विभाषा ङिश्योः ॥ ६,४.१३६ ॥
न संयोगाद्वमन्तात् ॥ ६,४.१३७ ॥
अचः ॥ ६,४.१३८ ॥
उद ईत् ॥ ६,४.१३९ ॥
आतो धातोः ॥ ६,४.१४० ॥
मन्त्रेष्वाङ्यादेरात्मनः ॥ ६,४.१४१ ॥
ति विंशतेर्डिति ॥ ६,४.१४२ ॥
टेः ॥ ६,४.१४३ ॥
नस्तद्धिते ॥ ६,४.१४४ ॥
अह्नष्टखोरेव ॥ ६,४.१४५ ॥
ओर्गुणः ॥ ६,४.१४६ ॥
ढे लोपोऽकद्र्वाः ॥ ६,४.१४७ ॥
यस्य+इति च ॥ ६,४.१४८ ॥
सूर्यतिष्यागस्त्यमत्स्यानां य उपधायाः ॥ ६,४.१४९ ॥
हलस्तद्धितस्य ॥ ६,४.१५० ॥
आपत्यस्य च तद्धितेऽनाति ॥ ६,४.१५१ ॥
क्यच्व्योश्च ॥ ६,४.१५२ ॥
बिल्वकादिभ्यश्छस्य लुक् ॥ ६,४.१५३ ॥
तुरिष्ठेमेयस्सु ॥ ६,४.१५४ ॥
टेः ॥ ६,४.१५५ ॥
स्थूलदूरयुवह्रस्वक्षिप्रक्षुद्राणां यणादिपरं पूर्वस्य च गुणः ॥ ६,४.१५६ ॥
प्रियस्थिरस्फिरोरुबहुलगुरुवृद्धतृप्रदीर्घवृन्दारकाणां प्रस्थस्फवर्बंहिगर्वर्षित्रब्द्राघिवृन्दाः ॥ ६,४.१५७ ॥
बहोर्लोपो भू च बहोः ॥ ६,४.१५८ ॥
इष्ठस्य यिट् च ॥ ६,४.१५९ ॥
ज्यादादीयसः ॥ ६,४.१६० ॥
र ऋतो हलादेर्लघोः ॥ ६,४.१६१ ॥
विभाषा र्जीश्छन्दसि ॥ ६,४.१६२ ॥
प्रकृत्या+एकाच् ॥ ६,४.१६३ ॥
इनण्यनपत्ये ॥ ६,४.१६४ ॥
गाथिविदथिकेशिगणिपणिनश्च ॥ ६,४.१६५ ॥
संयोगादिश्च ॥ ६,४.१६६ ॥
अन् ॥ ६,४.१६७ ॥
ये चाभावकर्मणोः ॥ ६,४.१६८ ॥
आत्माध्वानौ खे ॥ ६,४.१६९ ॥
न मपूर्वोऽपत्येऽवर्मणः ॥ ६,४.१७० ॥
ब्राह्मोऽजातौ ॥ ६,४.१७१ ॥
कार्मस्ताच्छील्ये ॥ ६,४.१७२ ॥
औक्षमनपत्ये ॥ ६,४.१७३ ॥
दाण्डिनायनहास्तिनायनाथर्वणिकजैह्माशिनेयवासिनायनिभ्रौणहत्यधैवत्यसारवाइक्ष्वाकमैत्रेयहिरण्मयानि ॥ ६,४.१७४ ॥
ऋत्व्यवास्त्व्यवास्त्वमाध्वीहिरण्ययानि च्छन्दसि ॥ ६,४.१७५ ॥

युवोरनाकौ ॥ ७,१.१ ॥

आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययाअदीनाम् ॥ ७,१.२ ॥
झोऽन्तः ॥ ७,१.३ ॥
अदभ्यस्तात् ॥ ७,१.४ ॥
आत्मनेपदेष्वनतः ॥ ७,१.५ ॥
शीङो रुट् ॥ ७,१.६ ॥
वेत्तेर्विभाषा ॥ ७,१.७ ॥
बहुलं छन्दसि ॥ ७,१.८ ॥
अतो भिसाइस् ॥ ७,१.९ ॥
बहुलं छन्दसि ॥ ७,१.१० ॥
न+इदमदसोरकोः ॥ ७,१.११ ॥
टाङसिङसामिनात्स्याः ॥ ७,१.१२ ॥
ङेर्यः ॥ ७,१.१३ ॥
सर्वनाम्नः स्मै ॥ ७,१.१४ ॥
ङसिङ्योः समात्स्मिनौ ॥ ७,१.१५ ॥
पूर्वादिभ्यो नवभ्यो वा ॥ ७,१.१६ ॥
जसः शी ॥ ७,१.१७ ॥
औङ आपः ॥ ७,१.१८ ॥
नपुंसकाच्च ॥ ७,१.१९ ॥
जश्शसोः शिः ॥ ७,१.२० ॥
अष्टाभ्याउश् ॥ ७,१.२१ ॥
षड्भ्यो लुक् ॥ ७,१.२२ ॥
स्वमोर्नपुंसकात् ॥ ७,१.२३ ॥
अतोऽम् ॥ ७,१.२४ ॥
अद्ड्डतरादिभ्यः पञ्चभ्यः ॥ ७,१.२५ ॥
न+इतराच्छन्दसि ॥ ७,१.२६ ॥
युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश् ॥ ७,१.२७ ॥
ङे प्रथमयोरम् ॥ ७,१.२८ ॥
शसो न ॥ ७,१.२९ ॥
भ्यसो भ्यम् ॥ ७,१.३० ॥
पञ्चम्या अत् ॥ ७,१.३१ ॥
एकवचनस्य च ॥ ७,१.३२ ॥
साम आकम् ॥ ७,१.३३ ॥
आताउ णलः ॥ ७,१.३४ ॥
तुह्योस्तातङाशिष्यन्यतरस्याम् ॥ ७,१.३५ ॥
विदेः शतुर्वसुः ॥ ७,१.३६ ॥
समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप् ॥ ७,१.३७ ॥
क्त्वा अपि छन्दसि ॥ ७,१.३८ ॥
सुपां सुलुक्पूर्वसवर्णाच्छेयाडाड्यायाजालः ॥ ७,१.३९ ॥
अमो मश् ॥ ७,१.४० ॥
लोपस्त आत्मनेपदेषु ॥ ७,१.४१ ॥
ध्वमो ध्वात् ॥ ७,१.४२ ॥
यजध्वैनमिति च ॥ ७,१.४३ ॥
तस्य तात् ॥ ७,१.४४ ॥
तप्तनप्तनथनाश्च ॥ ७,१.४५ ॥
इदन्तो मसि ॥ ७,१.४६ ॥
क्त्वो यक् ॥ ७,१.४७ ॥
इष्ट्वीनमिति च ॥ ७,१.४८ ॥

स्नात्व्यादयश्च ॥ ७,१.४९ ॥
आज्जसेरसुक् ॥ ७,१.५० ॥
अश्वक्षीरवृषलवणानामात्मप्रीतौ क्यचि ॥ ७,१.५१ ॥
आमि सर्वनाम्नः सुट् ॥ ७,१.५२ ॥
त्रेस्त्रयः ॥ ७,१.५३ ॥
ह्रस्वनद्यापो नुट् ॥ ७,१.५४ ॥
षट्चतुर्भ्यश्च ॥ ७,१.५५ ॥
श्रीग्रामण्योश्छन्दसि ॥ ७,१.५६ ॥
गोः पादान्ते ॥ ७,१.५७ ॥
इदितो नुं धातोः ॥ ७,१.५८ ॥
शे मुचादीनाम् ॥ ७,१.५९ ॥
मस्जिनशोर्झलि ॥ ७,१.६० ॥
रधिजभोरचि ॥ ७,१.६१ ॥
नेट्यलिटि रधेः ॥ ७,१.६२ ॥
रभेरशब्लिटोः ॥ ७,१.६३ ॥
लभेश्च ॥ ७,१.६४ ॥
आङो यि ॥ ७,१.६५ ॥
उपात्प्रशंसायाम् ॥ ७,१.६६ ॥
उपसर्गात्खल्घञोः ॥ ७,१.६७ ॥
न सुदुर्भ्यां केवलाभ्याम् ॥ ७,१.६८ ॥
विभाषा चिण्णमुलोः ॥ ७,१.६९ ॥
उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ॥ ७,१.७० ॥
युजेरसमासे ॥ ७,१.७१ ॥
नपुंसकस्य झलचः ॥ ७,१.७२ ॥
इकोऽचि विभक्तौ ॥ ७,१.७३ ॥
तृतीयादिषु भाषितपुंस्कं पुंवद्गालवस्य ॥ ७,१.७४ ॥
अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः ॥ ७,१.७५ ॥
छन्दस्यपि दृश्यते ॥ ७,१.७६ ॥
ई च द्विवचने ॥ ७,१.७७ ॥
नाभ्यस्ताच्छतुः ॥ ७,१.७८ ॥
वा नपुंसकस्य ॥ ७,१.७९ ॥
आच्छीनद्योर्नुम् ॥ ७,१.८० ॥
शप्श्यनोर्नित्यम् ॥ ७,१.८१ ॥
सावनडुहः ॥ ७,१.८२ ॥
दृक्स्ववस्स्वतवसां छन्दसि ॥ ७,१.८३ ॥
दिव औत् ॥ ७,१.८४ ॥
पथिमथ्यृभुक्षामात् ॥ ७,१.८५ ॥
इतोऽत्सर्वनामस्थाने ॥ ७,१.८६ ॥
थो न्थः ॥ ७,१.८७ ॥
भस्य टेर्लोपः ॥ ७,१.८८ ॥
पुंसोऽसुङ् ॥ ७,१.८९ ॥
गोतो णित् ॥ ७,१.९० ॥
णलुत्तमो वा ॥ ७,१.९१ ॥
सख्युरसम्बुद्धौ ॥ ७,१.९२ ॥
अनङ् सौ ॥ ७,१.९३ ॥
ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च ॥ ७,१.९४ ॥
तृज्वत्क्रोष्टुः ॥ ७,१.९५ ॥

स्त्रियां च ॥ ७,१.९६ ॥
विभाषा तृतीयादिष्वचि ॥ ७,१.९७ ॥
चतुरनडुहोरामुदात्तः ॥ ७,१.९८ ॥
अं सम्बुद्धौ ॥ ७,१.९९ ॥
ॠत इद्धतोः ॥ ७,१.१०० ॥
उपधायाश्च ॥ ७,१.१०१ ॥
उदोष्ठ्यपूर्वस्य ॥ ७,१.१०२ ॥
बहुलं छन्दसि ॥ ७,१.१०३ ॥

सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु ॥ ७,२.१ ॥
अतो ल्रान्तस्य ॥ ७,२.२ ॥
वदव्रजहलन्तस्याचः ॥ ७,२.३ ॥
नेटि ॥ ७,२.४ ॥
ह्म्यन्तक्षणश्वसजागृणिश्व्येदिताम् ॥ ७,२.५ ॥
ऊर्णोतेर्विभाषा ॥ ७,२.६ ॥
अतो हलादेर्लघोः ॥ ७,२.७ ॥
नेड्वशि कृति ॥ ७,२.८ ॥
तितुत्रतथसिसुसरकसेषु च ॥ ७,२.९ ॥
एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् ॥ ७,२.१० ॥
श्र्युकः किति ॥ ७,२.११ ॥
सनि ग्रहगुहोश्च ॥ ७,२.१२ ॥
कृसृभृवृस्तुद्रुस्रुश्रुवो लिटि ॥ ७,२.१३ ॥
श्वीदितो निष्ठायाम् ॥ ७,२.१४ ॥
यस्य विभाषा ॥ ७,२.१५ ॥
आदितश्च ॥ ७,२.१६ ॥
विभाषा भावादिकर्मणोः ॥ ७,२.१७ ॥
क्षुब्धस्वान्तध्वान्तलग्नम्लिष्टविरिब्धफाण्टबाढानि
मन्थमनस्तमःसक्ताविस्पष्टस्वरानायासभृशेषु ॥ ७,२.१८ ॥
धृषी शसी वैयात्ये ॥ ७,२.१९ ॥
दृढः स्थूलबलयोः ॥ ७,२.२० ॥
प्रभौ परिवृढः ॥ ७,२.२१ ॥
कृच्छ्रगहनयोः कषः ॥ ७,२.२२ ॥
घुषिरविशब्दने ॥ ७,२.२३ ॥
अर्देः संनिविभ्यः ॥ ७,२.२४ ॥
अभेश्च आविदूर्ये ॥ ७,२.२५ ॥
णेरध्ययने वृत्तम् ॥ ७,२.२६ ॥
वा दान्तशान्तपूर्णदस्तस्पष्टच्छन्नज्ञप्ताः ॥ ७,२.२७ ॥
रुष्यमत्वरसङ्घुषास्वनाम् ॥ ७,२.२८ ॥
हृषेर्लोमसु ॥ ७,२.२९ ॥
अपचितश्च ॥ ७,२.३० ॥
हु ह्वरेश्छन्दसि ॥ ७,२.३१ ॥
अपरिह्वृताश्च ॥ ७,२.३२ ॥
सोमे ह्वरितः ॥ ७,२.३३ ॥
ग्रसितस्कभितस्तभितोत्तभितचत्तविकस्ता
विशस्तृशंस्तृशास्तृतरुतृतरूतृवरुतृवरूतृवरूत्रीरुज्ज्वलितिक्षरितिक्षमितिवमित्यमिति इति च ॥
७,२.३४ ॥
आर्धधातुकस्य+इड्वलादेः ॥ ७,२.३५ ॥

स्नुक्रमोरनात्मनेपदनिमित्ते ॥ ७,२.३६ ॥
ग्रहोऽलिटि दीर्घः ॥ ७,२.३७ ॥
वृतो वा ॥ ७,२.३८ ॥
न लिङि ॥ ७,२.३९ ॥
सिचि च परस्मैपदेषु ॥ ७,२.४० ॥
इट्सनि वा ॥ ७,२.४१ ॥
लिङ्सिचोरात्मनेपदेषु ॥ ७,२.४२ ॥
ॠतश्च संयोगादेः ॥ ७,२.४३ ॥
स्वरतिसूतिसूयतिधूञूदितो वा ॥ ७,२.४४ ॥
रधादिभ्यश्च ॥ ७,२.४५ ॥
निरः कुषः ॥ ७,२.४६ ॥
इण्निष्ठायाम् ॥ ७,२.४७ ॥
तीषसहलुभरुषरिषः ॥ ७,२.४८ ॥
सनि इवन्तर्धभ्रस्जदम्भुश्रिस्वृयूर्णुभरज्ञपिसनाम् ॥ ७,२.४९ ॥
क्लिशः क्त्वानिष्ठयोः ॥ ७,२.५० ॥
पूङश्च ॥ ७,२.५१ ॥
वसतिक्षुधोरिट् ॥ ७,२.५२ ॥
अञ्चेः पूजायाम् ॥ ७,२.५३ ॥
लुभो विमोहने ॥ ७,२.५४ ॥
जॄव्रश्च्योः क्त्वि ॥ ७,२.५५ ॥
उदितो वा ॥ ७,२.५६ ॥
सेऽसिचि कृतचृतच्छृदतृदनृतः ॥ ७,२.५७ ॥
गमेरिट्परस्मैपदेषु ॥ ७,२.५८ ॥
न वृद्भ्यश्चतुर्भ्यः ॥ ७,२.५९ ॥
तासि च क्लृपः ॥ ७,२.६० ॥
अचस्तास्वत्थल्यनिटो नित्यम् ॥ ७,२.६१ ॥
उपदेशेऽत्वतः ॥ ७,२.६२ ॥
ॠतो भारद्वाजस्य ॥ ७,२.६३ ॥
वभूथाततन्थजगृभ्मववर्थ+इति निगमे ॥ ७,२.६४ ॥
विभाषा सृजिदृशोः ॥ ७,२.६५ ॥
इडत्त्यर्तिव्ययतीनाम् ॥ ७,२.६६ ॥
वस्वेकाजाद्धसाम् ॥ ७,२.६७ ॥
विभाषा गमहनविदविशाम् ॥ ७,२.६८ ॥
सनिंससनिवांसम् ॥ ७,२.६९ ॥
ॠद्धनोः स्ये ॥ ७,२.७० ॥
अञ्जेः सिचि ॥ ७,२.७१ ॥
स्तुसुधूञ्भ्यः परस्मैपदेषु ॥ ७,२.७२ ॥
यमरमनमातां सक्च ॥ ७,२.७३ ॥
स्मिपूङ्रञ्ज्वशां सनि ॥ ७,२.७४ ॥
किरश्च पञ्चभ्यः ॥ ७,२.७५ ॥
रुदादिभ्यः सार्वधातुके ॥ ७,२.७६ ॥
ईशः से ॥ ७,२.७७ ॥
ईडजनोर्ध्वे च ॥ ७,२.७८ ॥
लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य ॥ ७,२.७९ ॥
अतो येयः ॥ ७,२.८० ॥
आतो ङितः ॥ ७,२.८१ ॥
आने मुक् ॥ ७,२.८२ ॥

ईदासः ॥ ७,२.८३ ॥
अष्टन आ विभक्तौ ॥ ७,२.८४ ॥
रायो हलि ॥ ७,२.८५ ॥
युष्मदस्मदोरनादेशे ॥ ७,२.८६ ॥
द्वितीयायां च ॥ ७,२.८७ ॥
प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम् ॥ ७,२.८८ ॥
योऽचि ॥ ७,२.८९ ॥
शेषे लोपः ॥ ७,२.९० ॥
मपर्यन्तस्य ॥ ७,२.९१ ॥
वक्ष्यति युवावौ द्विवचने ॥ ७,२.९२ ॥
यूयवयौ जसि ॥ ७,२.९३ ॥
त्वाहौ सौ ॥ ७,२.९४ ॥
तुभ्यमह्यौ ङयि ॥ ७,२.९५ ॥
तवममौ ङसि ॥ ७,२.९६ ॥
त्वमावेकवचने ॥ ७,२.९७ ॥
प्रत्ययोत्तरपदयोश्च ॥ ७,२.९८ ॥
त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ ॥ ७,२.९९ ॥
अचि र ऋतः ॥ ७,२.१०० ॥
जराया जरसन्यतरस्याम् ॥ ७,२.१०१ ॥
त्यदादीनामः ॥ ७,२.१०२ ॥
किमः कः ॥ ७,२.१०३ ॥
कु तिहोः ॥ ७,२.१०४ ॥
क्वाति ॥ ७,२.१०५ ॥
तदोः सः सावनन्त्ययोः ॥ ७,२.१०६ ॥
अदसाउ सुलोपश्च ॥ ७,२.१०७ ॥
इदमो मः ॥ ७,२.१०८ ॥
दश्च ॥ ७,२.१०९ ॥
यः सौ ॥ ७,२.११० ॥
इदोऽय्पुंसि ॥ ७,२.१११ ॥
अनाप्यकः ॥ ७,२.११२ ॥
हलि लोपः ॥ ७,२.११३ ॥
मृजेर्वृद्धिः ॥ ७,२.११४ ॥
अचो ञ्णिति ॥ ७,२.११५ ॥
अत उपधायाः ॥ ७,२.११६ ॥
तद्धितेष्वचामादेः ॥ ७,२.११७ ॥
किति च ॥ ७,२.११८ ॥

देविकाशिंशपादित्यवाड्दीर्घसत्रश्रेयसामात् ॥ ७,३.१ ॥
केकयमित्रयुप्रलयानां यादेरियः ॥ ७,३.२ ॥
न य्वाभ्यां पदान्ताभ्यां पूर्वौ तु ताभ्यामैच् ॥ ७,३.३ ॥
द्वारादीनां च ॥ ७,३.४ ॥
न्यग्रोधस्य च केवलस्य ॥ ७,३.५ ॥
न कर्मव्यतिहारे ॥ ७,३.६ ॥
स्वागतादीनां च ॥ ७,३.७ ॥
श्वादेरिञि ॥ ७,३.८ ॥
पदान्तस्यान्यतरस्याम् ॥ ७,३.९ ॥
उत्तरपदस्य ॥ ७,३.१० ॥

वक्ष्यति अवयवादृतोः ॥ ७,३.११ ॥
सुसर्वार्धाज्जनपदस्य ॥ ७,३.१२ ॥
दिशोऽमद्राणाम् ॥ ७,३.१३ ॥
प्राचां ग्रामनगराणाम् ॥ ७,३.१४ ॥
सङ्ख्यायाः संवत्सरसङ्ख्यस्य च ॥ ७,३.१५ ॥
वर्षस्याभविष्यति ॥ ७,३.१६ ॥
परिमाणान्तस्यासञ्ज्ञाशाणयोः ॥ ७,३.१७ ॥
जे प्रोष्ठपदानाम् ॥ ७,३.१८ ॥
हृद्भगसिन्ध्वन्ते पूर्वपदस्य च ॥ ७,३.१९ ॥
अनुशतिकादीनां च ॥ ७,३.२० ॥
देवताद्वन्द्वे च ॥ ७,३.२१ ॥
न+इन्द्रस्य परस्य ॥ ७,३.२२ ॥
दिर्घाच्च वरुणस्य ॥ ७,३.२३ ॥
प्राचां नगरान्ते ॥ ७,३.२४ ॥
जङ्गलधेनुवलजान्तस्य विभाषितमुत्तरम् ॥ ७,३.२५ ॥
अर्धात्परिमाणस्य पूर्वस्य तु वा ॥ ७,३.२६ ॥
नातः परस्य ॥ ७,३.२७ ॥
प्रवाहणस्य ढे ॥ ७,३.२८ ॥
तत्प्रत्ययस्य च ॥ ७,३.२९ ॥
नञः शुचीश्वरक्षेत्रज्ञकुशलनिपुणानाम् ॥ ७,३.३० ॥
यथातथयथापुरयोः पर्यायेण ॥ ७,३.३१ ॥
हनस्तोऽचिण्णलोः ॥ ७,३.३२ ॥
आतो युक्चिण्कृतोः ॥ ७,३.३३ ॥
न+उदात्तोपदेशस्य मान्तस्यानाचमेः ॥ ७,३.३४ ॥
जनिवध्योश्च ॥ ७,३.३५ ॥
अर्तिह्रीव्लीरीक्नूयीक्ष्माय्यातां पुग्णौ ॥ ७,३.३६ ॥
शाच्छासाह्वाव्यावेपां युक् ॥ ७,३.३७ ॥
वो विधूनने जुक् ॥ ७,३.३८ ॥
लीलोर्नुग्लुकावन्यतरस्यां स्नेहविपातने ॥ ७,३.३९ ॥
भियो हेतुभये षुक् ॥ ७,३.४० ॥
स्फायो वः ॥ ७,३.४१ ॥
शदेरगतौ तः ॥ ७,३.४२ ॥
रुहः पोऽन्यतरस्याम् ॥ ७,३.४३ ॥
प्रत्ययस्थात्कात्पूर्वस्यात इदाप्यसुपः ॥ ७,३.४४ ॥
न यासयोः ॥ ७,३.४५ ॥
उदीचामातः स्थाने यकपूर्वायाः ॥ ७,३.४६ ॥
भस्त्रैषाजाज्ञाद्वास्वा नञ्पूर्वाणामपि ॥ ७,३.४७ ॥
अभाषितपुंस्काच्च ॥ ७,३.४८ ॥
आदाचार्याणाम् ॥ ७,३.४९ ॥
ठस्य+इकः ॥ ७,३.५० ॥
इसुसुक्तान्तात्कः ॥ ७,३.५१ ॥
चजोः कु घिण्ण्यतोः ॥ ७,३.५२ ॥
न्यङ्क्वादीनां च ॥ ७,३.५३ ॥
हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु ॥ ७,३.५४ ॥
अभ्यासाच्च ॥ ७,३.५५ ॥
हेरचङि ॥ ७,३.५६ ॥
सन्लिटोर्जेः ॥ ७,३.५७ ॥

विभाषा चेः ॥ ७,३.५८ ॥
न क्वादेः ॥ ७,३.५९ ॥
अजिव्रज्योश्च ॥ ७,३.६० ॥
भुजन्युब्जौ पाण्युपतापयोः ॥ ७,३.६१ ॥
प्रयाजानुयाजौ यज्ञाङ्गे ॥ ७,३.६२ ॥
वञ्चेर्गतौ ॥ ७,३.६३ ॥
ओक उचः के ॥ ७,३.६४ ॥
ण्य आवश्यके ॥ ७,३.६५ ॥
यजयाचरुचप्रवचर्चश्च ॥ ७,३.६६ ॥
वचोऽशब्दसञ्ज्ञायां ॥ ७,३.६७ ॥
प्रयोज्यनियोज्यौ शक्यार्थे ॥ ७,३.६८ ॥
भोज्यं भक्ष्ये ॥ ७,३.६९ ॥
घोलीपो लेटि वा ॥ ७,३.७० ॥
ओतः श्यनि ॥ ७,३.७१ ॥
क्षस्याचि ॥ ७,३.७२ ॥
लुग्वा दुहदिहलिहगुहामात्मनेपदे दन्त्ये ॥ ७,३.७३ ॥
शमामष्टानां दीर्घः श्यनि ॥ ७,३.७४ ॥
ष्ठिवुक्लम्याचमां शिति ॥ ७,३.७५ ॥
क्रमः परस्मैपदेषु ॥ ७,३.७६ ॥
इषुगमियमां छः ॥ ७,३.७७ ॥
पाघ्राध्मास्हाम्नादाण्दृश्यर्तिसर्तिशदसदां पिबजिघ्रधमतिष्थमनयच्छपश्यर्च्छधौशीयसीदाः ॥ ७,३.७८ ॥
ज्ञाजनोर्जा ॥ ७,३.७९ ॥
प्वादीनां ह्रस्वः ॥ ७,३.८० ॥
मीनातेर्निगमे ॥ ७,३.८१ ॥
मिदेर्गुणः ॥ ७,३.८२ ॥
जुसि च ॥ ७,३.८३ ॥
सार्वधातुकार्धधातुकयोः ॥ ७,३.८४ ॥
जाग्रोऽविचिण्णल्ङित्सु ॥ ७,३.८५ ॥
पुगन्तलघूपधस्य च ॥ ७,३.८६ ॥
नाभ्यस्तस्याचि पिति सार्वधातुके ॥ ७,३.८७ ॥
भूसुवोस्तिङि ॥ ७,३.८८ ॥
उतो वृद्धिर्लुकि हलि ॥ ७,३.८९ ॥
ऊर्णोतेर्विभाषा ॥ ७,३.९० ॥
गुणोऽपृक्तो ॥ ७,३.९१ ॥
तृणह इम् ॥ ७,३.९२ ॥
ब्रुव ईट् ॥ ७,३.९३ ॥
यङो वा ॥ ७,३.९४ ॥
तुरुस्तुशम्यमः सार्वधातुके ॥ ७,३.९५ ॥
अस्तिसिचोऽपृक्ते ॥ ७,३.९६ ॥
बहुलं छन्दसि ॥ ७,३.९७ ॥
रुदश्च पञ्चभ्यः ॥ ७,३.९८ ॥
अड्गार्ग्यगालवयोः ॥ ७,३.९९ ॥
अदः सर्वेषाम् ॥ ७,३.१०० ॥
अतो दीर्घो यञि ॥ ७,३.१०१ ॥
सुपि च ॥ ७,३.१०२ ॥
बहुवचने झल्येत् ॥ ७,३.१०३ ॥

ओसि च ॥ ७,३.१०४ ॥
आङि चापः ॥ ७,३.१०५ ॥
सम्बुद्धौ च ॥ ७,३.१०६ ॥
अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः ॥ ७,३.१०७ ॥
ह्रस्वस्य गुणः ॥ ७,३.१०८ ॥
जसि च ॥ ७,३.१०९ ॥
ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः ॥ ७,३.११० ॥
घेर्ङिति ॥ ७,३.१११ ॥
आण्नद्याः ॥ ७,३.११२ ॥
याडापः ॥ ७,३.११३ ॥
सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च ॥ ७,३.११४ ॥
विभाषा द्वितीयातृतीयाभ्याम् ॥ ७,३.११५ ॥
ङेराम्नद्याम्नीभ्यः ॥ ७,३.११६ ॥
इदुद्भ्याम् ॥ ७,३.११७ ॥
औत् ॥ ७,३.११८ ॥
अच्च घेः ॥ ७,३.११९ ॥
आङो नाऽस्त्रियाम् ॥ ७,३.१२० ॥

णौ चङ्युपधाया ह्रस्वः ॥ ७,४.१ ॥
नाग्लोपिशास्वृदिताम् ॥ ७,४.२ ॥
भ्राजभासभाषदीपजीवमीलपीडामन्यतरस्याम् ॥ ७,४.३ ॥
लोपः पिबतेरीच्चाभ्यासस्य ॥ ७,४.४ ॥
तिष्ठतेरित् ॥ ७,४.५ ॥
जिघ्रतेर्वा ॥ ७,४.६ ॥
उरृत् ॥ ७,४.७ ॥
नित्यं छन्दसि ॥ ७,४.८ ॥
दयतेर्दिगि लिटि ॥ ७,४.९ ॥
ऋतश्च संयोगादेर्गुणः ॥ ७,४.१० ॥
ऋच्छत्यॄताम् ॥ ७,४.११ ॥
शॄदॄप्रां ह्रस्वो वा ॥ ७,४.१२ ॥
केऽणः ॥ ७,४.१३ ॥
न कपि ॥ ७,४.१४ ॥
अपोऽन्यतरस्याम् ॥ ७,४.१५ ॥
ऋदृशोऽङि गुणः ॥ ७,४.१६ ॥
अस्यतेस्थुक् ॥ ७,४.१७ ॥
श्वयतेरः ॥ ७,४.१८ ॥
पतः पुम् ॥ ७,४.१९ ॥
वच उम् ॥ ७,४.२० ॥
शीङः सार्वधातुके गुणः ॥ ७,४.२१ ॥
अयङ्यि क्ङिति ॥ ७,४.२२ ॥
उपसर्गाद्ध्रस्व ऊहतेः ॥ ७,४.२३ ॥
एतेर्लिङि ॥ ७,४.२४ ॥
अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः ॥ ७,४.२५ ॥
च्वौ च ॥ ७,४.२६ ॥
रीङृतः ॥ ७,४.२७ ॥
रिङ्शयग्लिङ्क्षु ॥ ७,४.२८ ॥
गुणोऽर्तिसंयोगाद्योः ॥ ७,४.२९ ॥

यङि च ॥ ७,४.३० ॥
ई घ्राध्मोः ॥ ७,४.३१ ॥
अस्य च्वौ ॥ ७,४.३२ ॥
क्यचि च ॥ ७,४.३३ ॥
अशनायोदन्यधानाया बुभुक्षापिपासागर्धेषु ॥ ७,४.३४ ॥
न च्छन्दस्यपुत्रस्य ॥ ७,४.३५ ॥
दुरस्युर्द्रविणस्युर्वृषण्यति रिषण्यति ॥ ७,४.३६ ॥
अश्वाघस्य आत् ॥ ७,४.३७ ॥
देवसुम्नयोर्यजुषि काठके ॥ ७,४.३८ ॥
कव्यध्वरपृतनस्यर्चि लोपः ॥ ७,४.३९ ॥
द्यतिस्यतिमास्थामित्ति किति ॥ ७,४.४० ॥
शाछोरन्यतरस्याम् ॥ ७,४.४१ ॥
दधातेर्हिः ॥ ७,४.४२ ॥
जहातेश्च क्त्वि ॥ ७,४.४३ ॥
विभाषा छन्दसि ॥ ७,४.४४ ॥
सुधितवसुधितनेमधितधिष्वधिषीय च ॥ ७,४.४५ ॥
दो दद्घोः ॥ ७,४.४६ ॥
अच उपसर्गात्तः ॥ ७,४.४७ ॥
अपो भि ॥ ७,४.४८ ॥
सः स्यार्धधातुके ॥ ७,४.४९ ॥
तासस्त्योर्लोपः ॥ ७,४.५० ॥
रि च ॥ ७,४.५१ ॥
ह एति ॥ ७,४.५२ ॥
यीवर्णयोर्दीधीवेव्योः ॥ ७,४.५३ ॥
सनि मीमाघुरभलभशकपतपदामच इस् ॥ ७,४.५४ ॥
आप्ज्ञप्यृधामीत् ॥ ७,४.५५ ॥
दम्भ इच्च ॥ ७,४.५६ ॥
मुचोऽकर्मकस्य गुणो वा ॥ ७,४.५७ ॥
अत्र लोपोऽभ्यासस्य ॥ ७,४.५८ ॥
ह्रस्वः ॥ ७,४.५९ ॥
हलादिः शेषः ॥ ७,४.६० ॥
शर्पूर्वाः खयः ॥ ७,४.६१ ॥
कुहोश्चुः ॥ ७,४.६२ ॥
न कवतेर्यङि ॥ ७,४.६३ ॥
कृषेश्छन्दसि ॥ ७,४.६४ ॥
दाधर्तिदर्धर्तिदर्धर्षिबोभूतुतेतिक्तेऽलर्ष्यापनीफणत्संसनिष्यदत्करिक्रत्कनिक्रदत्भरिभ्रद्दविध्वतोद
विद्युतत्तरित्रतःसरीसृपतंवरीवृजन्मर्मृज्यागनीगन्ति इति च ॥ ७,४.६५ ॥
उरत् ॥ ७,४.६६ ॥
द्युतिस्वाप्योः सम्प्रसारणम् ॥ ७,४.६७ ॥
व्यथो लिटि ॥ ७,४.६८ ॥
दीर्घ इणः किति ॥ ७,४.६९ ॥
अत आदेः ॥ ७,४.७० ॥
तस्मान्नुड्द्विहलः ॥ ७,४.७१ ॥
अश्नोतेश्च ॥ ७,४.७२ ॥
भवतेरः ॥ ७,४.७३ ॥
ससूवेति निगमे ॥ ७,४.७४ ॥
णिजां त्रयाणां गुणः श्लौ ॥ ७,४.७५ ॥

भृञामित् ॥ ७,४.७६ ॥
अर्तिपिपर्त्योश्च ॥ ७,४.७७ ॥
बहुलं छन्दसि ॥ ७,४.७८ ॥
सन्यतः ॥ ७,४.७९ ॥
ओः पुयण्ज्यपरे ॥ ७,४.८० ॥
स्रवतिशृणोतिद्रवतिप्रवतिप्लवतिच्यवतीनां वा ॥ ७,४.८१ ॥
गुणो यङ्लुकोः ॥ ७,४.८२ ॥
दीर्घोऽकितः ॥ ७,४.८३ ॥
नीग्वञ्चुस्रंसुध्वंसुभ्रंसुकसपतपदस्कन्दाम् ॥ ७,४.८४ ॥
नुगतोऽनुनासिकान्तस्य ॥ ७,४.८५ ॥
जपजभदहदशभञ्जपशां च ॥ ७,४.८६ ॥
चरफलोश्च ॥ ७,४.८७ ॥
उत्परस्यातः ॥ ७,४.८८ ॥
ति च ॥ ७,४.८९ ॥
रीगृदुपधस्य च ॥ ७,४.९० ॥
रुग्रिकौ च लुकि ॥ ७,४.९१ ॥
ऋतश्च ॥ ७,४.९२ ॥
सन्वल्लघुनि चङ्परेऽनग्लोपे ॥ ७,४.९३ ॥
दीर्घो लघोः ॥ ७,४.९४ ॥
अत्स्मृदृत्वरप्रथम्रदस्तृस्पशाम् ॥ ७,४.९५ ॥
विभाषा वेष्टिचेष्ट्योः ॥ ७,४.९६ ॥
ई च गणः ॥ ७,४.९७ ॥

सर्वस्य द्वे ॥ ८,१.१ ॥
तस्य परमाम्रेडितम् ॥ ८,१.२ ॥
अनुदात्तं च ॥ ८,१.३ ॥
नित्यवीप्सयोः ॥ ८,१.४ ॥
परेर्वर्जने ॥ ८,१.५ ॥
प्रसमुपोदः पादपूरणे ॥ ८,१.६ ॥
उपर्यध्यधसः सामीप्ये ॥ ८,१.७ ॥
वाक्यादेरामन्त्रितस्यासूयासम्मतिकोपकुत्सनभर्त्सनेषु ॥ ८,१.८ ॥
एकं बहुव्रीहिवत् ॥ ८,१.९ ॥
आबाधे च ॥ ८,१.१० ॥
कर्मधारयवदुत्तरेषु ॥ ८,१.११ ॥
प्रकारे गुणवचनस्य ॥ ८,१.१२ ॥
अकृच्छ्रे प्रियसुखयोरन्यतरस्याम् ॥ ८,१.१३ ॥
यथास्वे यथायथम् ॥ ८,१.१४ ॥
द्वन्द्वं रहस्यमर्यादावचनव्युत्क्रमणयज्ञपात्रप्रयोगाभिव्यक्तिषु ॥ ८,१.१५ ॥
पदस्य ॥ ८,१.१६ ॥
पदात् ॥ ८,१.१७ ॥
अनुदात्तं सर्वमपादादौ ॥ ८,१.१८ ॥
आमन्त्रितस्य च ॥ ८,१.१९ ॥
युष्मदस्मदोः षष्ठीचतुर्थीद्वितीयास्थयोर्वान्नावौ ॥ ८,१.२० ॥
बहुवचनस्य वस्नसौ ॥ ८,१.२१ ॥
तेमयावेकवचनस्य ॥ ८,१.२२ ॥
त्वामौ द्वितीयायाः ॥ ८,१.२३ ॥
न चवाहाहैवयुक्ते ॥ ८,१.२४ ॥

पश्यार्थैश्चानालोचने ॥ ८,१.२५ ॥
सपूर्वायाः प्रथमाया विभाषा ॥ ८,१.२६ ॥
तिङो गोत्रादीनि कुत्सनाभीक्ष्ण्ययोः ॥ ८,१.२७ ॥
तिङ्ङतिङः ॥ ८,१.२८ ॥
न लुट् ॥ ८,१.२९ ॥
निपातैर्यद्यदिहन्तकुविन्नेच्चेच्चण्कच्चिद्यत्रयुतम् ॥ ८,१.३० ॥
नह प्रत्यारम्भे ॥ ८,१.३१ ॥
सत्यं प्रश्ने ॥ ८,१.३२ ॥
अङ्गाप्रातिलोम्ये ॥ ८,१.३३ ॥
हि च ॥ ८,१.३४ ॥
छन्दस्यनेकमपि साकाङ्क्षम् ॥ ८,१.३५ ॥
यावद्यथाभ्याम् ॥ ८,१.३६ ॥
पूजायां नानन्तरम् ॥ ८,१.३७ ॥
उपसर्गव्यपेतं च ॥ ८,१.३८ ॥
तुपश्यपश्यताहैः पूजायाम् ॥ ८,१.३९ ॥
अहो च ॥ ८,१.४० ॥
शेषे विभाषा ॥ ८,१.४१ ॥
पुरा च परीप्सायाम् ॥ ८,१.४२ ॥
नन्वित्यनुज्ञैषणायाम् ॥ ८,१.४३ ॥
किं क्रियाप्रश्नेऽनुपसर्गमप्रतिषिद्धम् ॥ ८,१.४४ ॥
लोपे विभाषा ॥ ८,१.४५ ॥
एहि मन्ये प्रहासे लृट् ॥ ८,१.४६ ॥
जात्वपूर्वम् ॥ ८,१.४७ ॥
किंवृत्तं च चिदुत्तरम् ॥ ८,१.४८ ॥
आहो उताहो चानन्तरम् ॥ ८,१.४९ ॥
शेषे विभाषा ॥ ८,१.५० ॥
गत्यर्थलोटा लृण्न चेत्कारकं सर्वान्यत् ॥ ८,१.५१ ॥
लोट्च ॥ ८,१.५२ ॥
विभाषितं सोपसर्गमनुत्तमम् ॥ ८,१.५३ ॥
हन्त च ॥ ८,१.५४ ॥
आम एकान्तरमामन्त्रितमनन्तिके ॥ ८,१.५५ ॥
यद्धितुपरं छन्दसि ॥ ८,१.५६ ॥
चनचिदिवगोत्रादितद्धिताम्रेडितेष्वगतेः ॥ ८,१.५७ ॥
चादिषु च ॥ ८,१.५८ ॥
चवायोगे प्रथमा ॥ ८,१.५९ ॥
हेति क्षियायाम् ॥ ८,१.६० ॥
अह+इति विनियोगे च ॥ ८,१.६१ ॥
चाहलोप एव+इत्यवधारणम् ॥ ८,१.६२ ॥
चदिलोपे विभाषा ॥ ८,१.६३ ॥
वैवाव+इति च च्छन्दसि ॥ ८,१.६४ ॥
एकान्याभ्यां समर्थाभ्याम् ॥ ८,१.६५ ॥
यद्वृत्तान्नित्यम् ॥ ८,१.६६ ॥
पूजनात्पूजितमनुदात्तं काष्ठादिभ्यः ॥ ८,१.६७ ॥
सगतिरपि तिङ् ॥ ८,१.६८ ॥
कुत्सने च सुप्यगोत्रादौ ॥ ८,१.६९ ॥
गतिर्गतौ ॥ ८,१.७० ॥
तिङि च+उदात्तवति ॥ ८,१.७१ ॥

आमन्त्रितं पूर्वमविद्यमानवत् ॥ ८,१.७२ ॥
न आमन्त्रिते समानाधिकरणे सामान्यवचनम् ॥ ८,१.७३ ॥
विभाषितं विशेषवचने बहुवचनम् ॥ ८,१.७४ ॥

पूर्वत्रासिद्धम् ॥ ८,२.१ ॥
नलोपः सुप्स्वरसञ्ज्ञातुग्विधिषु कृति ॥ ८,२.२ ॥
न मु ने ॥ ८,२.३ ॥
उदात्तस्वरितयोर्यणः स्वरितोऽनुदात्तस्य ॥ ८,२.४ ॥
एकादेश उदातेन+उदात्तः ॥ ८,२.५ ॥
स्वरितो वाऽनुदात्ते पदादौ ॥ ८,२.६ ॥
नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य ॥ ८,२.७ ॥
न ङिसम्बुद्ध्योः ॥ ८,२.८ ॥
मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः ॥ ८,२.९ ॥
झयः ॥ ८,२.१० ॥
सञ्ज्ञायाम् ॥ ८,२.११ ॥
आसन्दीवदष्ठीवच्चक्रीवत्कक्षीवद्रुमण्वच्चर्मण्वती ॥ ८,२.१२ ॥
उदन्वनुदधौ च ॥ ८,२.१३ ॥
राजन्वान् सौराज्ये ॥ ८,२.१४ ॥
छन्दसि इरः ॥ ८,२.१५ ॥
अनो नुट् ॥ ८,२.१६ ॥
नाद्धस्य ॥ ८,२.१७ ॥
कृपो रो लः ॥ ८,२.१८ ॥
उपसर्गयायतौ ॥ ८,२.१९ ॥
ग्रो यङि ॥ ८,२.२० ॥
अचि विभाषा ॥ ८,२.२१ ॥
परेश्च घाङ्कयोः ॥ ८,२.२२ ॥
संयोगान्तस्य लोपः ॥ ८,२.२३ ॥
रात्सस्य ॥ ८,२.२४ ॥
धि च ॥ ८,२.२५ ॥
झलो झलि ॥ ८,२.२६ ॥
ह्रस्वादङ्गात् ॥ ८,२.२७ ॥
इट ईटि ॥ ८,२.२८ ॥
स्कोः संयोगाद्योरन्ते च ॥ ८,२.२९ ॥
चोः कुः ॥ ८,२.३० ॥
हो ढः ॥ ८,२.३१ ॥
दादेर्धातोर्घः ॥ ८,२.३२ ॥
वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम् ॥ ८,२.३३ ॥
नहो धः ॥ ८,२.३४ ॥
आहस्थः ॥ ८,२.३५ ॥
व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः ॥ ८,२.३६ ॥
एकाचो बशो भष्झषन्तस्य स्ध्वोः ॥ ८,२.३७ ॥
दधस्तथोश्च ॥ ८,२.३८ ॥
झलां जशोऽन्ते ॥ ८,२.३९ ॥
झषस्तथोर्धोऽधः ॥ ८,२.४० ॥
षढोः कः सि ॥ ८,२.४१ ॥
रदाभ्यां निष्थातो नः पूर्वस्य च दः ॥ ८,२.४२ ॥
संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः ॥ ८,२.४३ ॥

त्वादिभ्यः ॥ ८,२.४४ ॥
ओदितश्च ॥ ८,२.४५ ॥
क्षियो दीर्घात् ॥ ८,२.४६ ॥
श्योऽस्पर्शे ॥ ८,२.४७ ॥
अञ्चोऽनपादाने ॥ ८,२.४८ ॥
दिवोऽविजिगीषायाम् ॥ ८,२.४९ ॥
निर्वाणोऽवाते ॥ ८,२.५० ॥
शुषः कः ॥ ८,२.५१ ॥
पचो वः ॥ ८,२.५२ ॥
क्षायो मः ॥ ८,२.५३ ॥
प्रस्त्योऽन्यतरस्याम् ॥ ८,२.५४ ॥
अनुपसर्गात्फुल्लक्षीबकृशोल्लाघाः ॥ ८,२.५५ ॥
नुदविदोन्दत्राघ्राह्रीभ्योऽन्यतरस्याम् ॥ ८,२.५६ ॥
न ध्याख्यापॄमूर्च्छिमदाम् ॥ ८,२.५७ ॥
वित्तो भोगप्रत्यययोः ॥ ८,२.५८ ॥
भित्तं शकलम् ॥ ८,२.५९ ॥
ऋणमाधमर्ण्ये ॥ ८,२.६० ॥
नसत्तनिषत्तानुत्तप्रतूर्तसूर्तगूर्तानि छन्दसि ॥ ८,२.६१ ॥
क्विन्प्रत्ययस्य कुः ॥ ८,२.६२ ॥
नशेर्वा ॥ ८,२.६३ ॥
मो नो धातोः ॥ ८,२.६४ ॥
म्वोश्च ॥ ८,२.६५ ॥
ससजुषो रुः ॥ ८,२.६६ ॥
अवयाः श्वेतवाः पुरोडाश्च ॥ ८,२.६७ ॥
अहन् ॥ ८,२.६८ ॥
रोऽसुपि ॥ ८,२.६९ ॥
अम्नरूधरवरित्युभयथा छन्दसि ॥ ८,२.७० ॥
भुवश्च महाव्याहृतेः ॥ ८,२.७१ ॥
वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः ॥ ८,२.७२ ॥
तिप्यनस्तेः ॥ ८,२.७३ ॥
सिपि धातो रुर्वा ॥ ८,२.७४ ॥
दश्च ॥ ८,२.७५ ॥
वीरुपधाया दीर्घ इकः ॥ ८,२.७६ ॥
हलि च ॥ ८,२.७७ ॥
उपधायां च ॥ ८,२.७८ ॥
न भकुर्छुराम् ॥ ८,२.७९ ॥
अदसोऽसेर्दादु दो मः ॥ ८,२.८० ॥
एत ईद्बहुवचने ॥ ८,२.८१ ॥
वाक्यस्य टेः प्लुत उदात्तः ॥ ८,२.८२ ॥
वक्ष्यति प्रत्यभिवादेऽशूद्रे ॥ ८,२.८३ ॥
दूराद्धूते च ॥ ८,२.८४ ॥
हैहेप्रयोगे हैहयोः ॥ ८,२.८५ ॥
गुरोरनृतोऽनन्त्यस्याप्येकैकस्य प्राचाम् ॥ ८,२.८६ ॥
ओमभ्यादाने ॥ ८,२.८७ ॥
ये यज्ञकर्मणि ॥ ८,२.८८ ॥
प्रणवष्टेः ॥ ८,२.८९ ॥
याज्यान्तः ॥ ८,२.९० ॥

ब्रूहिप्रेष्यश्रौषड्वौषडावहानामादेः ॥ ८,२.९१ ॥
अग्नीत्प्रेषणे परस्य च ॥ ८,२.९२ ॥
विभाषा पृष्टप्रतिवचने हेः ॥ ८,२.९३ ॥
निगृह्यानुयोगे च ॥ ८,२.९४ ॥
आम्रेडितं भर्त्सने ॥ ८,२.९५ ॥
अङ्गयुक्तं तिङाकाङ्क्षम् ॥ ८,२.९६ ॥
विचार्यमाणानाम् ॥ ८,२.९७ ॥
पूर्वं तु भाषायाम् ॥ ८,२.९८ ॥
प्रतिश्रवणे च ॥ ८,२.९९ ॥
अनुदात्तं प्रश्नान्ताभिपूजितयोः ॥ ८,२.१०० ॥
चिदिति च+उपमार्थे प्रयुज्यमाने ॥ ८,२.१०१ ॥
उपरिस्विदासीदिति च ॥ ८,२.१०२ ॥
स्वरितमाम्रेडितेऽसूयासम्मतिकोपकुत्सनेषु ॥ ८,२.१०३ ॥
क्षियाशीःप्रैषेषु तिङाकाङ्क्षम् ॥ ८,२.१०४ ॥
अनन्त्यस्यापि प्रश्नाख्यानयोः ॥ ८,२.१०५ ॥
प्लुतावैच इदुतौ ॥ ८,२.१०६ ॥
एचोऽप्रगृह्यस्यादूराध्दूते पूर्वस्यार्धस्यादुत्तरस्य+इदुतौ ॥ ८,२.१०७ ॥
तयोर्य्वावचि संहितायाम् ॥ ८,२.१०८ ॥

मतुवसो रु सम्बुद्धौ छन्दसि ॥ ८,३.१ ॥
अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा ॥ ८,३.२ ॥
अतोऽटि नित्यम् ॥ ८,३.३ ॥
अनुनासिकात्परोऽनुस्वारः ॥ ८,३.४ ॥
वक्ष्यति समः सुति ॥ ८,३.५ ॥
पुमः खय्यम्परे ॥ ८,३.६ ॥
नश्छव्यप्रशान् ॥ ८,३.७ ॥
उभयथ र्क्षु ॥ ८,३.८ ॥
दीर्घादटि समानपादे ॥ ८,३.९ ॥
नॄन् पे ॥ ८,३.१० ॥
स्वतवान् पायौ ॥ ८,३.११ ॥
कानाम्रेडिते ॥ ८,३.१२ ॥
ढो ढे लोपः ॥ ८,३.१३ ॥
रो रि ॥ ८,३.१४ ॥
खरवसानयोर्विसर्जनीयः ॥ ८,३.१५ ॥
रोः सुपि ॥ ८,३.१६ ॥
भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि ॥ ८,३.१७ ॥
व्योर्लघुप्रयत्नतरः शाकटायनस्य ॥ ८,३.१८ ॥
लोपः शाकल्यस्य ॥ ८,३.१९ ॥
ओतो गार्ग्यस्य ॥ ८,३.२० ॥
उञि च पदे ॥ ८,३.२१ ॥
हलि सर्वेषां ॥ ८,३.२२ ॥
मोऽनुस्वारः ॥ ८,३.२३ ॥
नश्चापदान्तस्य झलि ॥ ८,३.२४ ॥
मो राजि समः क्वौ ॥ ८,३.२५ ॥
हे मपरे वा ॥ ८,३.२६ ॥
नपरे नः ॥ ८,३.२७ ॥
ङ्णोः कुक्टुक्शरि ॥ ८,३.२८ ॥

ङः सि धुट् ॥ ८,३.२९ ॥
नश्च ॥ ८,३.३० ॥
शि तुक् ॥ ८,३.३१ ॥
ङमो ह्रस्वादचि ङमुण्नित्यम् ॥ ८,३.३२ ॥
मय उञो वो वा ॥ ८,३.३३ ॥
विसर्जनीयस्य सः ॥ ८,३.३४ ॥
शर्परे विसर्जनीयः ॥ ८,३.३५ ॥
वा शरि ॥ ८,३.३६ ॥
कुप्वोः ꣹क꣺पौ च (रेअद्ः [जिह्वामूलीय]क[उपध्मानीय]पौ) ॥ ८,३.३७ ॥
सोऽपदादौ ॥ ८,३.३८ ॥
इणः षः ॥ ८,३.३९ ॥
नमस्पुरसोर्गत्योः ॥ ८,३.४० ॥
इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य ॥ ८,३.४१ ॥
तिरसोऽन्यतरस्याम् ॥ ८,३.४२ ॥
द्विस्त्रिश्चतुरिति कृत्वोऽर्थे ॥ ८,३.४३ ॥
इसुसोः सामर्थ्ये ॥ ८,३.४४ ॥
नित्यं समासेऽनुत्तरपदस्थस्य ॥ ८,३.४५ ॥
अतः कृकमिकंसकुम्भपात्रकुशाकर्णीष्वनव्ययस्य ॥ ८,३.४६ ॥
अधःशिरसी पदे ॥ ८,३.४७ ॥
कस्कादिषु च ॥ ८,३.४८ ॥
छन्दसि वाऽप्राम्रेडितयोः ॥ ८,३.४९ ॥
कःकरत्करतिकृधिकृतेष्वनदितेः ॥ ८,३.५० ॥
पञ्चम्याः परावध्यर्थे ॥ ८,३.५१ ॥
पातौ च बहुलम् ॥ ८,३.५२ ॥
षष्ठ्याः पतिपुत्रपृष्ठपारपदपयस्पोषेषु ॥ ८,३.५३ ॥
इडाया वा ॥ ८,३.५४ ॥
अपदान्तस्य मूर्धन्यः ॥ ८,३.५५ ॥
सहेः साडः सः ॥ ८,३.५६ ॥
इण्कोः ॥ ८,३.५७ ॥
नुम्विसर्जनीयशर्व्यवायेऽपि ॥ ८,३.५८ ॥
आदेशप्रत्यययोः ॥ ८,३.५९ ॥
शासिवसिघसीनां च ॥ ८,३.६० ॥
स्तौतिण्योरेव षण्यभ्यासात् ॥ ८,३.६१ ॥
सः स्विदिस्वदिसहीनां च ॥ ८,३.६२ ॥
प्राक्सितादड्व्यवायेऽपि ॥ ८,३.६३ ॥
स्थादिष्वभ्यासेन चाभ्यासस्य ॥ ८,३.६४ ॥
उपसर्गात्सुनोतिसुवतिस्यतिस्तौतिस्तोभतिस्थासेनयसेधसिचसञ्जस्वञ्जाम् ॥ ८,३.६५ ॥
सदिरप्रतेः ॥ ८,३.६६ ॥
स्तन्भेः ॥ ८,३.६७ ॥
अवाच्च आलंवनाविदूर्ययोः ॥ ८,३.६८ ॥
वेश्च स्वनो भोजने ॥ ८,३.६९ ॥
परिनिविभ्यः सेवसितसयसिवुसहसुट्स्तुस्वञ्जाम् ॥ ८,३.७० ॥
सिवादीनां वा अड्व्यवायेऽपि ॥ ८,३.७१ ॥
अनुविपर्यभिनिभ्यः स्यन्दतेरप्राणिषु ॥ ८,३.७२ ॥
वेः स्कन्देरनिष्ठायाम् ॥ ८,३.७३ ॥
परेश्च ॥ ८,३.७४ ॥
परिस्कन्दः प्राच्यभरतेषु ॥ ८,३.७५ ॥

स्फुरतिस्फुलत्योर्निर्निर्विभ्यः ॥ ८,३.७६ ॥
वेः स्कभ्नातेर्नित्यम् ॥ ८,३.७७ ॥
इणः षीध्वंलुङ्लिटां धोऽङ्गात् ॥ ८,३.७८ ॥
विभाषा+इटः ॥ ८,३.७९ ॥
समासेऽङ्गुलेः सङ्गः ॥ ८,३.८० ॥
भीरोः स्थानम् ॥ ८,३.८१ ॥
अग्नेः स्तुत्स्तोमसोमाः ॥ ८,३.८२ ॥
ज्योतिरायुषः स्तोमः ॥ ८,३.८३ ॥
मातृपितृभ्यां स्वसा ॥ ८,३.८४ ॥
मातुःपितुर्भ्यामन्यतरस्याम् ॥ ८,३.८५ ॥
अभिनिसः स्तनः शब्दसञ्ज्ञायाम् ॥ ८,३.८६ ॥
उपसर्गप्रादुर्भ्यामस्तिर्यच्परः ॥ ८,३.८७ ॥
सुविनिर्दुर्भ्यः सुपिसूतिसमाः ॥ ८,३.८८ ॥
निनदीभ्यां स्नातेः कौशले ॥ ८,३.८९ ॥
सूत्रं प्रतिष्णातम् ॥ ८,३.९० ॥
कपिष्ठलो गोत्रे ॥ ८,३.९१ ॥
प्रष्ठोऽग्रगामिनि ॥ ८,३.९२ ॥
वृक्षासनयोर्विष्टरः ॥ ८,३.९३ ॥
छन्दोनाम्नि च ॥ ८,३.९४ ॥
गवियुधिभ्यां स्थिरः ॥ ८,३.९५ ॥
विकुशमिपरिभ्यः स्थलम् ॥ ८,३.९६ ॥
अम्बाम्बगोभूमिसव्यापद्वित्रिकुशेकुशङ्क्वङ्गुमञ्जिपुञ्जिपरमेबर्हिर्दिव्यग्निभ्यः स्थः ॥ ८,३.९७ ॥
सुषामादिषु च ॥ ८,३.९८ ॥
ह्रस्वात्तादौ तद्धिते ॥ ८,३.९९ ॥
निसस्तपतावनसेवने ॥ ८,३.१०० ॥
युष्मत्तत्ततक्षुःष्वन्तःपादम् ॥ ८,३.१०१ ॥
युजुष्येकेषाम् ॥ ८,३.१०२ ॥
स्तुतस्तोमयोश्छन्दसि ॥ ८,३.१०३ ॥
पूर्वपदात् ॥ ८,३.१०४ ॥
सुञः ॥ ८,३.१०५ ॥
सनोतेरनः ॥ ८,३.१०६ ॥
सहेः पृतनर्ताभ्यां च ॥ ८,३.१०७ ॥
न रपरसृपिसृजिस्पृशिस्पृहिसवनादीनाम् ॥ ८,३.१०८ ॥
सात्पदाद्योः ॥ ८,३.१०९ ॥
सिचो यङि ॥ ८,३.११० ॥
सेधतेर्गतौ ॥ ८,३.१११ ॥
प्रतिस्तब्धनिस्तब्धौ च ॥ ८,३.११२ ॥
सोढः ॥ ८,३.११३ ॥
स्तम्भुसिवुसहां चङि ॥ ८,३.११४ ॥
सनोतेः स्यसनोः ॥ ८,३.११५ ॥
सदिष्वञ्जोः परस्य लिटि ॥ ८,३.११६ ॥
निव्यभिभ्योऽड्व्यवाये वा छन्दसि ॥ ८,३.११७ ॥

रषाभ्यां नो णः समानपदे ॥ ८,४.१ ॥
अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि ॥ ८,४.२ ॥
पूर्वपदात्सञ्ज्ञायामगः ॥ ८,४.३ ॥

वनं पुरगामिश्रकासिध्रकाशारिकाकोटराग्रेभ्यः ॥ ८,४.४ ॥
प्रनिरन्तःशरेक्षुप्लक्षाम्रकार्ष्यखदिरपीयूक्षाभ्योऽसञ्ज्ञायामपि ॥ ८,४.५ ॥
विभाषौषधिवनस्पतिभ्यः ॥ ८,४.६ ॥
अह्नोऽदन्तात् ॥ ८,४.७ ॥
वाहनमाहितात् ॥ ८,४.८ ॥
पानं देशे ॥ ८,४.९ ॥
वा भावकरणयोः ॥ ८,४.१० ॥
प्रातिपदिकान्तनुम्विभक्तिषु च ॥ ८,४.११ ॥
एकाजुत्तरपदे णः ॥ ८,४.१२ ॥
कुमति च ॥ ८,४.१३ ॥
उपसर्गादसमासेऽपि णोपदेशस्य ॥ ८,४.१४ ॥
हिनुमीना ॥ ८,४.१५ ॥
आनि लोट् ॥ ८,४.१६ ॥
नेर्गदनदपतपदघुमास्यतिहन्तियातिवातिद्रातिप्सातिवपतिवहतिशाम्यतिचिनोतिदेग्धिषु च ॥ ८,४.१७ ॥
शेषे विभाषाऽकखादावषान्त उपदेशे ॥ ८,४.१८ ॥
अनितेः ॥ ८,४.१९ ॥
अन्तः ॥ ८,४.२० ॥
उभौ साभ्यासस्य ॥ ८,४.२१ ॥
हन्तेरत्पूर्वस्य ॥ ८,४.२२ ॥
वमोर्वा ॥ ८,४.२३ ॥
अन्तरदेशे ॥ ८,४.२४ ॥
अयनं च ॥ ८,४.२५ ॥
छन्दस्यृदवग्रहात् ॥ ८,४.२६ ॥
नश्च धातुस्थोरुषुभ्यः ॥ ८,४.२७ ॥
उपसर्गाद्बहुलम् ॥ ८,४.२८ ॥
कृत्यचः ॥ ८,४.२९ ॥
णेर्विभाषा ॥ ८,४.३० ॥
हलश्चेजुपधात् ॥ ८,४.३१ ॥
इजादेः सनुमः ॥ ८,४.३२ ॥
वा निंसनिक्षनिन्दाम् ॥ ८,४.३३ ॥
न भाभूपूकमिगमिप्यायीवेपाम् ॥ ८,४.३४ ॥
षात्पदान्तात् ॥ ८,४.३५ ॥
नशेः षान्तस्य ॥ ८,४.३६ ॥
पदान्तस्य ॥ ८,४.३७ ॥
पदव्यवायेऽपि ॥ ८,४.३८ ॥
क्षुभ्नादिषु च ॥ ८,४.३९ ॥
स्तोः श्चुना श्चुः ॥ ८,४.४० ॥
ष्टुना ष्टुः ॥ ८,४.४१ ॥
न पदान्ताट्टोरनाम् ॥ ८,४.४२ ॥
तोः षि ॥ ८,४.४३ ॥
शात् ॥ ८,४.४४ ॥
यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा ॥ ८,४.४५ ॥
अचो रहाभ्यां द्वे ॥ ८,४.४६ ॥
अनचि च ॥ ८,४.४७ ॥
न आदिन्याक्रोशे पुत्रस्य ॥ ८,४.४८ ॥
शरोऽचि ॥ ८,४.४९ ॥

त्रिप्रभृतिषु शाकटायनस्य ॥ ८,४.५० ॥
सर्वत्र शाकल्यस्य ॥ ८,४.५१ ॥
दीर्घादाचार्याणाम् ॥ ८,४.५२ ॥
झलां जश्झशि ॥ ८,४.५३ ॥
अभ्यासे चर्च ॥ ८,४.५४ ॥
खरि च ॥ ८,४.५५ ॥
वा+अवसाने ॥ ८,४.५६ ॥
अणोऽप्रगृह्यस्यानुनासिकः ॥ ८,४.५७ ॥
अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः ॥ ८,४.५८ ॥
वा पदान्तस्य ॥ ८,४.५९ ॥
तोर्लि ॥ ८,४.६० ॥
उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य ॥ ८,४.६१ ॥
झयो होऽन्यतरस्याम् ॥ ८,४.६२ ॥
शश्छोऽटि ॥ ८,४.६३ ॥
हलो यमां यमि लोपः ॥ ८,४.६४ ॥
झरो झरि सवर्णे ॥ ८,४.६५ ॥
उदत्तादनुदात्तस्य स्वरितः ॥ ८,४.६६ ॥
न+उदात्तस्वरितोदयमगार्ग्यकाश्यपगालवानाम् ॥ ८,४.६७ ॥
आ इति ॥ ८,४.६८ ॥